बरिस-4 अंक-15

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जनवरी-मार्च 2022

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

अंक-15 जनवरी-मार्च 2022

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक	:	तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	:	संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	:	राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
		5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प। बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

अनुक्रम

1. संपादकीय
- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 6
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 7

2. कनखी
- मसाजवादी लइका - डॉ अनिल चौबे /9

3. कथा-कहनी /दँतकिस्सा
- मध्यवर्गीय औरत - कुमार मंगलम रणवीर / 19
- भुलेटना - मनोज कुमार वर्मा / 22
- पछताव - प्रीतम पाण्डेय सांकृत / 30
- अटूट बंधन - अभियंता सौरभ भोजपुरिया / 62

4. कविता
- बिखरल इयाद - अशोक मिश्र / 26
- अभिशाप - कनक किशोर / 29
- छूतिहर के लच्छन - अखिलेश्वर मिश्र / 34
- बैदेही - गुड़िया शुक्ला / 44
- हरपल खुश रहल करीं - गीता चौबे "गूँज" / 44
- दीपशलभ - मार्कण्डेय शारदेय / 45
- गइल कबाड़े आज रेडियो - माया शर्मा / 56
- दिहले हाथ उनका हाथ में - नेहा त्रिपाठी / 61
- हर समय सुख में सुतार ना मिलेला-नुरैन अंसारी / 61
- बचल रहीहे रे भाई - उमेश कुमार राय / 65
- नशा छोड़ी द$ बलमुआ - डॉ प्रतिभा कुमारी / 65
- हमरा याद बा - अभियंता सौरभ भोजपुरिया / 66
- गाँव हमार - कृष्णा श्रीवास्तव / 66

5. गीत/ गजल
- डॉ जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 10
- जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया - संगीत सुभाष / 25
- सूना मन की अँगनाई में - संगीत सुभाष / 25
- तहरे नाम - संजय मिश्र "संजय"/ 27
- साँझ भइल घर जाई - संजय मिश्र "संजय"/ 27
- चले लागल कइसन - सुरेश गुप्त / 28
- बन्द करीं - सुरेश गुप्त / 28
- उलट जाई असलेटर - विमल कुमार / 33
- बसंती दोहा - गणेश नाथ तिवारी "विनायक"/ 35
- अटरिया मोर कहवाँ बनी -गणेश नाथ तिवारी "विनायक"/ 35
- देशभक्ति गीत - अमरेंद्र कुमार सिह / 43
- केकर बाँहि धरीं - मदनमोहन पाण्डेय / 43
- लोर लाजे टघर - विद्या शंकर विद्यार्थी / 48
- जिदगी भाग से किनल जाले-विद्या शंकर विद्यार्थी / 48
- नया साल में - दीपक तिवारी / 59
- मौसम जाने का बा बहरी - दीपक सिह / 59
- का कहानी लिखीं - शैलेन्द्र कुमार साधु / 60
- विचार आवेला - धीप्रज्ञ द्विवेदी / 60

6. पुरुखन के कोठार से
- राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता /11-12
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 13

7. नाटक / एकांकी
- परवरिस - विद्या शंकर विद्यार्थी / 37

8. आलेख/निबंध
- भाषा-पहचान के मूल भाषिक तत्व-डॉ जयकान्त सिह/ 14
- आज के समय में महिला के स्थिति - विजया एस कुमार/ 20
- भोजपुरी बोली - बाबूराम सिह कवि / 36
- भुलात कहाउति/मुहाबरा - माया शर्मा / 49
- अनिरुद्ध जी के कवितन में बिम्ब-बिधान -निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 50

9. शब्द कौतुक
- घर के आस पास- दिनेश पाण्डेय / 16

10. श्रद्धांजलि - डॉ सुभद्रा विरेंद्र / 5

11. हँसी-ठिठोली - निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 57

12. सतमेझरा - 1-4, 58,67-69

भोजपुरी भाषा के आत्मा गीत-गवनई में बसेला । ओ आत्मा के मुआवे-मेंटावे के बेवस्था भोजपुरी के तथाकथित स्वनामधन्य स्टार गायकलोग आ म्यूजिक कम्पनिन के साँठगाँठ से लगातार जारी बा । एम्मे दोसिहा खाली उहे लोग रहित त एकहक गवइया के चालीस- पचास लाख भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) ना रहितें। ए कुसंस्कारिन के एतना भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) बिदेसी भा गैर भोजपुरीभाषी लोग त नाहिंए ह। ई सबलोग भोजपुरिया ह आ जाने- अनजाने ए लोग के लाखन- करोड़न रुपया हर महीना दे रहल बा । कचरा गीत-संगीत पर मिलल राउर रुपया ए लोग के मरजादाहीन बना दिहले बा। राउरे रुपया "फुहरपन बन्द करावेवाली" रउरी आवाज के दबा देबे में भरपूर सहजोग करता ।

रउआँ सही में भोजपुरी गीतन से फुहरपन मेंटावे चाहतानीं त "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" के निहोरा मानीं आ कहीं रउरा केहू का पेज भा यूट्यूब चैनल पर फूहर गीत मिलता त चार गो काम करीं:-

१) चैनल भा पेज पर फूहर गीतन के डिस्लाइक(नापसंद) करीं।

२) रिपोर्ट करीं।

३) पेज आ यूट्यूब चैनल के अनफालो करीं।

४) पेज आ चैनल के ब्लाक करीं।

भोजपुरी गीत-गवनई के मान सम्मान बचावे आ पुराना गौरव वापिस ले आवे खातिर ऊपर लिखल काम जरूरी हो गइल बा।

भोजपुरी हमार ह, राउर ह आ सबसे बढ़ि के हमरी आ रउरी पुरुखन के थाती ह। एक्के हमनीं धनलोलुप लोगन का भरोसे ना छोड़ल जाई। बिना कवनो भेदभाव के आजुए से ई काम सुरू क दिहल जाउ आ हर भोजपुरिया अपना दस गो इयार दोस्त से ऊपर लिखल काम जरूर करावे। कुछुए दिन में परिणाम सामने आई।

निवेदक-

प्रधान सम्पादक,

सिरिजन

(जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया)

डॉ. सुभद्रा वीरेन्द्र जी

भोजपुरी साहित्याकाश के देदिप्यमान तारा, भोजपुरिया संस्कृति के संरक्षण आ संवर्धन खातिर अपनी लेखनी से जोरदार अलख जगावेवाली आदरनीया डॉ .सुभद्रा वीरेन्द्र जी के निधन से सगरे भोजपुरिया जगत मर्माहत बा। "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" आ "सिरिजन" परिवार का ओर से हुतात्मा के लोर भरल श्रद्धांजलि।

डॉ. सुभद्रा वीरेन्द्र जी के दूगो रचना

लछुमन रेखा के भितरिये कैद

लछुमन रेखा के भितरिये कैद हमार जिनिगिया ना।
छलना आई भेस बदलि, छलि-छलि जाई उमिरिया ना॥

हम ना केकरो आँख क पुतरी
राखीं बक्सा ना हम मुनरी
दरखत खानी टुक्-टुक् ताकीं भोर-साँझ-दुपहिया ना।

सहमि-सहमि क चले सपनवाँ
बिखरल मोती बीनि नयनवाँ
काँटन से अझुराइल खींचे मोर चुनरिया ना।
मन-दरपन कब दरकि क टूटल
आस क गगरी चटकी क फूटल
गहराइल अन्हियारी राति अकुलाइल अँजोरिया ना।

राख में ह सुनगत चिनगारी
उमकि गइल रहिये किलकारी
जमघट बीच अकेला मनवाँ अउँजाइल दरदिया ना॥

- सुभद्रा वीरेंद्र

लुकाइल कहाँ अँजोर

लुकाइल कहाँ अँजोर
जिनगी खोजे आपन भोर
भुक्-भुक् दियना टूटल मड़ई
कबले जीही अइसे मनई
रहि-रहि के डेरवावे राति
झर-झर झरेला लोर। लुकाइल....

आसपास न कुछुओ लउके
घर-आँगन में चुहिया छउके
मनवाँ हरमेसे जे बउखे
सूखि गइल बा सोर। लुकाइल.....

सून अकसिया टुक्-टुक् ताके
ललकी किरिन न काहे झाँके
जिनगी हमार सवाल भइल
अझुरल कहवाँ डोर। लुकाइल.....

दिन-दुनियाँ के खबर भुलाइल
धीर मन के कुल्ही हेराइल
तिल-तिल जीयल लागे मूअल
खूखल नदिया कोर। लुकाइल.....

- सुभद्रा वीरेंद्र

भाषा के संकट.....

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी बहुत बड़हन भूभाग में बोलल जाएवाली एगो भाषा ह। भले बोलचाल में तनिका विविधता बा। अब जरूरत बा भोजपुरी के समवेत स्वरूप के जवन अइसन होखे कि जे से सरकारी-कामकाज, संचार-माध्यम आदि में काम हो सके। दुनियाँ के कवनो भाषा जइसे बोलल जाला ठीक ओसहीं लिखलो जाव ई कवनो जरूरी नइखे। भोजपुरी अब खाली गीत-गवनई के भाषा नइखे रहि गइल, अब धीरे-धीरे नाटक, कविता, कहानी, ग़ज़ल, उपन्यास, व्यंग्य आदि भी पुरहर लिखाइल बा, एकर साहित्य भी समृद्ध हो रहल बा। अब त भोजपुरी भाषा, बिचार अउरी आंदोलन के भाषा बने खातिर तइयार हो गइल बिया। जल्दिए शासन-प्रशासन आ ज्ञान-विज्ञान के भी भाषा बनी। हमरा समझ से जवना चीज खातिर भोजपुरी में पहिले से ही शब्द बा ओ के जस के तस अपना लिहल जाव, बाकी हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा के शब्दन के भोजपुरीकरन कइला के चक्कर में असली शब्दन के वर्तनी बिगाड़ल हमरा समझ से उचित नइखे। ढेर जरूरत बुझात होखे त ओकरा के ओसहीं अपना लिहल जाव, ए से आपन भोजपुरी भाषा धनिक होखे लागी। जदि भोजपुरी के अभिव्यक्ति के साधन बनावे के बा त रचनाकार लोग के स्थानीय प्रयोग से ऊपर उठे के परी। खुशी बा कि अब भोजपुरी में खूब रचल जात बा, बस आंतरिक कलेवर के वैश्विक स्वरूप दिहला के काम बा। भाषा समाज में आ समाज के चलते ही विकसित होला त बदलल समाज के हिसाब से ही भोजपुरी के भी अपने आप में बदलाव ले आवेवे के कोशिश करे के परी। केहू ना चाहे तबो एगो भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित जरूर होले, कवनो भाषा अपनी लोक-संस्कृति अउरी सामाजिक विकास के धारा से जुड़ल रहेले। संस्कृति के विकास के संगे ही भाषा के भी विकास होला।

संविधान में चाहे केतनो भाषा के संरक्षण प्रदान हो जाव बाकी जब ले परोक्ष रूप से अंग्रेजी के बढ़ावा दियात रही तबले कवनो भाषा के भलाई ना हो सकेला। भोजपुरी भाषा खातिर राजनीति से ऊपर उठि के इमानदारी से कवनो नींक नीति बना के ओ के क्रियान्वित कइल जाव तबे भोजपुरी भाषा के अस्तित्व बाचीं ना त अंतरराष्ट्रीय कंपनियन के दबाव से लोकगीत, लोक-संस्कृति, लोक कथा, लोकोक्ति, सब दफना दिहल जाई आ खाली विज्ञापन लउकी।

एह बेरा दुनियाँ में कइ गो भाषा संकट के दौर से गुजर रहल बाड़ी सन। कहीं भाषा के संकट बा त कहीं संकट में भाषा बाड़ी सन। कइगो छोट-मोट भाषा त मरि गइली। ए समय हमनीं के नैतिक कर्तव्य बा कि अपनी भाषा के जोगावल जा आ लोग के भी जगावल जा। जवनी भाषा में आज ले पुरखा पुरनियाँ के आस्था विश्वास समाइल बा ओ भाषा के दुआरी पर आशा विश्वास के सँझवत बराइल रहो।

अंत में सिरिजन के सभे रचनाकार बन्धु के आभार जे लगातार आपन गीत, कविता, लेख, निबंध भेज के भोजपुरी भाषा के अलख जगावे में आपन अनमोल भूमिका निभावत बा। रउआ खुद पढ़ीं आ दोसरो के पढ़े के प्रोत्साहित करीं।

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

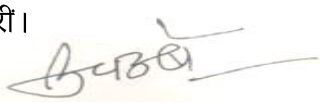

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

आपन बात

तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

समय कतिना निष्ठुर होला? बिल्कुल एगो निरंकुश तानाशाह नीयन.... निर्मोही समय अपना अँकवारी में धइ के अइसन दबवले बा कि आदमी के का औकात कि ओकर अनदेखी क के निकल जाव? गुलाम बनि के रह जाये के परता। समय के पथर दिल करिन्दा हमनी के कतरा-कतरा जिनिगी पर बलजोरी आपन अधिकार जमा लेले बाण स। जब वर्तमान उलझल होखे आ रकत के आँसू रोवावत होखे त बीतल जिनिगी के सुखद इयाद ऊर्जा अउरी सार्थकता देबे करेला। इयाद के काँट के चुभन हमनिके जिनिगी से जोरले रहेला। देखीं ना समय फेरु से अपना के दोहरावे वाला बा, महामारी फेरु से आपन नावा रूप में दबे पाँव गते-गते आगे बढ़ रहल बिया, दंश फेरु से ना झेले के परे एकरा खातिर प्रशासन एहतियात बरते के फ़रमान जारी कइले बा । कोरोना से पीड़ित रोगी के संख्या त दिन प दिन कम होखत जा रहल बा लेकिन महामारी के नावा रूप ओमिक्रान अब डेरवावे शुरू क देले बा आ एकरा से पीड़ित रोगी भी बढ़ रहल बाण। चिन्ता-फिकिर के चाक पर नाचत जीवन न जाने कवन रूप गढ़ी, आशा निराशा के बीच में झूल रहल बा जिनिगी।

सरकार के तरफ से हाल ही में लागू भइल खेती कानून के वापिस लेवे के घोषणा से एकरा खिलाफ 380 दिन से भी अधिका दिन से राजधानी दिल्ली के बॉर्डर पर धरना देत किसान के घर वापसी रफ्तार पकड़ लेले बिया | बरिस भर से बन्द भइल सड़क साफ सुथरा दुरुस्त क के या त खुल गइल बाड़ी स ना त खोले के बेवस्था हो रहल बा। धरना स्थल के करीब रहे वाला जनता भी अब राहत के साँस ले रहल बिया, जिनिगी तेजी से सामान्य हो रहल बा।

सुखद घड़ी में इजाफा करत एगो अउरी घटना घटल बा बीतल दिसम्बर में, बिदेसी आक्रांता द्वारा छिन्न भिन्न कइल काशी के, बाबा विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार करीब ढाई सौ साल पहिले महारानी अहिल्या बाई द्वारा भइल रहे, ओकरा बाद अब जाके, बाबा विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार भब्य बिश्वनाथ धाम के रूप में सोझा आइल बा। गंगा से शिवजी के एकाकार करावे वाला बिश्वनाथ कॉरीडोर 21 महीना के अल्प समय मे ना सिर्फ बनके तइयार भइल बा बल्कि आम भक्तन के समर्पित भी हो गइल बा। टूटत परम्परा, खण्डित होत बिश्वास, क्षीण होत आस्था, मन से बिसरत सनातन सँस्कार के पुनर्जीवित करे के कोशिश बा ई, चमकत काशी दमकत मुस्कियात काशी के देखे खातिर देश भर से श्रद्धालु के आगमन हो रहल बा।

केंद्रीय मंत्रिमंडल से लइकिन के बियाह के कानूनी उमिर 18 से बढ़ा के 21 बरिस करे के मंजूरी मिल गइला से देश के आम जनता मे एकरा पर बहस छिड़ गइल बा। खाली कानून बना दिहला से बियाह के उमिर नाहीं बढ़ी। अगर लइकिन के भय मुक्त सुरक्षा के वातावरण दिहल जाव, पढ़े लिखे के उचित मोका दियाव, नौकरी पेशा ब्यापार करे के छूट मिलो, कहे के मतलब कि कानून बनावे से अधिका जरूरी बा समाज मे सही माहौल बनावल, अगर ई हो जाइ त कानून के जरूरते ना पड़ी, बियाह के उमिर अपने आप बढ़ि जाई।

समय के नापे के पैमाना के रूप में अंग्रेजी साल के महत्ता के, के अस्वीकार करी ? सरकारी कामकाज दस्तावेज अउरी आम नागरिक द्वारा दैनिक जीवन मे हर जगह धड़ल्ले से एकर इस्तेमाल हो रहल बा, ई परिपाटी दिन प दिन बढ़ते जा रहल बा। बहु बोली भाषा धरम संस्कार सँस्कृति रीति रिवाज भगौलिक दशा से रचल बसल आपन देश मे भी नावा साल के शुरुआत के दिन अलगा-अलगा बा लेकिन 1 जनवरी से शुरू होखे वाला अंग्रेजी साल के पहिलका दिन के त्योहार नीयन आपन देश सहित पूरी दुनिया में मनावल जाला। कवनो एक दिन के परब के रूप में बिश्व में सब जगह अउरी सबसे अधिका आबादी द्वारा मनावे के जब बात होला त 1 जनवरी सबसे ऊपर होले। नावा उम्मीद नावा जोश अउरी खुशी मनाके नावा साल के शुरुआत कइल जाला।

हिंदू त्योहारन में से एगो तेव्हार, जवन हर साल एकही तारीख के परेला काहेकि ऊ सौर चक्र पर निर्भर रहेला। भोजपुरिया बघार में ओके मकर संक्रान्ति भा खिचड़ी कहल जाला। मकर संक्रांति पर लाई, चिउरा, तिलकुट, तिल के लड्डु, गुर आदि खाये के रिवाज त बटले बा, साँझीखा खिचड़ी खाए के चलन

पुरखन के समय से चलल आ रहल बा। लोकसमाज में एगो अउरी कारण से एह तेव्हार के इंतजार रहेला, खिचड़ी के एक महीना से चलल आ रहल खरमास, एहि दिन खतम हो जाला, चूँकि खरमास में मांगलिक काम के मनाही होला, खरमास समाप्त होते मांगलिक काम जइसे शादी-बियाह, जनेऊ, गृहप्रवेश आदि काम शुरू हो जाला। एह दिन तिल के दान के बिशेष महत्ता होला। बिबिधता से भरल एह देश के हर भाग में एह परब के अलगा-अलगा नाँव अउरी तरीका से मनावल जाला।

भारत के लोकतंत्रात्मक गणराज्य होखे के महत्व के सम्मान-परब 26 जनवरी के गणतंत्र दिवस के रूप में धूमधाम से मनावेला। हमनी के ठीक बाद वाली पीढ़ी बदलाव के मुहाना पर बा; गाँव देहात अउरी शहर-शहरात में पसरल नवकी पीढ़ी के एह बदलाव के अगुआ वाली भूमिका में आसानी से देखल जा सकता, आगे आवे वाला युग ओहि लोग के बा, आज शिक्षा, रोजी-रोजगार, अस्तित्व से जुड़ल रकम-रकम के चुनौती से पीड़ित बा ई लोग। का तंत्र योग्यता के समुचित सम्मान दे पावता ? का उच्च पद पर पदासीन रसूख वाला लोग स्वार्थ लालच में परके आपन कर्तब्य भूला गइल बाड़न ? का सार्वजनिक जीवन में नैतिकता पर हैवानियत हावी हो चलल बा? का हमनी के विधायिका उदीयमान भारत के प्रतिनिधित्व करे में सक्षम बा ? कि एमें सुधार करे के जरूरत बा ? चुनाइल प्रतिनिधियन के जनता के भरोसा फेरू से जीते के परी। एह अनेसन के दूर क के सही मायने में गणतंत्र दिवस के मनावल सुफल होई। पूर्ण लोकतंत्र लियावे के दिशा में अभी बहुत काम कइल बाकी बा।

खेत डाँड़ पर जब पियरकी सरसो बहत बसन्ती बयार में मस्त होके झूमे लागेला आ आम के फेड़ पर से फूल निकल के झाँके लागेलन त चारु ओर प्रकृति के दिहल हरियरकी चादर ओढ़ के खेत-बघार इतराये लागेलन। गुलाबी ठंड के चलते मौसम खुशनुमा हो जाला। एहि मौसम में माघ शुक्ल पंचमी के बसन्त पंचमी भा सरस्वती पूजा मनावल जाला।

मातृ शक्ति के बिना आदमी के जीवन बदरंग होला, उहे लोग के चलते ओहन लोग के अलग-अलग रूप में रिश्ता निभवले के चलते हमनिके दुनिया मे रंग लउकेला। ओहनिएँ लोग के त्याग, समर्पण, कोमलता के चलते जिनगी टिकाऊ बनेले। मातृशक्ति के समाज में समान अधिकार मिलो, शिक्षा स्वास्थ रोजगार के मामिला में दू बिनाय न कइल जाव, अइसन कुल उद्देश्य के इयाद राखे खातिर हर बरिस 8 मार्च के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनावल जाला।

खेत मे उगल सरसों के पियर फूल, झूम-झूम के फागुन के आवे के आगम बया कर रहल बाण स, हँ उहे फागुन जेमा पिचकारी से निकलेला आम आदमी के खुशी मस्ती, रंग बिरंगा पानी के रूप अख्तियार क के। जेमा गावल जाला ऊ गीत जेकरा के फगुवा कहल जाला। ई उहे गीत ह जेमा लोक मानस के मस्ती खुमारी अकड़पन मुखर होके निकलेला लोक कण्ठ से। साँच कहल जाव त फागुन राग रंग के ऋतु ह, मिले-जुले, हँसे - खेले के ऋतु ह, रंग अबीर के जुगलबन्दी कवि के कलम से भी निकले लागेला। पदमाकर के एगो सवैया के बानगी लिहल जाव-

"फागु की भीर अभीरनि की
गहि गोविद लै गयी भीतर गोरी।
भाइ करी मन की पदमाकर,
ऊपर नाइ अबीर की झोरी।
छीनि पितम्मर कम्मर ते सु
बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ कह्यौ मुसक्याइ,
लला फिर खेलन आइयो होरी।

एहि तिमाही में 16 मार्च के भोजपुरी के पहिलका महाकाव्य 'अपूर्व रामायण' के रचयिता, नारी मन के विशेषज्ञ, पूर्वी के जन्मदाता, "अंगुरी में डंसले बिया नगिनिया रे, ए ननदी, दियरा जरा द" जइसन अनगिनत गीतन के रचयिता महेंदर मिसिर जी के जन्मदिन ह। अब उहाँ के दुनिया में नइखीं, बाकी लोकमन से विदा भइल संभव बा का ? पूर्वी के अमर गीतन में हमेशा जीयत रहिहें महेन्द्र मिसिर जी।

सिरिजन के 15वाँ अंक रउरा हाँथ में बा । साहित्य के कुल रस परोसे के कोशिश कइले बानी जा, जवन रस बुझाय, पीहीं। भाषा खातिर अलम चाहीं। करेजा जुड़ाव त आशीष जरूर देब।

राऊर आपन,
तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

मसाजवादी लइका

&डॉ- अनिल चौबे

कोरोना से जइसे तइसे जे जान बचा लिहल ऊ डेल्टा वाइरस से जमलोक चलि गइल आ जे ओहू से बचल ओकरा ख़ातिर ओमिकरोन जी सिवान पर डेरा डाले के तैयार बानीं। पासपोर्ट वाला ले आइल बा, पैनकार्ड वाला भगतों, राशनकार्ड वाला के कवनो चिन्ता नइखे ! जवना दिने सरकार ई घोषणा ना क देव कि वैक्सीन के दूनो डोज बेकार बा, अब फेरु से नया सुई भोंकवाईं। ओमिकरोन जी के स्वागत खातिर यूपी सरकार सात-आठ गो बड़ रैली करे के तइयार बिया, चुनाव कपार पर बा त इहो जरुरी बा। लोग त मरते जीयत रहेला, जीवन छणभंगुर ह एकरा खातिर ढेर चिंतित भइला के जरूरत नइखे। कांग्रेसी दीदी बतावत रहली ह कि लइकी हईं त लड़ सकेली, ई बात नीक ना लागल, बहिन बेटी के झगड़ाह लड़ाकू बनावल नीमन रहन ना कहाला। व्यक्तित्व के सहज, सरल आ सौम्य बनावल बड़हन बाति होला। जइसे कानपुर के जैन जी के देखलीं, छापा परल नोट गिने खातिर मशीन मंगवावल गइल। जैन जी एतना सीधा- साधा जीवन टुटही स्कूटर ले के बितावत रहनीं कि पड़ोसी ले ना जानि पवलें कि जैन जी हेतना बड़हन मुरघुइस होइहें। अइसने महापुरुषन के बल पर ई धरती टिकल बाड़ी आ पार्टी नेता जीयत बा लोग। उहाँ की महानता के चर्चा से सोशल मीडिया गाँउज बन्हले बा।

मसाजवादी इत्तर के पवित्तर महक से पूरा यूपी महक उठल बा। कई जने त शीशी के बैपार करे के सोचत बाड़ें। हम पूछनीं पतंजलि वाला बाबा से कि अब रउवों इत्तवाला बिजनस में उतरब का?

उहाँ के जबाब दिहनीं कि ना रे बाबू, हमार त गोमूत्र वाला ही ठीक बा। ए में छापा परला के डर नइखे। एगो पाँच साल के लइका के हाथ में मसाजवादी झंडा देख के अकिल-लेस भइया कहत बाड़ें कि लइका के हाथ में पार्टी के भविष्य सुरक्षित बा। जवना हाथ में इस्लेट आ मनोहर पोथी होखे के चाहीं ओ हाथ में पार्टी के झण्डा देखि के रउआ पार्टी के भविष्य भले सुरक्षित लउकत होखे बाकी हमारा ए देश के लइका के भविष्य तनिको सुरक्षित नइखे लउकत। छोड़ीं, जाए दीं ए सब से नेता के का मतलब होला? अब त नेता लोग सराप भी देता। सुशासन बाबू कई गो आयोजनन में मद्य से होखेवाला नुकसान गद्य आ पद्य में समझवनीं हँ। आशा बा, लोग मद्य माने शराब समझले होई।

किसान आंदोलन समाप्त हो गइल, टिकैत के बेरोजगारी पर दुःख होत बा। मफलरमैन भी ठंडा से किकुरल बाड़ें। बाबा जी के साँढ़ आ बुलडोजर दूनो में ब्रेक नइखे लागत। बाकी सब ठीके बा,

नवका साल सबका खातिर खुशहाल होखे।

◆◆◆

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

डॉ. जौहर शफियाबादी
विभाग अध्यक्ष (उर्दू)
डॉ। पी एन सिंह महाविद्यालय
छपरा

नवही नववर्ष

नवही नववर्ष का कलियन के
ई साल नया उकसावत बा।
हुंकार करत मरजाद भरत
जिनिगी के राह सुनावत बा।
अब उठऽ मशाल लऽ हाथन में
नवभारत के निर्माण करऽ,
एह मातृभूमि के कण कण के
दिन रात नया शृंगार करऽ।

एकता के दीप जले पथ में
निज मानवता के शान रहे
ई विश्व- नयन के जोति बने
कुछ अइसन कर्म महान रहे
बापू के स्वप्न ना टूट सके
एक दूजे पर उपकार करऽ।

अबो गुलामी गइल कहाँ बा
कुछ त भइया मानऽ
पूँजीवाद के चन्द्रमुखी ई
का ह कुछ त जानऽ।
ई नीति त असह गरल बा
उठऽ, बढ़ऽ, उपचार करऽ।

जब घोर अन्हरिया के पीड़ा
दुत्कार गइल दुर्योधन के
तब भीष्म पितामह के शैय्या
हुंकार उठल अरिमर्दन के
बा धर्मयुद्ध में नेति खड़ा
पारथ जागऽ चित्कार करऽ।

◆ ◆ ◆

बात जे सादगी में होखेला

आदमी आदमी में होखेला
दर्द कुछ जिन्दगी में होखेला

प्रीत के रीत ई बतावेला
बात कुछ दिल्लगी में होखेला

रूप के धूप कुछ निखरे अउरी
नेह जब चाँदनी में होखेला

कुछ त समुझे के अब जतन जानीं
कुछ त नेकी बदी में होखेला

रूप का धाह से जर जाई सब
धार उमड़ल नदी में होखेला

जा के सीखीं ना रउवों 'जौहर' से
बात जे सादगी में होखेला

◆ ◆ ◆

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

भाई के दुलार

जब-जब याद आई,भाई के दुलार तहरा,
तब-तब काटे धाई,अँगना दुआर तहरा ॥

मइया कोरा में खेलवली,जहिया झोरा में झुलवली,
अँगना एके-एक दुअरिया,घर के एके-एक डगरिया,
सपना बाबूजी के एक,हमरे बबुआ होइहे नेक,
सपना केतनो फुलइले एके डार तहरा ॥ जब0 ॥

अलगा होके तूँ का पइबऽ,तनिका नीमन चीकन खइबऽ,
हमरा सुखल-साखल जूरी,करबि दूसरा के मजदूरी,
तहरा जूठन फेंकल जाई,हमरा आगी ना बराई,
सोचब एके अँगना दू-दू गो बेवहार तहरा ॥जब0 ॥

जहिया दियरी बाती आई, तहरा पाँती दिया धराई,
हमरा घर में रही अन्हार,अँखिया डूबी आँसू धार,
फगुआ हँसि-हँसि खूब मनइबऽ,पूआ संगी साथ उडइबऽ,
देखब कई रंग के एके गो तिउहार तहरा ॥ जब0 ॥

इहे किस्मत के ह बात,बाड़ पइसा ढेर कमात,
जिनगी माटी में हमार,चमकत बाटे देह तोहार,
हमरे चलते तूँ बनि गइलऽ,बनि के हमरे से तनि गइलऽ,
हँसि-हँसि ताना मारे गउवाँ जवार तहरा ॥जब0 ॥

करबि तहरे हम सेवकाई,लेइबि जिनगी सजी गँवाई
मइया बाबूजी के सेवल,नइया एक साथ जे खेवल,
पालल बगिया के मति काटऽ,अँगना दुअरा के मति बाँटऽ,
एक दिन आई फेरु बगिया में बहार तहरा ॥ जब0 ॥

धनवा लेबऽ बहुत कमाई, नाही मिली सहोदर भाई,
तोहार मोटरी हम पहुँचाइबि,जे-जे कहबऽ टहल बजाइबि,
बाकी हमके मति बिलगाव,अँखियन से मति दूर भगाव,
उहे करबि जेइसे भरल रही संसार तहरा ॥जब0 ॥

◆ ◆ ◆

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

काहे करेलऽ..

काहे करेलऽ तू रोजो तकरार बबुआ
तू त बेटा हउअ गोदी के सिगार बबुआ

तहरे के देखि-देखि दुखवा भुलाइले
सुतेलऽ त जाग-जाग लोरी हम सुनाइ ले
तहके देखि-देखि करी भिनुसार बबुआ
तू त बेटा हउअ गोदी के सिगार बबुआ

छोड़ि देब चोरिया के बानि जे लगावेल
काहे रोज गाव घर से ओरहन मंगावेल
आजिज कइले बाड़ सगरो जवार बबुआ
तू त बेटा हउअ गोदी के सिगार बबुआ

करेल जियान काहे सगरो बदनिया
तुहि बाड़ जिनगी के हमरो निशानियां
काहे करेल इजतिया के उघार बबुआ
तू त बेटा हउअ गोदी के सिगार बबुआ

ढेर जे अखरखन करब लाठी चकवइबऽ
गाव से जवार सजी दुश्मन बनइबऽ
परी तहरो पर कहियो कसि के मार बबुआ
तू त बेटा हउअ गोदी के सिगार बबुआ

अबहु से चल चलि के माखन मिसिरी खा ल
ढंग आ ढूआब सीख अंजन रचा ल
केतना निमन बाड़ कान्हा तू हमार बबुआ
तू त बेटा हउअ गोदी के सिगार बबुआ

◆ ◆ ◆

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

स्व. पं. धरीक्षण निश्र जी के कविता कुक्कुर (अध्याय - 6)

अब उँखिये में चरिह चुरिह अब धरिह मनमाना शिकार ।
खेखर खरहा खइह लेकिन जब देखिह तूँ मोटका सियार ॥6॥
तब भले जोर से गुरनइह बाकी दूरे से डेरवइह ।
ई हउअन सन पोसुवा सियार एकनी का पँजरा जनि जइह ॥7॥
ई ऊँखी के रस चूसि चूसि अपने पेटवा बस भारेले ।
केतना मेहनत कइलस किसान एपर ना तनिक विचारेले ॥8॥
एह सियरन के बस इहे बानि सब दिन से हवे निमहि गइल ।
का राज तंत्र का प्रजातंत्र दूनूँ धिरावते रहि गइल ॥9॥
केहुवे का कहला सुनला से जनि एकनी पर परि जइह तूँ ।
बतिया हमार ल गाँठि बाँन्हि युग युग ले जीहS खइहS तूँ ॥10॥
पहिले के आदत छोड़S तूँ अब से हमनी का साथ रहS ।
हमनी का तरे आजुवे से तूँ छुटहे खेलत खात रह ॥11॥
ई हे बतिया सुनते एकर सब बुद्धि पुरनकी खोइ गइल ।
आ बड़का दल का कुकुरन से तब सुघाँ सुघौंवलि होई गइल ॥12॥
बारह बरीस जवना कुक्कुर के कहलसि चोर लबार सजी ।
ओही कुकुरन का साथे ई अब लूटे चलल बहार सजी ॥13॥
मन आग पाछ में बा शायद ना कहीं ठीक से पाटत बा ।
जनता में जात लजात हवे दिन एने ओने काटत बा ॥14॥
शंका ई हे केतने साथी लोगन का मन में धइले बा ।
पहरा जो मिलल ऊँखि के ना तब मानीं कि घर गइले बा ॥15॥
केहु कहत हवे कब तक लड़ो ई लड़त-2 अब थाकल बा ।
हाड़े माँसे के देहि हवे एही से मनवों पाकल बा ॥16॥
केहु झंखत बा, अपने खातिर ई सब जे बाटे से बाटे ।
हमनी गरीब के पुछवइया लउकत नइखे कि के बाटे ॥17॥
शासक कुकुरन का श्रेणी में दोसर शरीर अब धइले बा ।
काहें कि ओह जनम में ई कुछ ज्यादे पुन्नि कमइले बा ॥18॥
देखीं, पा के अब नया जन्म उजियावेला कि बोरेला ।
घर के पहरा देला आ की हँड़िया गगरी टकटोरेला ॥19॥
काहें कुक्कुर दूबर भइलें, आवा जाई दू घर कइलें ।
बड़का सावज उनका महकल, दूनूँ घर के कवरा बहकल ॥20॥

◆◆◆

भाषा- पहचान के मूल भाषिक तत्व

कवनो भाषा का स्वरूप के बतावे वाला चार गो प्रमुख भाषिक तत्व होलें - सर्वनाम, क्रिया-पद, प्रत्यय-विभक्ति आ अव्यय। कवनो व्यक्ति, समाज भा भाषा के सम्पर्क में आके केहू के भाषा प्रभावित हो सकेले। बाकिर एह चारो भाषिक तत्वन के ना अपना सके। कवनो भाषा अपना सर्वनाम आ क्रिया-पद के छोड़ के दोसरा भाषा के सर्वनाम आ क्रिया-पद ना ले सके। संज्ञा आ विशेषण के लेन-देन आम बात होला। शर्ट, पैंट, कोट, टाई, स्वेटर, कम्प्यूटर आदि भोजपुरी जाति-भाषा के आविष्कार ना ह त ई भोजपुरी अंगरेजी भा दोसरा यूरोपीय भाषा से एह सब के संज्ञा के रूप में ले ली। ओइसहीं साड़ी, धोती, धर्म, दर्शन, अध्यात्म आदि शब्द इंग्लिश जाति-भाषा के आविष्कार ना ह त उहो ले ली। बाकिर एकरा से भाषा ना बदली।

भोजपुरी अंगरेजी से क्रिया-पद ' कम , गो, इट, ड्रिक आदि ना ले सके आ अंगरेजियो भोजपुरी से खा, जा, उठ, बइठ, सुत, पढ़, जो, आव आदि ना ले सके। खड़ी बोली हिन्दी के सहायक क्रिया है, हैं, था, थे, थी, थीं आदि भोजपुरी ना लगा सके आ भोजपुरी के क्रिया-पद बा, बाटे, बड़ए, बाटी, बाड़ी, बानी, हईं, हवी, हउवे आदि के खड़ी बोली हिन्दी ना अपना सके। भोजपुरी के नकारात्मक बोधी क्रिया-पद 'नइखे' हिन्दी में ना चल सके। भोजपुरी के सर्वनाम जे, जेह, से, सेह, हिनकर, हुनकर, जेकर, सेकर, एकर, ओकर, होकर, राउर, केकर आदि हिन्दी में प्रयुक्त ना हो सके आ हिन्दी के सर्वनाम तुम, तुम दोनों, तुम सभी, वह, यह, उसका, इसका, किसका, आपका, मेरा आदि के भोजपुरी ना अपना सके। जदि एह दूनों में रूप समान नजर आई त एकर माने ई बा कि ई दूनों एक भाषा ना होके एक भाषा-परिवार के भाषा ह। क्रिया-भेद से भाषा-भेद जानल जाला। संज्ञा-भेद से भाषा-भेद ना होखे; जइसे - ' राम गोज ' वाक्य में 'राम' शब्द संज्ञा हिन्दी भा भोजपुरी के बा आ 'गोज'शब्द इंग्लिश के बा एह से क्रिया-पद का चलते ई वाक्य इंग्लिश के बा। ' राम जाता है ' वाक्य में जाता है क्रिया खड़ी बोली हिन्दी के बा एह से ई वाक्य हिन्दी के बा आ ओइसहीं '

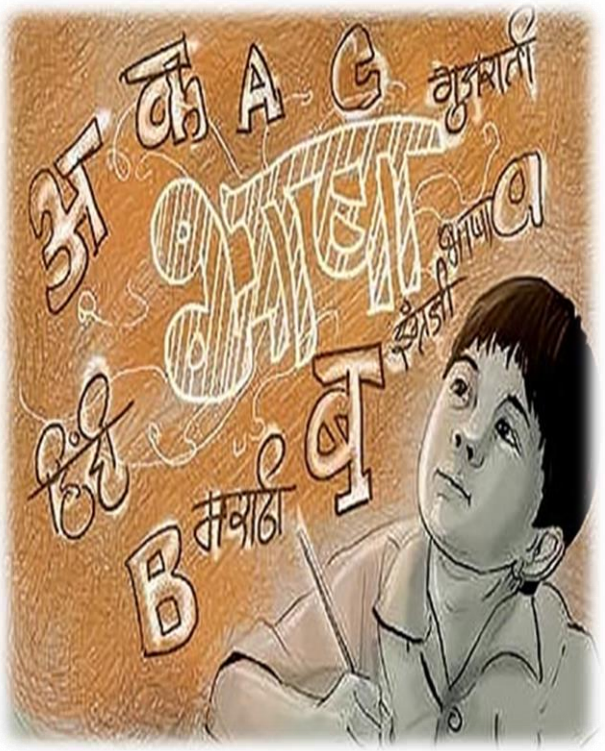

चित्र साभारः www.sachkahoon.com

' राम जाता चाहे राम जात बाड़न ' वाक्य में जाता आ जात बाड़न क्रिया-पद के चलते ई वाक्य भोजपुरी के बा। ' महात्मा गाँधीज सत्याग्रह ' में 'ज' सम्बन्ध-प्रत्यय के चलते ई इंग्लिश के भाषा बा। ' महात्मा गाँधी का सत्याग्रह ' में 'का' सम्बन्ध-प्रत्यय भा परसर्ग के चलते ई हिन्दी भाषा के उदाहरण बा। उहँवे ' महात्मा गाँधी के सत्याग्रह ' में 'के' सम्बन्ध-प्रत्यय-विभक्ति भा परसर्ग के चलते ई वाक्य भोजपुरी के बा। ' यू गो ' में यू सर्वनाम आ गो क्रिया-पद इंग्लिश भाषा के बोध करावऽता। एकरा हिन्दी में यू जाता है चाहे तुम गो दूनो ना हो सके। ' यदि ' स्वतंत्र अव्यय संस्कृत से हिन्दी में आइल बा। एकर मतलब ई ना भइल कि संस्कृत आ हिन्दी एके भाषा ह। एकर मतलब कि ई दूनो भाषा एके जातीय भाषा-परिवार के ह। 'जो' अर्थ वाला एह 'यदि' अव्यय खातिर भोजपुरी में जदि, जो, जाहु आदि अव्यय चलेला; जो राउर अनुसासन पाऊँ, जाहु हम जनतीं अइहें रामजी पहुनवाँ, से बिहने सबेरे घरवा जइतीं हो लाल।'

कहे के अभिप्राय ई बा कि जब कवनो भाषा दोसरा भाषा से प्रभावित होले तबो ऊ आपन स्वरूप समाप्त ना करे। कुछ संज्ञा-पद आ कबो कबो कुछ क्रिया-पद आ सर्वनामो आदि अइसहीं घुणाक्षर-न्याय से केतने भाषा सब में मिलत-जुलत बन जाला। तबो ओह सबके एक परिवार के भाषा तबले ना मानल जाए जबले अधिकाधिक संख्या में ओइसन शब्दन के मिलत-जुलत रूप ना मिल जाए।

ऊपर का वाक्यन में आइल शब्द ' तबो ' खातिर हिन्दी में 'तब भी', 'तबले' खातिर ' तब तक' , 'जबले' खातिर 'जब तक', 'ओइसन' खातिर 'वैसे', ' मिलत-जुलत ' खातिर ' मिलता-जुलता ' शब्द चलेला। कबीर, रैदास तुलसी,धरनी आदि के चलवाही दोसरो-दोसरो भाषा-भाषी ले रहे। ऊ लोग अपना भाषा के प्रभाव में लेके एह लोग का बानियन के लिखल। बाकिर एही सर्वनाम, क्रिया-पद, प्रत्यय-विभक्ति आ अव्यय के आधार पर ओह लोग का भाषा के पहचान कइल जाला। अइसे अनुवाद करे का क्रम में इहो मूल-तत्व प्रभावित हो गइल बा।

कवनो दू भाषा में एह भाषिक तत्वन में अधिकाधिक मेल मिले लागे त समुझीं कि ई दूनो भाषा एके भाषा-परिवार से विकसित भइल बा। जइसे ऋग्वेद आ अवेस्ता के भाषा। काहे कि ई दूनो प्राचीन आर्य लोग के भाषा से छिनगल बा। भाषा के काम जोड़ल ह। अपना देश में बहुत भाषा बोलल जाला। बाकिर सब एके जातीय भाषा संस्कृत से बन्हाइल बा। संस्कृत हर भारतीय के एक जाति में समेट के रखले बा। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, वैदिक, अवैदिक, क्षत्रिय, ब्राह्मण, महार , बौद्ध, जैन सिख आदि के नाम राम कृष्ण, गोपाल, अमृत, नवजोत, अमरेन्द्र, सुशीला, गायत्री आदि बा। हजारन पंथ, वर्ग आ भाषा के होइयो के सबके ई महाजातीय भाषा ' संस्कृत ' एक बना के रखले बा। इहाँ तनिका केहू अपना संतान के नाम तैमूर, सद्दाम, गजनी, रोबर्ट आदि राखेला कि हल्ला होखे लागेला कि ई भारतीय जाति ना हो सके। अइसहीं चीन-जापान के बौद्ध धर्मावलंबी भइला के बावजूद जदि उहाँ केहू भारतीय भाषा के नाम रख लेवे त राष्ट्रद्रोही घोषित हो जाई। आचार्य किशोरी दास वाजपेई जी अपना ' भारतीय भाषाविज्ञान ' में एह विषय पर विस्तार से विचार कइले बाड़न।

◆ ◆ ◆

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'
मुजफ्फरपुर

घर के आसपास

दिनेश पाण्डेय
पटना, बिहार

(पिछिला अंक से आगे)

ना केवल आदमी बलु हर जीव बदे बासथल एगो अनिवार्य जरूरत ह। अगतहूँ एह बात के प्रमुखता से जिकिर भइल ह कि घर के परतच्छ सरूप जवन होखे बाकी सही मायने में घर कुटुंब के जुड़ाव से संबंधित चीज ह। जिनिगी के चार करममूलक बँटवारा में से दुसरकी अवस्था गिरहस्ती के ह। हकीकत में 'गृहस्थ-आश्रम' मानुस-जीवन के मेंहि ह जेकरा इर्द-गीर्द जिनिगी के सारा तान-बितान फैलल-पसरल बा-

"यथा वायु समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः॥" (मनु०- ३.७७)

(जइसे हवा के आसरे सभ प्रानी जीएले, ओसहीं सभ आश्रम गृहस्थाश्रम के अलमे बाड़े।)

सुख के केन्द्र घरे ह- "गृहा वै प्रतिष्ठा" – (शतपथ १.१.१९) आ बेगर घरनी के घर के अस्तित्व बेअरथ। एगो कहावत ह- 'बिन घरनी घर भूत बसेरा'। 'गाथासतसई' के एक मरम छूएवाली गाथा में एक हरवाह के जिकिर बा जे पत्नी के ना रहले बेकामों के खेते प ए से परल रहत बा कि घर के सूनापन बरदास्त से बाहर बा-

णिकम्माहि विच्छेत्ताहि पामरो णेअ वच्चए वसइं।
मुअपिअजाआसुण्णइअगेहदुःखं परिहरन्॥ (गा०स०- २.६९)

भोजपुरी भाषा-भाषी इलाका खेती प्रधान ह ए से तेकरे जरूरत का हिसाब से गृह-रचना होली सँ, जेकरा प निरमान-सामग्री के उपलब्धता, समकालिक सोच, चलन आदि के असर देखल जाला। घर, मकान आम प्रचलन के शब्द हवें। बंगला खुली जगह में बनल सुंदर हवादार मकान ह, कोठी, हवेली पक्का आ बड़ मकान भा रइसगाह हवें, महल राजा-रइस के बड़हन आ भव्य घर ह। आवास, टिकाव, पडाव, बसेरा, डेरा, वासथल, रहवास आदि सामान्य रूप से ठहराव के जगह बदे प्रयुक्त शब्द हवें। छप्परा, झोपड़ी, कुटिया, पलानी, मड़ई घास, पुअरा-पताई आदि के छादनवाला छोटा घर हवें।

बिगत कुछ दसक से घर के बनावट में काफी बदलाव देखल जाता। एक गिरहस्त के पारंपरिक मकान में अगवासा के सहन, बरांडा, ओसारा, ओसरी, ढाबा भा दालान अवसि के होखे।

कइयक बेरि दालान मुख्य क़िता, जेकरा के जनानी-क़िता कहल जाय, से एकदम बेफाँट रखल जाय आ केवल घर के मरदाना प्रयोग में आवे। अक्सर दालान के दुन्नों बाजू छोटहन कोठरी होत रही सँ। बड़ आ भव्य दालान समृद्धि आ प्रतिष्ठा के चिन्हँ रहे। दालान के अगिला हिस्सा तोरणयुक्त, मेहराबी या पाएदार होखे। पाया, खंभा, थून, थूमी लकड़ी, पथल, लोहा आदि धातु के होखस जवना प बेल-बूटा के खुदाई के कलात्मकता देखे में बने, बाद में तेकर संरचना में सिरमिट-गारा के प्रयोग बढ़ गइल। पीछे आ बगल के भीत में हवादार जंगला, छज्जा, आला, ताखा, दीयरखा उपयोगी संरचना हवें। जनानी-क़िता के निकसार भा मुख्य-दुआर के अंदरूनी कोठरी या गली के तरह के भीतरी भाग पौरी, ड्योढ़ी, बगल के चौपहल भा खुला-खुला चौबारा, सामने के चउतरा, आगे थोड़ा हट के गाय-गोरू बान्हे बदे खरक, गोठ, घारी, चरन, तबेला, थान, बथान, बाड़ा, सार होला। घोड़ा बान्हे के जगह घोड़सार, घोड़तबल आ हाथी बान्हे के जगह हथिसार संपन्न लोग के चिन्हाँसी होत रहन। घर के पिछला हिस्सा, पछीत, पिछवारा भा पिछूती में छोटहन घेरा के बेढ़ा, कोला भा बगीची होखे। मुख्यघर या जनानी-क़िता के प्रवेश-दुआर याकि सदर दरवाजा चउखट जड़ल होत रहे जवना में फूल-पतई, बेल-बूटा, ज्यामितीय आकीरति वगैरह के उकेरन होत रहे। चउखट के पीछे मजगूत दुपलिया किवाँड़ लागे जेकर आड़ी-बेंड़ी पट्टी बेनी आ सीधी-पतली पट्टी के बात्ता कहल जात रहे या फिर बिल्कुल सादा होखे। बेनी के जोड़ेवाली लकड़ी के पुस्ती प घुंडीदार किलौटा लागत रहे। चउखट में नीचे-ऊपर ठोकल चूल के गोल लंबोतरा भाग के सहारे पल्ला घुमत रहे, बाद में चूल के जगह लोहा आदि धातु के क़ब्जा चलन में आ गइल जवन तेकरा बनिस्बत दृढ़ आ सुरच्छित ह। चउखट के दहिने-बाँवें आ बीच में भीत के किनार के धारी भा झड़प, ऊपरी मथेला के लकड़ी के उतरंगा, नीचे के लकड़ी के देहरी भा लतमरुआ आ अगल-बगल के लकड़ी बाजू या थान ह। लतमरुआ में पीपर, बरगद सरिस पबित्तर मानल जाएवाला लकड़ी के प्रयोग बरावल जाला। चउखट के ऊपर खाली जगह बरौठा ह।

किवाँड़ी उढ़कावे खातिर अड़गड़, किल्ली, छिटकिल्ली, बेंड़, साँकल आदि के इस्तेमाल होला। दुआर के भीतर के घर डेवढ़ी, दुआरघर, दोगहा, दुआरा, दुमुँहाँ ह। डेवढ़ी के पिछला दरवाजा ओसरा, ओसारा, ओसरी, ओलती, परछत्ती भा बरामदा में खुलेला। ओसरी के अगिला मेहराबी या पाएदार भाग घर के आँगन आ पिछला हिस्सा कतार में बनल आयताकार कमरन से लागेला। भीतरी कक्ष अक्सर परंपरागत वास्तु आ जरूरत के आधार पर तय होलें। आग्नेय मे चउका, चुल्हानी, चुल्हीघर, खैकाघर, भनसा भा रसोईघर रखल जाला। चुल्ही के बगल में माँड़ पसावे बदे बनल बेदिका के थवना कहल जात रहे। दही जमावे खाती दूध औटे के गड़हा या तपौड़ा रसोइए घर मे बने। ईशान कोन जलस्थान, कूप, घिड़सिर, नहानघर आ वायव्य (भंडार कोना) गोदाम, भंडार, बेर्ही, बखार, नाजघर, कोठी, कोठिला, कूँड़ा-भाँड़ी, डेहरी, कुँड़नी आदि खाती उपयुक्त जगह मानल जात रहे। डेहरी के ढकना पिहान आ नीचे से अनाज निकालेवाला छेद आन ह। देवताघर, कोहबर ऊ कमरा ह जवना में बिआह के बखत कुलदेवता के पूजन आ कइयक रश्म पूरा कइल जाला। कनीयाघर नवब्याहता बहुरिया के सयनकक्ष ह। सौरीघर, परसउतीघर बच्चा जने बदे निश्चित घर ह। दुमंजिला घर के ऊपरतल्ला भाग कोठा, अटारी ह जहाँ चढ़े खाती खेंढ़ी, जीना भा सीढ़ी के प्रबंध होला।

घर के छादन, छान्ह, छप्पर ढालवाँ खपरैल या छतदार रखल जाला। छप्पर के बनावट में आमने-सामने के लंबी भीत प लकड़ी के मोटी शहतीर, जेकरा के धरन कहल जाला, टिकावल जाला। धरन के मध्य छोटी लकड़ी के मलखम, तेकरा ऊपर लरही आ बँड़ेरी बिठावल जाला। बँड़ेर भा बँड़ेरी के छोर आमने-सामने के बाजूवाली भीत, जवना के बीच के भाग ऊँचा-तिकोना रहेला, से टिके लें। बँड़ेर आ लंबी भीत प कोरो, बरंगा आ बाँस के बाता से बनल ठाट के ढलवाँ बिट्टन प कास-कुस, खर, झलास, सिरकी, मूँज आदि बिछा के ऊपर खपड़ा-नरिया के सतह बिछावल जाला। छप्पर के मुँड़ेर में मँगरा के उपयोग होला। कमरा के चौड़ाई के दीवार के ऊ तिकोना भाग जेकरा प बँड़ेर रखल जाला ऊ पाख ह। दु पाख के जोड़ कोनिया भा कोनसिया ह। कोनसिया प बरखा के पानी के बहाव बदे टीन के पतनारी आ ऊपर के कोना प कलश या कंगूरा रखल जाला।

सपाट छत के मकान में पहिले लकड़ी, शहतीर, पथल, ईंटा, सूर्खी-चूना आदि के प्रयोग होत रहे अब तेकर जगह सिरमिट-गिट्टी-छड़ से ढलाई के तरीका आम प्रचलन में बा। भीत चुनाई में सूर्खी-चूना, माटी के गिलावा के पाछिल तौर-तरीका अब अतीत के बात ह, तेकरा बजाय सिरमिट के गारा या गिलावा के इस्तेमाल आम बा। दीवार के बाहरी सतह प पलस्तर, टिपकारी, नहला, लेवार में सिरमिट जादे टिकाऊ आ सुभीता जनक निरमान-सामग्री ह।

घर के पीछे के दरवाजा खिड़की कहाला जे खँढ़ी (घर के उपखंडी) में खुलेला। खँढ़ी मे पिछुआरा याकि पछीतघर, भुसहुला (भूसाघर), गोंठहुला (गोंइठाघर) या बिटौरा आदि बनावल जालें। छत, छप्पर या छाजन के छोर जहाँ बरखा के पानी चूवेला ओलती, ओरी भा ओरियानी ह। बेटी के बिआह में गुरहत्थी या कन्यादान के समय गावल जाएवाला एक संस्कारगीत में घर के बिचिलकी हिस्सा, आँगन के मँड़वा के इर्द-गीर्द ओरियानी तले बइठल बरियातिन के सामने रश्म पूरा करे खातिर कन्या के प्रस्तुती के बखत के बेहद मार्मिक गीत बा, जे में 'पुतरी' (पुत्री, पुतली) के यमक देखे जोग बा-

"ओरी तर ओरी तर, बइठे बर रे नेतिया।
काढ़ ना कवन हो बाबा, आपनी हो पुतरिया।
का हम सजन ए लोगवा काढ़बि हो पुतरिया?
हमर पियारी हो बेटी, अँखिया के पुतरिया।"

("ओलती के नीचे नीतिवंत दुलहा बइठल बाड़े, ए बाबा, आपन पुत्री के निकालऽ।" "ए सज्जन लोग, हम अपन बेटी, जे आँखि के पुतरी हई, कइसे काढ़ी?")

घर में रोशनी, हवा के चाहना से खिड़की, गौखा, जंगला, जाली, झिर्री, भुरकी, रोशनदान के प्रबंध होला, हालांकि जुगीन परिस्थिति में पर्दाप्रथा के प्रचलन, तत्कालिक सोच भा सुरच्छा के नजरिए एन्हनि के बनावट में एक सीमाबद्धता देखल जाय। अब ए सब में काफी खुलापन आ रहल बा रसोईघर से धुआँ के निकास खातिर बनल जगह के धुआँकस या तेनुआँ कहाय। कुछ लोग घर में तलघर, तहखाना, भुइँजबरा बनवावस बाकी वास्तु के नजरिए एन्हनि के उपयुक्त ना मानल जाय। पालतू भा खुदबुद्दी सरिस सहजीवी चिरइन बदे दरबा, खोता घर के अनिवार हिस्सा रहन। आँगन भा जलस्थान से पानी के निकास बदे नाली, मोरी, पड़ोह, पनरोह याकि परनाली होलें। बाहरी चौहद्दी में अहाता, छरदीवारी, बाड़, झोलाँड़ी, घेरा, आपन-आपन समरथ, जरूरत आ जुगत से जुरल चीज हवें।

मुहावरन के आपन दुनिया ह। खाली घर शब्द से बनल मुहावरन के देखल जाव।

'घर बन' गइल (समृद्धि), 'घर अच्छा (मालदार)' भ गइल, 'घर बसल' भा 'आबाद (बिआह) भइल', 'घर के नाम (यश) उछलल', 'घरनी (पत्नी)' 'घर के लक्ष्मी (कुशल, भागवंती)' भइली त जिनिगी में हजार नेयामत भेंटल। एकरा उलट 'घर उजड़ल (नाश),' 'घर के गइल (विनाश)', 'घर डूबल (विनष्ट होखल)', 'घर के आँगन' भा 'खरिहान (खंडहर) भइल,' 'घर में झाड़ू फिरल,' 'घर काटे दउरल (सूनापन)', 'घर के नाम डुबल (अपकीर्ति)', 'घर के दीपक बुझ गइल (निरबंस होखल)', 'घर खो देल (संपत्ति हानि),' 'घर-घर के होखल (मारल फिरल),' 'घर बंद
होखल (घर भर के मूअल)', 'घर बरबाद भइल,' 'घर मसान परिजन जनु भूता' भइल, 'घर में भूँजी भांग ना होखल (निर्धनता)' त बीपत के कवन ओर, कवन छोर? पूत सपूत होइहें त 'घर के रहता' आसान होई, 'घर उजियार' होखी, कपूत होइहें त 'घर के बोझ (उतरदायित्तव)' का खाक उठइहें, 'घरो चलल (जीवन निर्वाह),' 'घर में चूल्हा जलल (खाहूँ प संकट)' तक मोसकिल होखी। 'घरघुसना (स्त्रैण)' पूत नीक ना हवें। 'घर बइठले (निकम्मा)', 'घर के शेर (कायर) भइले' अदमी 'ना घर के ना घाट के (बेकार)' रह जाय। ऊ 'घरफूँक तमाशा देखे' के सेवाय अउ का कर सकिहें? जेकरा जीवन के अनुभव बा, 'घर घाट देखले' बा ओकरा दिमाग में ई बात 'घर कइले' रहेला कि बेगर मेहनत के पत्तो ना सरके। 'घर के भोला (सोझिया) भइल' ठीक बाकी अतिनों ना कि सिधवा के मुँह कूकुर चाटे। 'घर के अदमी' 'घर-भेदी' हो जास त लंका काहे ना ढही? कइयक लो के अनेरे 'घर अलगावे,' 'घर के माथ प उठावे' भा 'घर-घाट एक करे (शोरगुल)' के लत रहेला। 'घर-फोड़ू,' 'घर बिगाड़ू' अदमी से ताने रहल ठीक। अइसना के संगत से 'घर के पूंजी गील' होई, फायदा का 'घर से देवे-गँवावे' के हालात पैदा हो सकेला। डाइनो कुछ 'घर खाली छोड़' के खा ली। सभे 'आपन घर के रहता नापे' अपने काम से मतलब राखे, जीवन के तयशुदा लक्ष्य के 'घर तक पहुँचावे,' उन्नति के अंजाम तक लावे त सभकर शुभ काहे ना होखी? बाकी हिहाँ त अजीबे उलटपंथी बा, जान-बुझ के अदमी बिपदा के 'घर में बइठा लेता (रखैल कइल)', जेकरा चलते केहू के 'घर-आँगन नइखे सोहात (उचाटी)'। निकम्मापन आ जीवन में उछाह के लोप से 'घर-के-घर बंद होखे के बालात बन गइल बा।

घर के ले के कहावतन के कम फैलाव नइखे। 'घर आइल लछिमी के लात मारल' के चाहेला? मतलब ई कि अनासे भेंटल धन भा सुख के छोड़ी? आसानी के बनिस्बत जटिलता के अपनावल 'घर आइल नाग न पूजे, बांबी पूजन जाय' वाली बात ह। घर अइला के अनादर ना करे आ अभागत के सम्मान भारतीय संस्कृति के एक गुन ह, हिहाँ त 'घर आइल कुकुरो के ना निकालल जाय।' घर के चीज के गँवावेला? याने 'घर के आटा केहू ना गिल करे।' चाणक्य के कहनाम कि- "मंत्ररक्षणे कार्यसिद्धिर्भवति", 'घर आ दिल के भेद सबसे ना कहेके' समतुल्य नीतिपरक
लोक-उकित ह। 'घर के जोगी जोगड़ा, आन गाँव के सिद्ध', 'घर के मुरगी दाल बरोबर' जहाँ घर के प्रतिभा के कद्र ना होखे उहाँ सटीक बइठेवाली लोक-उकित हई। आदमी के रहनसहन आ व्यवहार से माली हालत के अंजाद 'घर के भेद त तबहीं पइलीं, चउका पूरे ढकना धइली' से हो जाला। बिना सामरथ के शेखी प तंज 'घर में चुटकी, बासी साग' के लोककथन में बा। नजदीकी धोखा देवे त 'घर के बिलारी, घरे शिकार', बदनसीबी के इंतहा में 'घर के जरले बन में गइले, बन में लागल आग', बाहरवालन के अधिक सम्मान प 'घर के पीरो के तेल के मलीदा', घर में समृद्धि त बहरियो सनमान प 'घर खीर त बहरियो खीर' जइसन कहाउति चरितार्थ होलें। 'घर खोदे इंधन बहुत,' के सीधा अरथ ई कि घर घाले पर उतारू के खर्च के कवन कमी? मिताई घाटा के चीज ना ह ए से 'घर-घर मीत न कीजै त गाँव-गाँव तो कीजै,' 'घरे-घरे मटियाला चूल्हा' माने सबके हाल बरोबर, 'घर होले घरुआरी से' के मतलब गृहणी गृहमुच्यते आ 'घर-घर देखा, एके लेखा' के बारे में का कहे के? जब सबके दुख-सुख के अनुभव एके धरातल प होला।
जिनिगी के सारा बखेड़ा घरे के आसपास बा। घर-गिरस्ती, घर-जुगत, घर-बारी से निजात मिलल अदमी खातिर असंभो चीज ह। जब ले मानुस-सभ्यता रही तब ले घर के घेरा चारो ओर रही चाहे ओकर बहरिया सरूप जवन होखे।
चलते-चलते कुछ सुक्ति प चितन हो जाए त का हरज?
संसयं खलु जो कुणइ,
जो मग्गे कुणइ घर।
(साधना में संशय ऊ करे ला जेकरा मारग में घर करे के होखे।)
जत्थेवं गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं।
(जहवाँ गइल चाहऽ, उहें आपन चिरंतन घर बना ल।)
सव्वदुक्ख संनिलयणं।
(अति संचय भा आन के दीहला के आसरे रहल सभ दुख के घर ह।)

◆ ◆ ◆

मध्यवर्गीय औरत

कुमार मंगलम रणवीर

औरत ममता के मूरत हई, जेकर जिदगी सँवरे के अनेकन दावा से बाजार समूचा पटल ह लेकिन कवि के आँखि कमरा के दीवाल पर टंगल झोल में फँसल उनका सबन के देखत हईं, जहाँ से निकले के प्रयास कइला पर यातना, अपमान आउर भद्दी गालियन से सामना होई।

अचानक बातचीत के बीच बड़ी नीमन से मीठ बोली में बबुनी कहलस- पढ़ाई त चलत ह पर भगवाने मालिक बाड़े। कब माई-बाबू केहू के माथे मढ़ दिहन आउर इंकार कइला पर पुछिहन कोई आउर हवे जिदगी में त बबुनी नाम बताउ।

कवि मन ई पंक्ति कइसे भुला जाउ आउर औरतन के हिय से निकलल शब्दन के जे शिक्षित बना के भी ओकरा के धुंध मे रखल चाहत ह। ए समाज में धन-सम्पति के आधार पर तीन वर्ग के लोग रहेलन- बड़, मध्य आउर छोट। पर ए सबन में सबसे ज्यादे दुर्गति मध्यवर्ग के औरतन के होला जेकरा के झोंक देवल जाला मर्यादा के चूल्हा में गोइठा बना के। फिर कहल जाला तोहरा भाग्य में इहे रहे।

संस्कृति अपनावल त सौभाग्य हवे औरतन के खातिर पर जे रूढ़ जकड़ल ह ऊ सबन के कूढ़न में ढकेल मृत सिद्ध कइले ह। ई त तनिको वाजिब ना ह।

मध्यवर्ग के लोग पुरखन के जमीन बेंच के बजावत बाड़न करोड़ों के ढोल-ताशा। इज्जत के नाम पर कटत ह उनकर वजूद पर मद मे चूर वाहवाही लूटे में मगन हवन। दादा-परदादा के दुआर पर कल तक हाथी बन्धत रहल। आज हाथी न रहल बाकी लोहा के जंजीर बचल ह जेकरा बल पर ऊ साबित करेला खुद के रईश। पर कबतक?

बाँध देत ह सभे अपनी बेटी के शादी के बंधन से उहो लइका के दौलत पर। दौलत सुख के साधन हो सकेला पर कबो सुख नाहीं।

फिलहाल हमार आँखि देखत ह बाबुल के आंगन मे पलल चुलबुली चिरई के जे ससुरा में संगमरमर बीच कुढ़न भरल जिदगी घिचत हई अपना तन मन से उपजल काबू से। बस ए नाम पर कि ओकरा कन्धा पर माई-बाबू आउर खोखला भइल समाज के इज्जत टिकल ह। ऊ बेचारी के भतार समझत ह भाड़े की गुड़िया जे मार्बल आउर ए.सी के कटघरे मे रख के ओकरा के नोंच-खरोंच सके। कहे के त घर भीतर आदमी से ज्यादे ओकर हिया के उहाँ रखल चौकी-पीढ़ा-संदूक आउर हवा-पानी समझेला। घुटन में जिएवाली ई मध्यवर्ग के औरत ना निगल सकेली, ना उगल सकेली। बाकी जिएली, बाकी के जीवन ई कहत कि ए धरती के सबसे सुखी औरत उहे हई।

◆ ◆ ◆

कुमार मंगलम रणवीर
पटना, बिहार

आज के समय में महिला के स्थिति

- विजया एस कुमार

"गिरिजा कुमार, करऽ दुखवा हमार पार;
ढर-ढर ढरकत बा लोर मोर हो बाबूजी।"

केतना अजीब संजोग जुड़ाइल बा, जहवाँ हर दिन लइकिन के उत्पीड़न के कहानी सुनात बा। फेनु चाहे ऊ भारत देश के नमर एक रईसी वाला शहर हैदराबाद के प्रियंका रेड्डी होखस, उन्नाव के ऊ लइकी आ चाहे काल्ह दम तुरलख आपन मुज़्ज़फरपुर के बिटिया आ ओहिजे आज भोजपुरी के शेक्सपियर कहल जाये वालू भिखारी ठाकुर जी के जन्मदिन ह।

भिखारी ठाकुर जी के जनम सारन जिला के कुतुबपुर दियारा गाँव में, 18 दिसंबर, 1887 ई॰ के दलसिगार ठाकुर आ शिवकली देवी के घरे भइल। खुदे समाज में मानल एगो छोट जाती से आवे के बावजूद भिखारी जी मे जवन बड़का बिचार रहल हा ओकरा आगे सभे लो पानी भरत रहले हा। अइसन ना रहे कि जवन घड़ी भिखारी रहलन हा ओह घड़ी गँवई समाज में कुरीति ना रहल हा, ओह समये त ना जाने कय गो सामाजिक कुरीति से जकड़ल रहे।

भिखारी ठाकुर बिल्कुले अनपढ़ रहलन हा। तब्बो समाज के बुराई सभ के आपन लिखाई मे उठवलन। फेन चाहे ऊ बेटी बेचवा जइसन कुरीति ही काहे न होखे। जब उनकर गीत "बेटी बेचवा या बेटी वियोग "के बेटी कहले -

"रुपिया गिनाई लिहलऽ,पगहा धराई दिहलऽ,
चेरिया से छेरिया बनवलऽ हो बाबू जी।
बुढ़ बर से ना कईलऽ बेटी के ना रखलऽ खेयाल
कइनी हम कवन कसूरवा हो बाबू जी॥"

त सच कहतानी रोपया खाती बेटी बेचे वाला लो के भी छाती फाट जात होखी।

लोकनाटकन के रूप में भिखारी ठाकुर जी सँउसे भोजपुरिया क्षेत्र में जमकल रूढ़िवादी व्यवस्था पे चोट कइले बारन।अब उनके एगो बानगी देखी "विधवा विलाप" में। कइसे एगो छोट लइकी के बियाह हो जाता, एगो बूढ़ मरदाना से आ कुछेक दिन बाद ऊ मरद मर जाता आ लइकी के आपन सँउसे जिनगी बिधवा लेखा काटे पड़ऽता आ अतने ना ऊ विधवा के खुद आपने रिश्तेदार लोगन से शोषित होखे पड़ता, एक जमाना बीत गइल बा, भिखारी जी के ई अलख जगवला में,पर हियरा पे हाथ रखी सोचऽब त आजो इ कुल हो रहऽल बा हमनी के आसपास।

खाली इहे ना ऊ न सिरफ औरतन के पर्दा से बहरी आवे खाती प्रेरित कइले बल्कि खुला आँख से समाजो के देखे के दृष्टि दिहले।अब देख लिही उनकर प्रसिद्ध नाटक "गबरघिचोर" के नायिका के,कइसे जब ओकर मरद परदेश में दूसर औरत साथे रहे लागत बा त ऊ स्वेच्छा से प्रेम करऽ तिया आ ऊ प्रेमसंबंध से जामल के जौन के समाज अनैतिक कहत बा ओकरो मान्यता दियावत बिया त का ई प्रासंगिक नइखे आज के लिव इन आ नवका बनल एकर कानून से?

अतने ना जब बिदेशिया के उनकर नायिका सुंदरी गावतिया
" हाय हाय राजा कैसे कटिये सारी रतिया
जबले गइले राजा सुधियो ना लिहले, लिखिया ना भेजे पतिया
॥ हाय हाय....
हाय दिनवाँ बितेला सैयाँ बटिया जोहत तोर, तारा गिनत रतियाँ
॥ हाय हाय...
जब सुधि आवै सैयाँ तोरी सुरतिया बिहरत मोर छतिया ॥ हाय हाय...
नाथ सरन पिया भइले बेदरदा मनलेना मोर बतिया ॥ हाय हाय...

तब केकर छाती ना फाटत होखी।

बाकी खाली जवान स्त्री के ही वेदना परगट नइखन कइले भिखारी जी। ऊ औरतन के हर ऊ भावना के छूले बारे जवन से ऊ गुजरे ले।उनके "गंगा स्नान" के के भुला सकेला,जवन में उहाँ के एगो वृद्धा के मनोयोग के दरसवले बानी।

"जियला पे कुती कुत्ता कहेला पतोह पुता"।

स्त्री मन के गिरहन के जइसे भिखारी ठाकुर खोललन वेसे आजु के अतना बनल आयोग लो भी न कर सकेला। करीबन 29 गो किताबन में प्रकाशित उनके रचना में प्रमुख्य बिदु बाल विवाह,विधवा विवाह,रोजगार के लिए पलायन, नशा मुक्ति ही रहल। जेकर अरोक्ष परोछ नाता औरतन से ही रहऽल। आज भले ही हम कतनो नीति बना लिही,इंडिया गेट पे मोमबत्ती जरा लिही।लगाई नारा बेटी बचावे के,पर जौन आपन गीत के धार से ओह समय मे ठाकुर कइलन ऊ आज भी समसामयिक बा।

बस बात बा उनके जइसन लोगन के मन मे उतरे के। काहे कि एक एक हमनी जइसन लो से मिलिके ई समाज बनेला आ समाज के अस्मिता बचावे के ब त सबसे पहिले आपने मन के लाज बचावे पड़ी। जइसे कि हजारीबाग बाग में उनके बेटी बेचवा के प्रस्तुति के बाद अगिला दिन हजारन लो सभा कइके अंजुरी में गंगाजल ले प्रतिज्ञा कइले रहऽन। ◆ ◆ ◆

विजया एस कुमार,
हैदराबाद

भुलेटना

-मनोज कुमार वर्मा

छपरा में मंजू दी के डेरा पर बइठल रहनीं। अप्पी छोट रहे। हमरा से कहलस, मामा! एगो कहानी सुनाइए।

हमरा एगो भोजपुरी के लोककथा इयाद पड़ल।कहानी के मुख्य पात्र एगो जाति विशेष के रहलें। हम पुछनीं, ओ जात के कोई नइखे नु?

पड़ोस के एगो लड़िका बइठल रहे । कहलस, ना चाचा! कोई नइखे। तू सुनावS।

हम शुरू हो गइनीं। कहानी खतम हो गइल। जिपू उठ के अपना घरे चल गइल। ओकरा गइला के बाद मंजू दी कहली, मनोज! जिपुआ ओही जात के ह। तहरा बुझाइल ह ना?

हम माथा ठोक लेहनीं। ओकरे मुँह पर हम ओकर जात के मजाक उड़ावत रहनीं हँ। ऊ हँस हँस के सुनत रहे। तबे हम तय कइनीं। आ त ई कहानी नइखे सुनावे के। अगर सुनावे के बा त नाम बदल के सुनावे के बा।

एही उलझन में रहनीं त एगो नाम सुझल - भुलेटना।

भुलेटन ना भुलेटना।

आईं भोजपुरी के लोककथा सुनल जाव जेकर मुख्य पात्र रहे - भुलेटना।

भुलेटना 1- भुलेटना अउर चोर

भुलेटना के अभी पामियो ना जामल रहे आ जाड़ा के कुचकुच करिया रात में मचान पर बइठ के मकई अगोरत रहे। माई कहले रहे, देखत रहिहS, रात में कौनो भँइस आ साँड़ खेत में ना घुसे। ना त सब मकई कचार दिहें सन।

तले मकई सरसराइल।

भुलेटना उठ के बइठ गइल। टॉर्च बरलस त चार जना मुँह पर गमछी बँधले नजर आइल।

भुलेटना काहे के डेराव! डर तब नु लागित जब ऊ बुझित कि ई के लोग ह? पूछ देहलस, के ह? कहाँ जात बाड़S लोग?

चोरवा भड़क गइलन सन। साला! जतरा पर टोक देहलस।

लेकिन उहो चोर रहल सन। एगो तेरह-चौदह साल के लड़िका के कौन औकात! एगो कहलस,चोर हईं सन।चोरी करे जातानीं सन। चलबे?

भुलेटना खुश। कूद के मचान पर से उतरल। हँ, हमूँ चलेम।

चोर ओकरा के ले के गइलन सन चोरी करे। ओ घरी गाँव में माटी के मकान होत रहे। अब अइसन पक्का के ना। एगो माटी के घर के पिछवाड़े सेंध मारल शुरू कइलन सन।

सेंध त मरा गइल पर मुँहे पर माटी के ढेर लाग गइल। भुलेटना से एगो चोर कहलस, जा बाबू! दुआरी पर से एगो छँइटी उठा लियाव। हई माटी एकोराह करे के बा।

भुलेटना दुआरी पर गइल। एगो आदमी घूर के लगे सुतल रहे। भुलेटना ओकरा के जगवलस।

ए भाई! तनी छँइटी देब।

ऊ आदमी भकुआइल उठल। बुझलस गाँव के कोई आदमी ह। पुछलस, एतना रात में छँइटी का होई?

भुलेटना कहलस, तहरा पिछवाड़े सेंध मरले बानीं सन। माटी ढोवे के बा।

भइल हल्ला।...चोर!..चोर!...

गाँव जाग गइल। चोरवा त भाग गइलन सन। धरा गइल भुलेटना। लोग कहल, छोड़ द लोग। ई चोर ना बोंका बुझाता।चोर रहित त कहीं जगा के छँइटी मांगित?

भुलेटना छूट गइल।

दुसरका बेर फेर उहे चोरवा भेंटा गइलन सन। भुलेटना गोड़ छान लिहलस।

अबकी गलती ना होइ। ले चलS लोग।

अबकी साँचहूँ गलती ना कइलस। सेंध मार के सब चोर घर मे घुस गइलन सन। चोर संदूक आ सामान खोजत रहलन सन। भुलेटना चौका में घुस के खाए के समान खोजत रहे।

चौका में एगो बुढ़िया चूल्हा पर खीर खदकत छोड़ के सूत गइल रहे। भुलेटना पतीला में से खीर निकललस।खीर खाए जात रहे त बुढ़िया पर नजर पड़ल। बुढ़िया मुँह बवले सुतल रहे। पुछलस, तूहूँ खइबू?..लS खा।

गरम खीर बुढ़िया के खुलल मुँह में पड़ल त बुढ़िया लागल गलगलाये।

ई पतोहिया! जिअते हमरा के मार देहली सन।

तीनो पतोहिया दौड़ल अइली सन।

का भइल माई जी! का भइल?

माई जी कहली, हमरा मुँह में धिकल खीर डाल के पूछत बाड़ी सन..का भइल?

बड़की कहलस, हम ना माई जी। हम ना।

मझलकी कहलस, हम जे कइले होखी त हमरा बाल बच्चा पर पड़े। छोटकी के त बाल-बच्चा रहे ना। ऊ केकर किरिया खाव।

ऊ कहलस, ई त ऊपरवाला जानता कि केकर काम ह।

जब हल्ला भइल त चोर खटिया के नीचे घुस गइलन सन आ भुलेटना चौका में ऊपर एगो पटरा रहे ओही पर चढ़ गइल रहे। जब छोटकी कहलस कि ऊपरवाला जानता त भुलेटना ऊपर से कहलस, हमीं काहे जानत बानीं? ऊ जे खटिया के नीचे घुसल बा लोग ऊ लोग काहें नइखे जानत?

चारू चोर पकड़ा गइलन सन।

पकड़ाइल त भुलेटना भी। पर लोग छोड़ दिहल।

ई बोंका बा। चोर नइखे।

भुलेटना 2- भुलेटना चलल ससुरारी

चोर लोग के साथ छूटल त भुलेटना पर ससुरारी के भूत सवार भइल। लड़िकाई में बिआह हो गइल रहे।लड़की अपना नइहर में रहे। गौना ना भइल रहे।भुलेटना माई से पुछलस, माई! हमार ससुरारी केने बा?

माई कहली, बाबू! नाक के सोझा चलत चल जइब त तीन कोस पर तहार ससुरारी बा।

भुलेटना अपना नाक के सोझा चल दिहलस।एकदम नाक के सोझा। तनियो एने वोने ना। नाक जाके ताड़ के पेड़ से सट गइल। आँख खोल के देखलस त देखता कि नाक के सोझा ताड़ के लमहर पेड़ खड़ा बा। माई कहले रहे एकदम नाक के सोझा चलत चल जइहे। बस आव देखलस न ताव। झट से ताड़ पर चढ़ गइल। ताड़ के ओह पट्टी से उतरे में ताड के डम्फर पकड़ के हवा में झूल गइल। अब लागल चिल्लाए, ए भाई! बचावS लोग।

गाँव के बहरी ताड़ के पेड़ रहे। आसपास कोई सुनेवाला ना रहे। साँझ हो गइल रहे। एगो महावत आपन हाथी लेके जात रहे। ऊ अपना हाथी पर खड़ा होके भुलेटना के टंगड़ी पकड़लस कि उतार के अपना हाथी पर चढ़ा लेम। तले हथिया आगे बढ़ गइल। अब उहो भुलेटना के टंगड़ी पकड़ के लटक गइल।

ओही रास्ता से ऊँटवाला जात रहे। हथियावाला ओकरा के चिल्ला के कहलस, ए भाई! तनी हमनीं के उतार लS।

ऊँटवाला उतारे चलल त ओकर ऊँट ओहिजी बइठ गइल। अब तीन जना लटक गइल लोग।

तब आइल घोड़ा वाला। ओकरो उहे हाल भइल। घोड़ा भाग गइल।

अब रात हो गइल रहे। चार जना एक दूसरा के टंगड़ी पकड़ के लटकल रहे।

दूर गाँव। सुनसान रात।

भइल कि सभे गाना सुनावे। ना त केकरो नींद आ गइल त हाथ छूट जाई।

पहिले घोड़ेवाला सुनवलस।..चल मेरे घोड़े टिक टिक टिक...दुम हिला के टिक टिक टिक।

ओकरा बाद ऊँटवाला गवलस।...मेरा ऊँट है रेगिस्तान का जहाज...इस पर चढ़े शेख और नवाब...

हाथी वाला गवलस।...मेरे हाथी की चाल निराली..चले झूम के मतवाली...

अब बारी आइल भुलेटना के। ऊ बिरहा शुरू कइलस।..हो रामा.... कह के दुनू कान में उंगली डललस कि सभे लदर-लदर एक दूसरा पर गिरल।सबसे बेसी चोट घोड़ेवाला के, ओहसे कम ऊँटवाला के। सबसे कम हाथीवाला के लागल। भुलेटना त सबके ऊपर गिरल रहे। ओकरा त चोटे ना लागल॥

ई तीनों बाप- बाप चिल्लात रहलन सन। घोड़वावाला कहलस, रे भुलेटना! हई चवन्नी ले। एक कटोरी करुआ तेल ले आव। हमनीं के देह में मालिस कर।हमनीं के हड्डी-हड्डी दुखाता।

चवन्नी ले के भुलेटना दुकान पर गइल। दुकानदार के चवन्नी देके कहलस, हे कटोरी में भर के तेल दS।

दुकानदार तेल से कटोरी भर दिहलस।

भुलेटना कहलस, लावाघुलि ना देबS?

अचकचा के दुकानदार पुछलस,अब कटोरी में जगह कहाँ बा जे लावाघुलि लेबS।

हें! भुलेटना कहलस, पेनिया में जगह नइखे?

कह के कटोरी पलट देहलस।

दुकानदार समझ गइल। साफ बोंका से पाला पड़ल बा। पेनी में तेल भर दिहलस।

पेनी में तेल ले के भुलेटना पहुँचल त घोड़वा वाला पुछलस, रे! तोरा के भर कटोरी तेल ले आवे के कहल रहे त पेनी में तेल लेके चलल आवत बाड़े?

ई त लावाघुलि ह।..कह के भुलेटना कटोरी पलट दिहलस।..तेल त हेने बा।

तीनों माथा ठोक लिहलनसन आ भुलेटना के जम के कुटलन सन।

कुटा-पिटा के भुलेटना घरे आइल। माई से आपन दुखड़ा सुनवलस। माई समझवली, नाक के सोझा के मतलब ई ना नु भइल। जहाँ गाछ-बिरिछ पड़े तहाँ कगरिया के जाइल जाला।

भुलेटना 2- भुलेटना चलल ससुरारी

भुलेटना फेर चलल ससुरारी। अबकी माई कुछ पइसा दिहली, बाबू! रास्ता में भूख लागे त कुछ ख़रीद के खा लिहS।

भुलेटना के भूख लागल त एगो मिठाई के दुकान पर पहुँचल। दुकानदार पुछलस, का चाहीं?

भुलेटना कहलस, कुछू चाहीं।
मिठाई वाला कहलस, लड्डु, पेंड़ा, जलेबी, इमरती, रसगुल्ला, चमचम जौन चाहीं तौन ले लS।
भुलेटना कहलस, माई कहले बिया कुछु खरीद के खा लीहS। हमरा कुछू चाहीं।
बगल में एगो सब्जीवाली बइठ के ओल बेचत रहे। कहलस, बाबू! आवS तहरा के हम कुछु दीं।
भुलेटना से सब पइसा ले के एगो ओल थमा दिहलस।
लS बाबू! इहे कुछु कहाला। खात चल जा।
कच्चे ओल खात भुलेटना चल दिहलस। अभी तनिए सा खइले रहे कि ओल लागल गला काटे।
बेचैनी बढ़ल त रास्ता में एगो नदी पड़ल। ओही नदी में घुस के खूब कुल्ला कइलस। तब जा के गला काटल तनी कम भइल त अपना ससुरारी पहुँचल।
पाहुन के देख के ससुर जी खुश हो गइलें। जल्दी से खटिया पर नया दरी आ चादर बिछावल गइल। पाहुन बइठ गइलें। ससुरजी चिल्ला के कहलें, रे! पाहुन आइल बाड़ें। कुछु खाए के ले आवS सन।
कुछु के नाम सुनते पाहुन खटिया पर खड़ा हो गइलें।
हम कुछू ना खाएम।
काहें ? पाहुन काहें? ससुरजी समुझवलें,अइसन काहें कहतानीं? नइखे भूख त ज़ादे मत खाईं। कुछु खा लीं।
भुलेटना लागल चिल्लाए, हम मर जाएम त मर जाएम मगर कुछु ना खाएम।
ससुरजी चुप लगा गइलें। पाहुन अइसे पोंछ पर खड़ा बाड़ें त कोई कइसे खियाई?
रात में मेहरारू कहली, बाबूजी एतना निहोरा कइनीं हँ। रउआ ना भूख रहल त ना ढेर खइतीं। कुछु खा लेतीं त का हो जाइत?
भुलेटना फेर चिल्लाए लागल।...तूहूँ हमरा के कुछु खाए के कहतारु। एकबेर कुछु खइनीं त गला अभी ले काटता।...
सबेरे के हम खइले बानीं। एतना जोर के भूख लागल बा। कोई खाना नइखे देत। सभे कुछु खाये के कहता।
भूख से बेहाल भुलेटना रोवे लागल।
मेहरारू बुझ गइली। कौना बोंका से पाला पड़ल बा।
खाना ले अइली।
भुलेटना भर पेट खइलस।
दोसरा दिन पाहुन खातिर सास पुआ छनली। पियाज के साथे पुआ देहली खाए के।
पुआ खा के भुलेटना अघा गइल। जिनगी में पहिलका बेर पुआ खइले रहे।
सास से पुछलस, ई का कहाला?
सास बतवली, पियाज पुआ।
अपना घरे लौटत में भुलेटना पियाज पूआ रटत चलल जात रहे। मन में रहे कि घरे पहुँच के माई से इहे बनवा के खाएम। कहीं नाम ना भोर पड़ जाव एहि डरे रटत जात रहे - पियाज पुआ।
रास्ता में उहे नदी फेर पड़ल। नहाए खातिर नदी में उतर गइल। डुबकी लगावते नाम भुला गइल। अब लागल नदी में खोजे। लोग पूछे कि का भुलाइल बा? भुलेटना के नाम इयाद रहे जे बतावे। एतने बोले, एही में भुलाइल बा।
लोग के लागल कि कौनो कीमती सामान भुलाइल बा एहीसे नाम नइखे बतावत। लोग अउर मन से खोजे लागल।...हमरा मिल जाव.. हमरा मिल जाव। जइसे मिल जाइत त घरे ले के भाग जाइत लोग। तले एक जना डकार लेहले। डकार में पियाज के महक रहे।दोसरा जना पुछलें, के एतना पियाज खइले बा?
पियाज सुनते भुलेटना के इयाद पड़ गइल।...मिल गइल..मिल गइल..पियाज पुआ।
लोग माथा ठोक लिहलस। धत् साला! इहे भुलाइल रल।
भुलेटना अपना गाँवे पहुँचल। जे भेंटाव से पूछे, कहाँ गइल रहले ह रे भुलेटना?
भुलेटना आपन ससुरारी के गाँव के नाम बतावे में फिर भुला गइल। घरे पहुँच के माई से कहलस, ते हमरा के उहे बनाव जे हम खा के आइल बानीं।
माई पुछली, का खा के आइल बाड़े?
नाम इयाद रहे जे बतावे। बस एके बात के रट लगवले रहे, हमरा के उहे बनाव।
माई कहली, नाम ना बतइबे त हम कइसे बनाएम?
बस भुलेटना खीस में माई के तड़तड़ा दिहलस।अड़ोसी पड़ोसी माई के बचावल। ओही में से एगो पड़ोसन कहली, कइसन निर्दयी बाड़े? मार के माई के गाल पुआ अइसन फुला देले बाड़े।
पुआ सुनते भुलेटना के इयाद पड़ गइल।
इहे नु कहत रनीं हँ... पुआ पियाज..पुआ पियाज।
पुआ छनाइल। पियाज के साथे भुलेटना पुआ खइलस।

◆ ◆ ◆

मनोज कुमार वर्मा
अयोध्यापुरी, श्रीनगर
सीवान(बिहार)

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

धरती से अम्बर ले गूँजे, आपन माईभाषा
कोटि-कोटि जनमन के हउवे, बस एक्के अभिलाषा
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया।

आरा बगसर भभुआ छपरा, गाजीपुर सीवान से
कुशीनगर गोपालगंज से, आन बान से, शान से
जोश भरल तन मन भोजपुरिया, अइहें ले के आशा
कोटि-कोटि जनमन के हउवे, बस एक्के अभिलाषा
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया।

आपन माँटी आपन थाती, करम धरम तिउहार के
राखे जुगवे पाले पोसे, लोक, लोक बेवहार के
बिहसत मुखड़ा चमकत माथा, देखत भगे निराशा
कोटि-कोटि जनमन के हउवे, बस एक्के अभिलाषा
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया।

मंजिल अब खुद चलि के आई, देखि महा अभियान के
बदरी कवनो कइसे रोकी, चमकत सूरुज चान के
कतना दिन देई केहू अब, ए भाषा के झाँसा
कोटि-कोटि जनमन के हउवे, बस एक्के अभिलाषा
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक-
'सिरिजन'

सूना मन की अँगनाई में

सूना मन की अँगनाई में
रुनझुन पायलिया छमकि गइल,
मंजीर झाँझ सब झमकि गइल।

केकर पदचिह्न लखात हवे
दुअरा अँगना चउबारा में
के चन्दनगंध पसरले बा
ए तन का ठाकुरद्वारा में
घुलि रहल मँहक बा साँसन में
सब कोना-अँतरा गमकि गइल।

सुधि के चिगुदाइल पन्ना पर
के शब्द सुनहरा टाँकत बा
बरिसन से बन्द दरीचा से
के आँखि गड़ा के झाँकत बा
बिरहा की परती धरती पर
के आ के अचके ठमकि गइल?

बिस्तरबंद बन्हाइल राखल
दुअरे पर ठाढ़ सवारी बा
कुछ पूरा कुछो अधूरा बा
जब जाए के तइयारी बा
बरिसन पहिले के पाती ले
ई के अनगैरी धमकि गइल?

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक-
'सिरिजन'

बिखरल इयाद

टुकड़न में इयाद
कुछु एन्ने बा, कुछु ओन्ने बा
पता ना कहाँ- कहाँ बा
एकरा के बटोरलो
आसान नइखे
एह उमर में
घर के केवाड़ी
रूकि-रूकि के
बता रहल बा कि
कइसे ओहि पर चढ़ि के
झुलत रहनीं लइकाईं में
छत पर लागल
उदास पाइप
जवना के नीचे बरखा में
नहाइल करीं
छपक-छपक के
टुकुर-टुकुर ताकेला
दुअरा पर खड़ा अशोक के गाछ
अपना संगे-संगे
हमरो उमर के एहसास करावेला
घारी से गाइ-भँइस के रम्भाइल
भला कइसे केहू भूला सकेला
घारी के भीतर से इयाद के एगो टुकड़ा
जाड़ा में बड़हन कउड़ के इंतजार करेला
जहवाँ दुनियाँ-जहान के बतकही के संगे-संगे
रिश्तो गरमा जाव
गाँव के सब पगडंडी पता ना का हो गइल
पते ना चलल कब
कपार-फोरउवल क के खतम हो गइली सन
रियाइन सती के पकड़ी के गाछ जहाँ स्कूल लागे
त अब नाहिए बा
ऊ फिल्डओ नइखे
जहवाँ गाँव भर के लइका-सेयान
फुटबौल, कबड्डी, चिक्का-ठाड़ी खेलल करे
अब गाँवों से खेल ऊ सब खेल खतम बा
खेल नइखे तऽ
ना सेहत बा ना मेल-मिलाप
नातेदारी- रिश्तेदारी मलिन हो गइल बा
ठंडा गइल बा
घर-दुआर, खेत-खरिहान, खेल-कूद के मैदान
चारू ओर इयाद के टुकड़ा बिखरल बा
बेजुबान, निरबल टुकड़ा
इंतजार में ताक रहल बाड़े सन कि
केहू आइत आ बटोर के
जोड़ दित, जीवन्त क दित
आ बिखरल जिनगी से मुक्ति दित।

◆ ◆ ◆

अशोक मिश्र
कटनी, मध्य प्रदेश

तहरे नाम

सगरे गीत ग़ज़ल कविताई, कथा-कहानी तहरे नाम।
तू कहि दऽ त करि के जाईं, ई जिनगानी तहरे नाम।

चंदा-जोन्हीं, बिजुरी-बादर, घाम-छाँह, बूना-बानीं,
पागल पवन बहे पुरवाई, रात सुहानी तहरे नाम।

मन बहके, तन चहके, लहके आग मदन के हियरा में,
मौसम के देखऽ अँगडाई, चढल जवानी तहरे नाम।

तितली-भँवरा, कली-फूल सब पर बा तहरे नाम लिखल,
तहरे के छू के आई महकी रतरानी तहरे ना म।

मन पारऽ ऊ कोहनाइल, छीना-झपटी, झगरा-झंझट,
कुछ हमहूँ कइनीं लरिकाईं, कुछ शैतानी तहरे नाम।

किस्मत पर हमरा दोकाहें रहल भरोसा बा ईहे,
अपना बखरा माटी आई, सोना-चानीं तहरे नाम।

जिनिगी के जेतना सुख बा ऊ सब तहरे से बा 'संजय',
बाकिर आँख जबे लोराई, आँख के पानी तहरे नाम।

◆ ◆ ◆

साँझ भइल घर जाईं

दूखिया के दुख दुखिये बूझे, दोसर ना बुझि पाई जी।
ऊ का जानीं पीर कि जेकर, फाटल ना बेवाई जी।

बहुते भइल विकास मगर काहेंदो हमरा लागेला,
थरिया से रोटी के दूरी, कहियो ना घटि पाई जी।

दूध-दही के नदी बही, जहिया तहिया देखल जाई,
नहर में पानी कब आई ई त पहिले बतलाईं जी।

चामे के गठरी पर कुक्कुर के पहरा बाटे जहँवाँ,
ओके कहीं सुशासन रउरा, के इहँवाँ पतिआई जी?

नीति-धरम, ईमान, न्याय, सच्चाई के साथे रहि के,
अबले रउरा जीयत बानीं, ईहे भागि मनाईं जी।

'संजय' बहुत भइल बतकूचन, देश-गाँव के हलचल पर,
करीं बेवस्था नून-तेल के, साँझ भइल घर जाईं जी।

◆ ◆ ◆

संजय मिश्र
"संजय"
कार्यकारी संपादक-
सिरिजन
गोपालगंज (बिहार)

चले लागल कइसन

(भोजपुरी गीत)

चले लागल कइसन बेयार
सूखल पिरितिया के डार
डेगे डेगे लउके बबूल
कहवाँ बिलाइल कचनार

अँगना में तुलसी के जल ना ढराइल
तुलसी के नन्हकी पुलुंगिया झुराइल
भींजल बा अनहक अँखिया ईमान के
पुरखन के बतिया हिया से भुलाइल
मनवाँ के भीतरी बा चोर
थथमल बा सभकर विचार

रिस्ता के रहिया में पसरऽ ता काई
भइल जाता लमहर सवारथ के खाई
पइसा विधाता बा सगरे जहान में
पइसा के आगु में बाबू ना माई
अदमी बा केतना नाराज
साँस लिहल भइल दुस्वार

बड़का सहरिया के ऊँचका अटरिया
उँहवे छेकाइल बा उजर अँजोरिया
थाकल ढिबरिया के बतिहर टेमाइल
टाटी के फाँफर से झाँके अन्हरिया
कहिया ई रतिया ओराई
कब होई भोर भिनुसार

जहवाँ के धरती के बेटा कहइनी
ममता के अँचरा के काहे भुलइनी
दउलत कमाए ला गइनी विदेसवा
केतना कमइनी आ काथी गँवइनी
लउट आईं माटी के ओर
माई के सुनके पुकार

◆ ◆ ◆

बन्द करीं....

(भोजपुरी ग़ज़ल)

रिस्ता में बयपार घुसावल बन्द करीं
जिनगी के बाज़ार बनावल बन्द करीं।

झगरा झुगरी बीत गइल, उपटाईं मत
मुरचाइल तलवार पिजावल बन्द करीं।

बिटिहा वाला एतना सब देइए दिहलस
माड़ो के अब बाँस हिलावल बन्द करीं।

नारद बन के भाई के लड़वाईं मत
घरही में घरमार करावल बन्द करीं।

अपने जवना बतिया के समझत नइखीं
अनका के रउआ समझावल बन्द करीं।

मत कवनो झाँसा दीं पार उतारे के
लबराई पतवार चलावल बन्द करीं ।

धन दउलत अँखियन के अँखिए में राखीं
जहवाँ तहवाँ लोर चुआवल बन्द करीं।

◆ ◆ ◆

सुरेश गुप्त
बेतिया,पश्चिम चम्पारण

अभिशाप

तिरिया जनम
विधाता के देन
अभिशाप ना ह।

अभिशाप बना देलस
ई पुरूष प्रधान समाज,
दोषी माई, दादी, सासु आ ननद
कम दोषी ना
जे अपने नारी जाति के
बचपन से आज ले
दोयम दर्जा देलस
वस्त्र, खाना आ पढ़ाई तक में।

बेटा के ललसा में
भ्रूण हत्या,
धरती आ आकाश देखे के पहिले
बेटी के माई के हाथे
घूरा के हवाले कर देल
महापाप ह,
पर दिन राति पूजा में अझुराइल माई
ना बुझेली ओह के पाप
काहे कि कोख उनकर ह,
बाकिर ओह कोख के मलिकार हईं
पतिदेव
जिनका बिटिया ना चाहीं,
बिटिया से कुल ना नू चले।

समय बदलल
सोच ना,
बिटिया कहाँ रहल पाछे
बेटवन से
कवनो माने में
चाहे कवनो क्षेत्र होखे,
बाकिर आजो पीछा नइखे छोड़त
दहेज रूपी दानव
जे दहेज के आगि में
झोंक देता
सुंदर बिटिऊवा के,
फाँस लेता
आपन जाल में
जे गिद्ध रूपी मानव
हर सड़क पर बिछवले बा,
आजो असुरक्षित
बिटिऊवा
महसूस कर लें अपना के
अभिशाप समझले
ओह सुंदर देहिया के
जेकरा के नोंचे खातिर
गिद्धवा मंडराता
चहुँओर
हर शहर, हर गाँव।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची (झारखंड)

जिनगी जब कुछ सिखावेले त खूब बढ़िया से सिखावेले। तब बुझाला कि जवन आज सिखवलस तवन तनी पहिलहीं सिखवले रहित। जदि पहिले सिखवले रहित त आज के वर्तमान अइसन ना रहित। आ तब, इहे पछितावा लेके आदमी जिए लागेला चाहे एही रट के संगे मरि जाला।

बटेशर बाबा के तीन जना लइका रहे लोग। बाबा के देवता में बहुते विश्वास रहत रहे। उहाँ के तीनों जने के नाम रखनीं। बड़कू के शंकर, मझिलू के ईश्वर आ छोटकू के रघुवर। तब बाबा के घरहीं में ना, पट्टिदारियों में तूती बोलत रहे। बिना उहाँ के राय लिहले कवनो काम ना होखे। केहू के बिआह खातिर अगुआ आवस त लेनी-देनी के बात बबे करत रहीं। मने घर के पहिल मलिकार बटेशरे बाबा रहनीं।

धीरे-धीरे लइका लोग सेयान भइल। रोजी-रोटी खातिर परदेश निकलल लोग आ तीनों जने के एकमत के फल बाबा के मिलल। तीनों जना रोपेया कमा के भेजे लोग आ जब तीनों ठहर से पइसा आ जाए त बाबा अंगना में बइठीं सिकहुती में लेके गिने खतिरा। तब अंगना भर के लोग कहे कि बाबा के दसो अंगूरी घीव में बा। बाबा के तूती अब घर पटीदार से बाहर होके जवार में ले बोले लागल रहे आ परिनाम उहे भइल कि बाबा के गुमान होखे लागल। उहाँ के केहू से भीड़ जाईं आ जेकरा से बात बिगड़े ओकरा के कचहरी में देखे के धमकी दीं। तब के कमजोर वर्ग सीधवा होत रहे। लोग कोट-कचहरी से हरकत रहे। बाबा के धमकी से लोग डेराए आ समर्पण क देबे। केहू एह झंझट में पड़े ना चाहे।

बाबा के नाम फइल गइल रहे। बड़कू लइका के बिआह भइल। पटीदारी में लोग के लइकन के दहेज तय करे वाला बटेशर बाबा, अपना लइका के बियाह में मात्र एक रोपेया दहेज लेहनीं। गाँव-जवार में शोर भइल एह बात के। सभे उहाँ के एह निरनय के बड़ाई कइल। बाबा के छाती चाकर हो गइल रहे।

पतोह अइली लेकिन बड़ी उलटमिजाज। हमेशा कलह करस। पटीदारी के अंगना रहे से कवनो बात लुकवावे लायक ना रहे। जवन होखे ऊ सभका सोझा होखे। लोग मजो लेबे।

बटेशर बाबा, जे सभका के धमकावत फिरीं उहें का अपना घर के कलह चुपचाप देखत रहीं जइसे उहाँ का अपना घर के हल्ला गुल्ला सुनइबे ना करे। दिन भर पच्छिम अलंग बइठल रहीं। खाली खाए खातिर अंगना आईं आ खाके निकल जाईं।

एही बीचे मझिलू आ कुछ दिन बाद छोटकुओ के बिआह हो गइल। पहिले घर में अकेला पर कलह रहबे कइल आ अब तीन जनी के अइला से आउर बढ़िआ गइल। मझिलू तनी अलग सुभाव के रहलें। ऊ अपना मेहरारू के साथे लिआके चल गइलें। छोटकुओ ई देख के अपना मेहर के लिआ गइलें। बड़कू घर के लगहीं रहत रहलें आ महीना -डेढ़ महीना पर आवाजाही करस त ऊ ना लिआ के गइलें। बड़को एकर फायदा उठवली। बटेशर बाबा से नीमन से बोले बतिआवे लगली। जवन कहीं तवन बनावसु। खूब सेवा करसु। दिन रात बस बाबूजी के रट लागल रहत रहे। बाबा का बुझाइल कि बचल खुचल जिनगी के किनारा एही नाव से लागी।

बड़को पतोह सेवा से बाबा के मन जीत ले ले रहली। एक दिन मौका देख के कहली कि सड़क किनारे वाला जमीन हमरा नामे क दीं। के रउआ के पूछे आवता? हमहीं नू सब करतानीं। केहू झूठहूँ पूछे आवता रउआ के?

आदमी के थाह से बेसी चोट तब लागेला जब ओकरा के ओकर साँच बात बता दिहल जाए।

बाबा के ई बात लाग गइल। उहाँ के तइयार हो गइनीं आ तीसरे दिने जा के सड़क किनारे वाला जमीन बड़को के नामे क दिहनीं। जमीन पा के बड़को दू तीन महीना तक त ठीक से रहली लेकिन फेर उहे तमाशा शुरू हो गइल। अब ना बाबूजी के टाइम से खाना मिले ना उहाँ के सेवा होखे। बाबा के कपड़ा के चमक फेर से मलीन होखे लागल। बटेशर बाबा फेर पच्छिम अलंग बइठल शुरू क दिहनीं।

एह बीचे एगो दुर्घटना भइल। मझिलू अपना बेमारी से चल बसलें। बाप कतनो कठोर होखे, बेटा के अपना सामने मरल ओकरा सहन ना होखेला। बाबा भोंकार पार के रोअनीं आ अइसन रोअनीं कि खटिया ध लिहनीं। उहाँ के सबसे दुलरूआ आ कमासुत पूत दुनियाँ छोड़ दिहलें। उहाँ के देह से जइसे केहू रीढ़ निकाल ले ले होखे। आकाश का ओर ताक के कहनीं- भगवान हो! तू मरि जा। तहार नाश हो जाए।

काम कजिया क के सब लोग धीरे धीरे अपना काम धाम के फेरा में लवट गइल रहे। एन्ने बाबा के हालत दिन-ब-दिन गिरत जात रहे। छोटकू लगे पटीदारी में के केदार बाबा चिठ्ठी भेजवलें। दस बारे दिन बाद चिठ्ठी चहुँपल। ऊ घरे अइलें आ एन्ने बड़को फट से कह देहली कि हमरा बस के नइखे कि जब्बे जवन कहस तवन बना के दीं। बाबा ई सुन के कहनीं कि हँ हो बाबू, अब कइसे बनइबू? सड़क पर वाली जमीनिया अब तहार जे हो गइल। अब काहें बनइबू तू? रघुवर ई सुन के अवाक रह गइलें। उनका अपना बाप पर बड़ी खीस बरल बाकिर अबकी बटेशर बाबा छोटकू के गोड़ ध लिहनीं। रोवत- रोवत कहनीं कि बबुआ हो, हमार जिनगी अब तहरे हाथ में बा।

छोटकू मेहरारू से कहलें। मेहरारू मारे खीस के कहली कि हम ना रहेब आ ना इनकर सेवा करेब। ई बेइमानी कइले हमनीं संगे। छोटकू समुझवलें कि गाय जदि सोना खा जाई त ओकरा के काट ना नू दिआई? ऊ जवन कइलें तवन कइलें। हमनी के ना छोड़ल जाई। छोटको ढेर ना-नुकुर के बाद तइयार भइली। छोटकू मेहारू के छोड़ के फेर बाहर गइलें आ ओ जा आपन हिसाब क के सारा सामान समेट के गाँवे चलि अइलें।

मझिलू के लइका सेयान रहे लो। ऊ लोग अपना माई के ले के टाटा रहे लागल लोग। उहो अब बेमार रहे लागल रहली। मरद के गइला के हूक उनको के रोज रोज खात रहे। एक लेखां से कहल जाए त ऊ पगला गइल रहली। उनका कुछु के होश ना रहत रहे। दिन बहुत ना बीतल जब उहो आपन परान तेयाग देहली। घर में एक बेर फेर कोहराम मचल। लइका अनाथ हो गइलें सन। छोटकू के केहू वंश ना रहे। ऊ हमेशा से ओहनी के सहारा बनलें। मझिलो के कजिया के दिने उनकर बेटी आ के छोटकू से कहलस, पापा! पापा और मम्मी दोनों मर गए। अब वो कभी नही आएगें? तब ई सुन के अंगना भर के लोग रोअले रहे। बटेशर बाबा फेर आकाश ओरी तकनीं आ चिल्ला के कहनीं, भगवान हो! तू मरि जा। आरे तहार नाश हो जाए हो। आज से तहार पूजा कइल छोड़ देब। तहार नाम कब्बो ना जपेब।

एतना सब के बादो बड़को के तनी ना दया आइल। ऊ हमेशा से अपना के संपन्न बूझत रहली। नतीजा के ओह परिस्थिति में ऊ आपन चुल्हा-चउका अलग क लिहली। बड़कू एकर मौन समर्थन कइलें। ऊ अब बाबूजी से बोलबो ना करस। बटेशर बाबा के धाक अब कम होखे लागल रहे। उहाँ के देह अब कमजोर हो गइल रहे। उहाँ का रोज रोज बस रोअत रहीं। अपना कइला पर रोज पछतात रहीं। केहू पच्छिम अलंग से राह ध के जाए त बोला के कहीं कि का हमरा से जवन पाप भइल बा ओकरा खातिर लोग हमरा के माफ करी?

का हो परमेशर! रघुवर के हमार सेवा करे के चाहीं? का हम एह लायक बानीं? परमेशर भा केहू, एह बात के जवाब ना देबे। सभे बस इहे कहे कि बाबा, जवन रउआ कइनीं तवनो समय के खेला रहे आ अब जवन होता तवनो समय के खेला ह। रउआ त बस ऊ बानर हईं जेकरा गर्दन में रसरी केहू आऊर के बा आ रउआ ओकरा इशारा पर नाच रहल बानीं। बाबा के ई जवाब सुन के संतोष होखे।

रघुवर जी तन मन से सेवा कइलें। नोकरी छोड़ला से पइसा के तंगी भइल लेकिन घबड़इलें ना। हमेशा कहस कि हमरा बा के जे हम बचाईं। बाप जवन कइलें ओ खातिर अब का करीं? उनका के केने फेंक दीं? अब जिनगी असहीं बीती हो राम जी। तुहूँ खुश होखत होखबऽ हमरा दसा पर। तहरो नीक लागत होई?

लोग कहेला कि बटेशर बाबा जब मुअनीं त उहाँ का अपना गलती के रट लागल रहे। उहाँ का बस एकहीं बात कहीं कि जदि हम ई ना कइलें रहतीं। जदि हम बड़को के ना देले रहतीं त हम भीतरे-भीतर जरत ना रहितीं। ए रघुवर, हम तहार दोषी बानी हो। हमरा के सरऽपिहऽ मत हो। ए बबूआ, ईश्वर के लइकन के तू हीं सहारा बाड़ऽ। ओकनीं के कब्बो मत छोड़िहऽ। तहार लइका उहे बाड़न सन आ इहे कहत कहत बटेशर बाबा के बोली लटपटाए लागल रहे। लोग बुझ गइल कि ई परान अब निकलेवाला बा। रघुवर जी मुँह फेर के रोअत रहलें आ बटेशर बाबा अपना पछितावा के आग में जरत जरत एह दुनिया से चलि गइनीं।

◆ ◆ ◆

प्रीतम पाण्डेय सांकृत
छपरा (बिहार)

उलट जाई असलेटर...

उलट जाई असलेटर मत चाँपल करीं
गाड़ी जीनिगी के प्यार से हाँकल करीं।

स्वारथ सागर में मति छलांग लगाईं
गरवा में जान-बूझ मति फँसरी लगाईं
बतिया दोसरो के मानीं सुनीं समझीं
मन से इतिहास के पन्ना से बाँचल करीं।
गाड़ी जीनिगी के प्यार से हाँकल करीं।

केहु के सेनूर हईं केहु के लाठी
बुतरुन के आस हईं चुल्हिया के काठी
करमठ बनाईं तन के छोड़ीं ढिठाई
सुई धागा ले फाटल बा त टाँकल करीं।
गाड़ी जीनिगी के प्यार से हाँकल करीं।

बाँचल बा ना केहु ना अब केहु बाँची
रहि इहँवे सभ ना जाई एको खाँची
लंगी लगावल फँसावल छोड़ि के बंसी
मुख से मिसिरी मलाई नित बाँटल करीं।
गाड़ी जीनिगी के प्यार से हाँकल करीं ।

विमल कुमार
भोजपुर(आरा), बिहार

◆ ◆ ◆

छुतिहर के लच्छन

०१. छुतिहर से अलगे रहीं, कहीं लगा दी पाह।
मन के होला टेंढ़ ऊ, कबहूँ मिले न थाह॥

०२. छुतिहर जल्दी ना हटे, सबदिन ठाने रार।
गलती पर गलती करे, कबो न माने हार॥

०३. छुतिहर संघत जे करी, फँस जाई मजधार।
पाई जब मौका कहीं, कर दी खड़े उघार॥

०४. छुतिहर से जनतंत्र में, सभ्य होत भयभीत।
मत के चक्कर में इहाँ, छुतिहर से हो प्रीत॥

०५. छुतिहर ना समझे कबो, भलमानुस के बात।
दे दी खा ली बेहिचक, कतहूँ मुक्का-लात॥

०६. तंग करे छुतिहर बहुत, होला बहुते राड़।
सुन के ओकर बतकही, काँपे सबके हाड़॥

०७. छुतिहर मुँहफूहर बहुत, केहू ना अझुराय।
देख आमने सामने, सज्जन भाग पराय॥

०८. छुतिहर के पहचान हऽ, गंदा रहन-सुभाव।
उटपटांग कुछुओ कहे, झलके प्रेम अभाव॥

०९. घर के अर्जित मान के, कर दे बंटाधार।
गरजे तरजे खूब ऊ, रचि-रचि स्वांग हजार ।

१०. घर भर के मूड़ी कुँचे, बनि के घर के बोझ।
कबहूँ ना बोले सही, ना बोले ऊ सोझ॥

११. जब देखे झंझट कहीं, दउरल-दउरल जाय,
होला बड़ लतखोर ऊ, जहवें जाय पिटाय॥

१२. माँग करे उत्तम सदा, भोजन आ परिधान।
आई पाई कहाँ से, धरे तनिक ना ध्यान॥

१३. करे काम ना एक पल, खर्च करे झकझोर।
झगरा के शुरुआत के, कवनों ओर न छोर॥

१४. रहे घरे ना एक छन, चक्कर मारे ढेर।
घर में ऊ अइसे रहे, जइसे बब्बर शेर॥

१५. भले निपूते ही रहे, रहे त सुभइत बंस।
हे ईश्वर मत दीं कबो, कवनों घर में कंस॥

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
शांति नगर, बेतिया,
प.चम्पारण, बिहार

बसंती दोहा

फुला गइल बा खेत में, पीयर दग-दग फूल।
राह निहारत दिन ढलल, मुरुझल हिया समूल ॥1

तीसी सरसों खिल उठल, बहल बसंत बयार।
पवनी पाती के पिया, हिया भइल गुलजार ॥2

फगुनी देखि बयार के, हियरा झूमल मोर।
ननदो तहसे का कहीं, अइलें ना चितचोर ॥3

मौसम भइल सुहावना, थिरके चंचल पाँव।
हरियर, पीयर देखि के, सूनर लागे गाँव ॥4

मन अगराइल जात बा, लखि के सुन्नर रूप।
बहत बसंती साँझ के, लागे खूब अनूप ॥5

◆ ◆ ◆

अटरिया मोर कहवाँ बनी

काठ के कोठरिया
नइखे बाँचल काठ के कोठरिया
अटरिया मोर कहवाँ बनीं

फेड खूँट झाड़ जंगल, सगरो कटि गइलें
माटी के मड़इयाँ जाने, कहवा परइले
लागि गइल लोहा के सटरिया
अटरिया मोर कहवाँ बनीं

नाता रिसता हित मित्र सबकुछ भुलइले
नजरी से प्रेम उनका सब झरि गइलें
बन्हले अकेले गठरियाँ
अटरिया मोर कहवाँ बनीं

दुनिया जहान के ना कवनो फिकिरिया
साथे हँसे बोले हरदम हिरिया अउरी जिरिया
नइखे मिलावत नजरिया
अटरिया मोर कहवाँ बानीं

नइखे बाँचल काठ के कोठरिया
अटरिया मोर कहवाँ बनीं

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'
सहायक सम्पादक-सिरिजन
श्रीकरपुर, सिवान

भोजपुरी बोली

बोली से बवाल होत बोली से ठिठोली होत,
बोलिए से पसिजेला दिल इन्सान के।
बोलिये से मारपीट झगरा हो जाला कहीं,
बोलिए से दरशन होत भगवान के।
****

बोली में बहुत बड़हन ताकत होला। नीमन -बाउर के पहिचान बोलिए करावेला। बोली में चार गो दोष होखेला- झूठ बोलल, जरूरत से अधिका बोलल, केहू के निन्दा कइल आ अइसन बोलल कि केहू का दुख लागि जा। जाने -अनजाने ई चारि गो पाप बोली से हो जाला जवना के कारन बोली के रूप कुरूप हो जाला आ जब बोली के रूप कुरूप हो जाला तब एकर असरो खतम हो जाला। एही से ई चारि गो दोष (पाप) से आपन बोली बचा के राखे के चाहीं तब्बे कुछऊ में केहू आगे बढ़ि पावेला। त आईं सभे ए चारि गो पाप से बचा के आ लूर सहूर से सम्हारि के बोली बोलल जा आ भोजपुरी भाषा के अजोर सूरज की किरन जइसन चारू ओर फइलावल जा। एही की साथे सब भोजपुरिया समाज के राम -राम आ परनाम बाटे।

आज -काल्ह लोग भोजपुरी बोले में कतराता, सकुचाता आ लजाता कि भोजपुरी बोलला से हमार शान सौकत आ ओहदा कम हो जाई। एतने ना अपनी बालबच्चा के भी भोजपुरी की जगही अंगरेजी सिखावता कि हमार लइका आगे जा के बड़हन साहब बनी। त अइसन क के भोजपुरी के प्रतिस्ठा ना बढ़आवल जा सकेला। मानव के आगे बढ़ला के इतिहास में सिच्छा ,कर्मठता आ समाज सेवा में भोजपुरी के गौरवसाली इतिहास बा। तिल के ताड़ आ राई के परबत बनावे में भी भोजपुरी के कुछ हद तक हाथ बा, एक्के नकारल नइखे जा सकत।

एक समय के बात कि कवनो सरकारी विभाग में पचीस आदमी के भरती रहे लेकिन भरती होखे खातिर दुइ सौ आदमी आ गइल। भरती करेवाला लोग एगो नियम लगा दिहल कि जे सबसे कम शब्द बोलि के अन्दर आई ओकर भरती सबसे पहिले होई।अब लोग जाए लागल। केहू हिन्दी बोले, केहू अंगरेजी बोले, केहू संस्कृत बोले, केहु उर्दू बोले लेकिन शब्द ढेर हो गइला से केहू के अन्दर जाए के इजाजत ना मिले।
भोजपुरी वाला लोग जा आ कहे कि ढुकीं आ ओकर भरती हो जा। ओइ में पचीस आदमी के भरती खाली भोजपुरी बोलेवाला के भइल।
कहला के मतलब बा कि भोजपुरी भाषा के महिमा बड़हन बा, महान बा। भोजपुरी के परचार -परसार करे खातिर हम सब केहू के भोजपुरी बोलल, पढ़ल, लिखल एकदम जरुरी बा। भोजपुरी बोलला में ही आपन मान सम्मान आ बड़प्पन समझल, बुझल जाउ, एही से भोजपुरी के कल्यान होई ।जय भोजपुरी।

बाबूराम सिंह कवि
ग्राम -खुटहाँ, पोस्ट - विजयीपुर (भरपुरवा) जिला -गोपालगंज (बिहार)

पात्र परिचय

1।	किसुन	नायक
2।	संजय	किसुन के बेटा
3।	संगीता	संजय के माई
4।	राजेस	खलनायक
5।	सरपंच	गाँव के सरपंच
6।	रमेसर	किसुन के संघतिया
7।	गनेस	गाँव के सभ्य अदिमी
8।	परमेसर	गाँव के सभ्य अदिमी
9।	टेसलाल	अँजली के बाबूजी
10।	अंजली	टेसलाल के बेटी
11।	परपंच	गावँ के कुटिल
12।	कमीना	,, ,,
13।	म0 प्रबंधक	बैंक के महा प्रबंधक
14।	दरोगा	दरोगा
15।	जमुना	राजेस के बाबूजी
16।	बिमला	राजेस के मेहरारू
17।	पारबती	राजेस के माई
18।	अन्य	अन्य।

दृश्य पाँच स्थान - किसुन के घर समय - दिन

निरेदस - (किसुन के बार दाढ़ी बढ़ल हइन। संगीता पुरान फटही साड़ी में बाड़ी।)

सरपंच - किसुन भइया .....।

किसुन - कहऽ सरपंच भाई रूक काहे गइलऽ?

सरपंच - तोहरा अइसन इनसान से सवालो पुछत डर लागता भइया आ हिम्मत जुटावे के परऽता।

किसुन - डर आ हमरा से, आ हिम्मतो जुटावे के परऽता तोहरा?

सरपंच - हँ भइया, एह गाँव में तुहीं एगो अदिमी बाड़ऽ कि मुरत के गढ़ के सुरत दे दिहलऽ। एह गाँव के कतना संजय सुधर गइलन। तोहरा अंदर के बारह गो गुन कवनो लइका के बढ़ई के कला में निपुन बना देलस त कवनो लइका के जमीन नापे आ

नक्सा खिचे के गेआन दे दिहलस, कवनो लइका माटी के मुरूतिये बनावे के कला जान गइल त कवनो संगमरमर तरासे के महारत हासिल कर लिहलस। तोहार गुन हम कतना गिनाईं भइया। संतरा जेने से गराइल तेने से रसे रस चुअल। उहो ओइसन रस कि आज पेट के छुधा बुतावे के काम आवता।

किसुन - हमार गुन गिना के हमरा के लजवावताड़ऽ का सरपंच भाई, आकि संजय के दिहल टिस के एहसास करावताड़ऽ?

सरपंच - एह दूनों में एको ना भइया।

किसुन - तब .... ?

सरपंच - हम ई जानल चाहत हईं भइया कि रजेसवा तोहरा जोरे अइसन बड़ घात काहे कइलस?

किसुन - जानल चाहताड़ऽ त सुनऽ। एक हाली ओकरा के हम ई कहले रहीं कि ए संजय इन्हिका से इहो पुछ ल कि गवत गोत के आइल बाड़न कि बापे भाई पर छोड़ के? उहे तकलीफ ओकर करेजा बेध दिहलस। (सरपंच के छोट बेटा स्टील के थरिया में खाना लिहले आवता)

सरपंच - किसुन भइया, जब सही बात अदिमी के सोहाइत त अदिमी कहाँ से कहाँ बढ़ गइल रहीत। हम तोहरा बात से सारा प्रसंग जान गइलीं । बाकि एतना जान ल भइया कि केहू के तकलीफ देके, केहू चएन से ना रह सके। तबाह करऽता त ओकरे के करे द। तूँ ओह तबहिओ में हँस के जीअ।

किसुन - जीअते नू बानी सरपंच भाई, कहाँ हम जातानी ओकरा ओरिओ त ठाड़ रहे।

संरपच - भइया. जवन साग रोटी तोहरा सरपंच भाई के जुरल आँटल तवन तोहरा सेवा में हाजिर बा, हाथ धोअ आ खा, तुहूँ हाथ धोअ आ खा भउजी। तोह लोग के हम हाथ जोरऽतानी, कमी के खेआल जन ले अइहऽ, ना त हमरा अरमान के ठेस पहुँची।

किसुन - खाइब सँ, पेट मांगी त अउरी मंगिओ के खाइब सँ। सरधा के भोजन में अभाव के खेआल तनिको ना लेआइब सँ, हमनी के दूनों प्रानी।

संगीता - अभाव जवन चीझ के बउए तवने रही सरपंच देवर जी।

सरपंच - मन में बेटा के अरमान मत ले अइहऽ भइया। उहे बेटा के अरमान के लेके तोहार तबियत खराब हो गइल रहें, सनसार के बेटा बाप के परवरिस करेलन बाकि ऊ जबाबदेही निभावे से पहिलहीं आपन हाथ खिच लिहलस, कतर गइल, घिनवा दिहलस चरित, आ बदल लिहलस आपन बेवहार। ओइसन घिनाइल हाथ के दरकार अपना मन से हटा द तोहरा सुख

दःुख खातिर हमहीं काफी बानी। ऊ आपन ना ह तोहार।

किसुन - तू सही कहऽताड़ऽ सरपंच भाई, एगो बैसाखी कामे ना आइल त तोहरे बैसाखी के सहारे जीवन पार लगावे के बा। बुढ़ापा में इहे दिन देखे के लिखल रहे हमनी के।

सरपंच - भइया, हम आपन चादर कम कर लिहब, बाकि तोहार कम ना होखे दिहब। एगो बेटा के ठोकरावल बाप के का दरद होला, हमरा सब पता बउए। (राजेस मुसकात आवताड़न)

राजेस - का किसुन चाचा, स्टील के थारी में सोहारी कइसन सोहाता?

किसुन - सोहात त निमने बा बाकि हमरा सोचे के भइल बा।

राजेस - ऊ का चाचा?

किसुन - कि तोहरा गड़ता।

राजेस - सोहारी में चोकर ना चले चाचा एही से पुछलीं ह कि चबावे के त नइखे परत?

संगीता - हमरा अफसोस बा रजेस कि ई बात तूँ अपना घरे आपन माई आ बाबूजी से ना पूछलऽ आ चाचा चाची से पुछे आ गइलऽ, आ जब चबावे ओला नइखे मरत त फिकिरे तूँ काहे मरत बाड़ऽ?

राजेस - चाची, किसुन चाचा झुराइल जाताड़न। सोहारी इन्हिकर देह नइखे धरत। कहीं ठूँठ महुआ में फुली लागेला?

किसुन - लागेला, बंसत आवेला त पतो पता जाला आ फुलिओ लाग जाला।

राजेस - चटकन चलावताड़ऽ आकि थप्पड़ ए चाचा?

किसुन - ना चटकने ना थप्पड़े। किसुन सबका के सहुर देले बाड़न आ दिहें।

राजेस - आपन जामल संजओ के त सहुर दिहले रहऽ चाचा, ऊ कहाँ तोहार बतावल राह पर चललन?

सरपंच - ना चललन त इन्हिकर का लिहलन?

राजेस - केहू के केहू लेला ना, घाव देला ए सरपंच चाचा।

सरपंच - सनसार त ओकरे के थुकऽता। (म0 प्र0 के संगे संजय आ अँजली के प्रवेस, अँजली किसुन आ संगीता के गोड़ लाग के नियरे ठाड़ हो जात बाड़ी। म0 प्र0 के देखके)

राजेस - प्रनाम बड़का साला जी।

म0 प्र0 - के ह राजेस?

राजेस - राजेस .... पाहुन नइखीं चिन्हात हम, का?

म0 प्र0 - तूँ सिर्फ राजेस कहाये जोग पाव बाड़ऽ। राजेस हमरा ना बिस्वास रहे कि तूँ हमार बैंक लुट लिहबऽ। डाका डाल दिहबऽ हमरा बैंक में।

राजेस - (अचरज से) हम तोहार बैंक लुट लिहलीं आ डाका डाल दिहलीं?

म0 प्र0 - बैंक ना लुटलऽ त छोड़लऽ का? हमरा स्टाफ संजय के घर उजार दिहलऽ ई बैंक लुटे से कम थोड़े बउए। घर बिलवावे आ गंदगी फैलावे के होखे त तोहरे अइसन नीच परबिरती के अदिमी से सीखे के चाहीं।

संजय - हमार गलती माफ कर द बाबूजी।

किसुन - (चिहाके) बाबूजी ना ना हम तोहार बाबूजी ना हईं। तोहरा हमरा के चिन्हे में भरम हो गइल बउए। एह दुनिया में केहू हमार बेटा नइखे। ठूँठ बिरिछ बानी, हम। बिना बेटा के बाप बानी हम।

संगीता - ना, ना, केहू हमनी के बेटा नइखे। ठूँठ बिरिछ भर बानी सँ हमनी के। ना ह हमार।

संजय - अइसन जन कहऽ बाबूजी आ तुहूँ जन कह माई।

किसुन - सरपंच भाई, ई हमनी के के हवन?

संगीता - बतावऽ सरपंच देवरजी, हमनी के केहू बेटा बा, बा तोहरा पता?

सरपंच - रहे बाकि अब नइखे भउजी।

संगीता - हँ, हँ, तूँ ठीक कहऽताड़ऽ अब आइल इयाद एक समय में रहे, बाकि अब नइखे, नइखे अब हमनी के केहू बेटा। (नइखे अब हमनी के बेटा के प्रति ध्वनि गंूजऽता)

संजय - सरपंच चाचा, जब हमार बाबूजी हमरा के चोट देताड़न त तुहूँ हमरा के चोट देताड़ऽ?

अदिमी - (प्रवेस) टूटल बैल के हर में नधबऽ कि हेंगा में, ए बबुआ?

सरपंच - तँू ठीक कहऽताड़ऽ हर में जोत के तुरलन अब हेंगा में नाध के मुअवहीं के बाकी बा इनिका।

संजय - हतेआ से पहिले हतेआरा जन ठहरावऽ सरपंच चाचा। हमरा नियन अभागा बेटा के बाप आ महतारी के सौभाग से

जुटे जरए द। (हाथ जोर के गिरगिड़ाताड़न)

सरपंच - त तुहीं कहऽ हम का ठहरायीं तोहरा के?

संजय - सरवन।

सरपंच - छिः, छिः, छिः,तोहरा अइसन नालायक बेटा के, आ सरवन?

संगीता - ए सरपंच देवर जी, कह द ना कि धरती फाट जास आ हमनी के समा जाईं सँ।

सरपंच - हमरा हिरदय में तोह लोग के जगह बा संजय के कवनो असथान नइखे भउजी कि हम भला धरती के फाटे के कहब।

म0 प्र0 - हमहूँ एगो बात कहीं।

सरपंच - कहीं।

म0 प्र0 - नालायक बेटा से ना सबद हटा दिहीं सभे, फिर ई लायक हो जइहें।

सरपंच - ऊ कइसे, परछाहीं के स्वरूप होला। इन्हिकर आपन अस्तित्व का बा? हमनी के बीच में बोले ओला अजनबी अदिमी रउरा के हईं?

म0 प्र0 - रउरा ठीक कहऽतानी परछाहीं अस्तित्वे के होला लेकिन ई आपन बहुमूल्य निधी हेरवा दिहले बाड़न। आ अब हेराइल संपति प्राप्त कइल चाहत बाड़न। जदि रउरा सभे के स्वीकिरती मिल जाई त नालायक बेटा लायक हो जाई। आ इन्हिकर देखा - देखी राह से कुराह भइल अउरिओ बेटा साएद आपन जबाबदेही समझे लागी, राह पर आ जाई। आज के स्वीकिरिती भभिस गढे के ओर संकेत देता। बेटा के नजरि में बाप आ महतारी पूज होइहें त बाप महतारी के नजरि में बेटा सरवन ठहरिहें। हम अजनबी अदिमी इन्हिकर साहेब हईं।

सरपंच - साहेब, जब रउरा इन्हिकर आँख खोल दिहले बानी आ दायित्व के बोध करा दिहले बानी त हमनियो के आँख खुल गइल। दायित्व के बोध हो गइल। बाकि किसुन भइया के दिल दुखाइल बा, पेट जरल बाटे आ बरियार डँहकल बाड़न, ई इजाजत देस तब त .....।

म0 प्र0 - इहाँ के इनसान आदिमी हईं। आत्म ग्लानी जब पएर पर माथा टेक देला त इनसान आदमी के असिरबाद में देरी ना होला। कहीं किसुनजी अँजली पर जब तिक देलीं त संजओ पर तिकब नू ....?

किसुन - गहराइल घाव के दरद ओरात नइखे, साहेब।

संगीता - पीर जर पकड़ लिहले बा, साहेब।

म0 प्र0 - ओह ! हम आज महतारी बाप के पीर में गोता गइल हईं। डँहकल आत्मा के का तकलीफ होला हिरदये ओला जानेला।

अँजली - पीर ओराई। सर, एह निस्तुर के सती हम गोड़ सुहुरा देतानी आ दबा देतानी। (गोड़ दाबे लागऽताड़ी।)

किसुन - धन बानी साहेब, रउरा हमरा बहू अँजली में अइसन महानता डाल दिहले बानी। महान बउए राउर महानता, राउर इनसानियत के काएल बानी, हम। आ महानता में महानता समाये खातिर अब तइयार बाटे।

म0 प्र0 - ले ल संजय हेराइल हीरा के सेवा के हक ले ल। भगवान करस कि सनसार के कवनो बाप आ महतारी के परवरिस अनाथालय में मत होखे। आ बेटा ना हमार के भाव के खेआल मत आवे। (संजय बाबूजी आ माई के पएर दबावे लागऽताड़न)

संजय - हमार हेराइल हक मिल गइल। (कमीना आ राजेस के परवेस)

टेसलाल - (प्रवेस) देख रे दुनिया देख, एह इनसान के महानता के जिनिगी देख। सोच रे दुनिया सोच, भगवान महेस्वरनाथ सनसार के कलेआन खातिर हलाहल पीअले रहन आ एगो ई इनसान बाड़न कि बेटी जाति के उधार खातिर अपंग अंग में अपंग के खेआल ना लेअइलन। आज हम इन्हिका महानता के नमन करत हईं। रोक रे दुनिया , एह इनसान के रोक कि तोरा अइसन बेवहार से ऊब के अइसन बिचार के अउरी इनसान कहीं पहाड़ खोह में मत चल जास। आ एह गाँ व समाज से हरदम खातिर सन्यास मत ले लेस।

कमीना - ना जइहें खोह में काहे कि कमीनो अब कमीना ना रह गइलन।

राजेस - हमहूँ आपन गलती महसुस करऽतानी। आ सभका से छमा चाहऽतानी।

परपंच - हमहूँ आपन गलती के छमा मांगऽतानी।

दरोगा- (प्रवेस) कमीना आ प्रपंच, तू दूनों लोग कान धर के उठ बइठ करऽ, तब तू लोग के गलती के छमा होई। का अँजली तोहार का बिचार बाटे?(गनेस आ रमेसर के प्रवेस)

अँजली - गनेस चाचा कहस।

गनेस - सभे लोक गीत गावत रहे आ ई दूनों सैतान लोक मरजादा के हनन करत रहन सँ, सबसे बेसी इहनिये के सुधारल जरूरी बउए। धरन सँ कान, करन सँ उठ बइठ । करन सँ आपन गलती महसूस। ना त कोल्हू में नाध के हां क दिआई न कि हिल जइबन सँ।

रमेसर - आरे हम त कहत रहीं कि इहनी के ले चलके से सारी रात भूसा कुटवावल जाव। बाकि परसासनो के अदब माने के परऽता। (कमीना आ परपंच कान धर के उठ बइठ करऽताड़न)

म0 प्र0 - हम दूनांे प्रानी के भरोसा देत हईं कि अँजली के हाथ के रोटी त संजय के हा थ के दूध के सौभाग बनल रही, का सरपंच जी?

सरपंच - इहे चहबे करी। (धीरे धीरे परदा गिरता।)

। ईति श्री।

देशभक्ति गीत

आनी बानी शानी मनई, शूर बीर बलिदानी।
तन पर तीन रंग के परचम, ऊजर केसर धानी॥

जननी जिनिकर मातु भारती, पूज्या इष्ट भवानी।
छत्रशाल राणा के बंशज, हर दिल हिन्दुस्तानी।
भूमंडल नभ सात समंदर, गावे कथा जुबानी।
तन पर तीन रंग के परचम, ऊजर केसर धानी॥

रग में खाँटी खून बीर के, कड़ी मोछ खंदानी।
एक बोल जै-जै बंजरगी, लड़े जुद्ध घमसानी।
बाडर पर हहकार मचा दे, कर दे पानी पानी।
तन पर तीन रंग के परचम, ऊजर केसर धानी॥

विश्व शांति के अटल सिपाही, इंसाफी सतवादी।
त्यागी ललना मातृभूमि के, लौहा जस फौलादी।
आन बान प जान से खेले, कर दे निज कुर्बानी।
तन पर तीन रंग के परचम, ऊजर केसर धानी॥

◆ ◆ ◆

मरेन्द्र कुमार सिंह
सहायक सम्पादक-सिरिजन, आरा, बिहार

केकर बाँहि धरीं

जगह-जगह गड़हा लउकत बा, केने डेग धरीं,
कुइयाँ-कुइयाँ जहर घोराइल, अब हम कथी करीं?

कानों-कीच भइल भरि डगरी, बिछिली भइल करारी।
टूटल बइसाखी चऽलीं कइसे, केतना देहि सम्हारीं ?
पनिहारिन बे पानी लवटे, फूटलि सब गगरी॥१ ।

छटपटाति बा सोन चिरैया, जइसे टूटल डैना।
अइसन नोचा-नोची होता, झिनको पाँखि बचेना॥
लरिको खेलि सके ना एसे, चिहुँके घरी-घरी॥२॥

सोने के थारी में जेवना अब न परोसे मेहरी।
भुक्खे मुँह टेम्हआइल लइके, फोरें घर के डेहरी॥
चनन गाछि के चनन पिढ़इया,अब ना केहु धरी॥३॥

जेसे-जेसे नेहि लगवनी, ऊहे भइल पराया।
बालू के भीती अस ढऽहल, सपना के सब पाया॥
केकरे आगे घूंघट खोलीं, केकर बाँहि धरीं? ४

कुइयाँ-कुइयाँ जहर घोराइल, अब हम कथी करीं?

◆ ◆ ◆

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर

वैदेही

जीवन के दुख-दरद हजारन,
सहत रहलि वैदेही।
गिरत-उठत कातिल लहरन पर,
बहत रहलि वैदेही।

साथ रहलि हरपल सुख-दुख में,
पुरुषोत्तम का संगे।
जब उनकर बारी आइल तऽ
अपमानित वैदेही।

दूसर के दुख-दर्द मिटावत
देखल गइल हमेशा,
जब उनकर बारी आइल त
निर्वासित वैदेही।

इहे कोख से सृष्टि-सृजन के
आदत रहल हमेशा
आँख खुले के अगते कोखे
मरत रहलि वैदेही।

दोसर घर में आग लगे जब
आँचर ढाँप बुझावे,
जब अवसरि सुखभोग, अगिन में
परत रहलि वैदेही!

◆ ◆ ◆

गुड़िया शुक्ला

हरपल खुश रहल करीं

दुखियन के दुख में शामिल रह, जिनगी के जियल करीं।
एगो बात कहेली गीता, हरपल खुश रहल करीं॥

एकदिन एहिजे रह जाई सब, जाई ना किछु संगे।
चलीं साथ ले रंग खुशी के, दुखिया के मन रंगे॥
जेकर जस दरकार मदद के, ओइसने टहल करीं।
एगो बात कहेली गीता, हरपल खुश रहल करीं॥

एको अदिमी खुश होखल जब, जिनगी भइल सवारथ।
लेल जनम एही दुनिया में, नष्ट न भइल अकारथ॥
दया-धरम से नइखे बढ़ कुछ, दरियादिल बनल करीं।
एगो बात कहेली गीता, हरपल खुश रहल करीं॥

पुरखा अउर पुरनिया लोगे, सुन्नर बात बतवले।
ओकर जिनिगी सफल मनोरथ, जे ना दीन सतवले॥
इहे सार सरबस शास्त्रन के, अकियाने पढ़ल करीं।
एगो बात कहेली गीता, हरपल खुश रहल करीं॥

◆ ◆ ◆

गीता चौबे "गूँज"
राँची, झारखंड

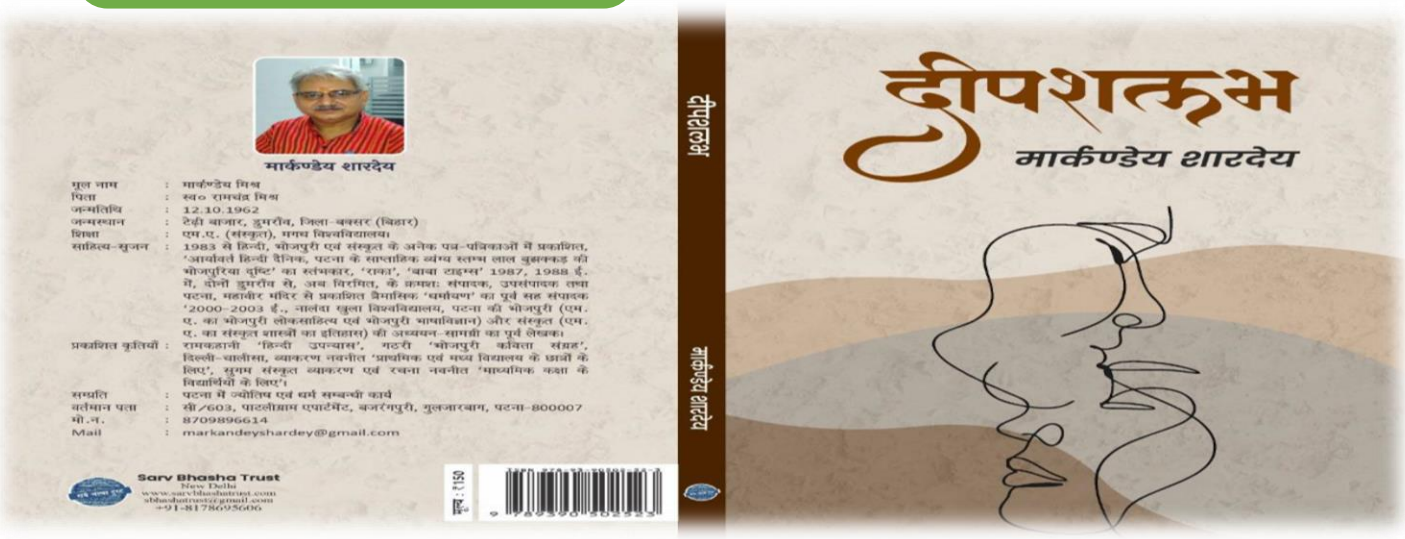

दीपशलभ जारी बा..... पढीं तीसरका सर्ग.....

तीसरका सर्ग

पढ़ावे अइलें श्री सुरनाथ, रोज के तरे नियम-अनुसार।
बिरजलें आसन पऽ स्वीकार प्रणति शिष्या के हृदयाधार॥
उघरलें पुस्तक के ऊ पाठ हृदय के करिके बड़ा कठोर।
काल्ह जे पढ़ा न सकलन आजु पढ़ावे चललें लेके जोर॥

उठे लागल हियरा में ज्वार, बिचारा हो गइलन बेचैन।
करसु का बुझा न कुछो उपाय, खुलल रह गइलें दूनो नैन॥
बोललें, बोली में ले दर्द ,पढ़ऽ पूछऽ जे बा न बुझात'।
पढ़े चलली पाके आदेश ,पढ़े लगली लजात-सकुचात॥

कृष्ण-राधा के प्रणय-प्रसंग कृष्ण के प्रणय-निवेदन गीत।
पढ़त लज्जा से जुगल कपोल भइल तनकी- सा लाल प्रतीत॥
सुनत अइसन मनुहारी गीत महाशय पर होखल आघात।
धीरता के टूटल यमबन्ध भइल बेमार घवाही गात॥

निहारे लगलें पंख पसार नयन मुखड़ा उनुकर अभिराम।
गिरा निकले खातिर छपिटात लिहल चाहत ना रहे विराम॥
तलक कहली कुँवरी सरमात विवेचन कइल जाउ श्रीमान!
'विवेचन' सुनि के हालत अउर , भइल बेकार व्यथा-आधान।

बवाइल मुँह तब होखल बन्द हृदय में फइलल झंझावात।
देसु आखिर कइसे व्याख्यान भइल भीतर-भीतर उत्पात॥
बात आइल दिमाग में एक पढ़ावल अभी न बाटे ठीक।
बखानेलन हरदम सभ लोग गीत गावेली बहुते नीक॥

सुनल चाहत बा आपन चाह गानरस से पूरा हो जाउ।
निकलि के मृदुल कंठ से आजु तनी सरगम हिय के टो जाउ॥
कहीं कइसे प्रसंग से दूर कहल होखी कबहूँ उपयुक्त?
पढ़ावे के बदला में गीत सुनल होई सचमुच हितयुक्त!

बुद्धि जागलि बाकिर अतिशीघ्र नींद के चादर लेलस तान।
अचानक कंठद्वार के पार करत वाणी निकलल मधुमान॥
प्रशंसा सुनले बानी खूब बनल बा जन-जन के आख्यान।
सुनीं; कइसन जादूगर कंठ मिलल बा छेड़ऽ कवनो तान॥

कहत ना रहलीं मन के बात हमेशा उद्वेगे मन मोर।
आजु कहवा लेलस झकझोर सुना दऽ करि दऽ मोदविभोर॥
पिया दऽ इचिका सुधा सुधार्थ कंठ खोलऽ बानी आपन्न।
साध के पूर्ण कर निर्बाध बहा दऽ सरिता रस-सम्पन्न॥

चासनी में चीनी के गोत होठ से चुभुला-चुभुला शब्द।
पियावऽ श्रवण-विवर में स्नाक जेतरे करे सावनी अब्द॥
सुनत आचार्य-प्रवर के वाक्य लाजवन्ती भइली तत्काल।
अधर पऽ नाच गइल मुस्कान उठल जइसे तरंग उत्ताल॥

सद्य काकली कंठ से कथ्य हृदयगत लगली कहे सटीक।
'निहोरा अतना हे श्रीमान! न हमरा लागत बाटे ठीक॥
शिष्टि शिष्या खातिर अनमोल हियऽ गुरु के दीहल ग्रहणीय।
पाप के पंकधि में उसिनात रहीं का ईहे बा करणीय!

बड़ाई के अइसन हम पात्र न बानी तबहूँ कइलीं खूब।
तनी सोची हे अन्तभवान! कबो मखमल अस होखी दूब?

अभी तऽ सीखत बानी सीख कहाँ पवले बानी भरपूर।
तबो आदेश मिलल बा गान सुनावत बानी अभी जरूर॥
काल्ह मँजलें जवना पऽ खूब पूज्यवर श्री संगीताचार्य।
सुनीं ऊ गीत राधिका-कृष्ण विरह सम्बन्धी बा श्रुतिधार्य॥

साँस आलापे खातिर रोक गीत के गति-यति पऽ कर ध्यान।
भाव के भवसागर में लीन करावे लगली मधु रसपान॥

गीत

तनी वंशी बजाइ जइतऽ, तनी वंशी बजाइ जइतऽ।
कान्ह! अँखिया के सोझा आइ, तनी वंशी बजाइ जइतऽ,
तनी वंशी बजाइ जइतऽ।
दरसन खातिर हिया पियासल छछनेला दिन-रात।
बिसरत नइखे प्रेम मधुर रस में लपिटाइल बात।
आइके फिर चटाइ जइतऽ।
तनी वंशी बजाइ जइतऽ।
साँवरि सूरत सम्मोहित कर कर देलस बिसभोर।
कर्म-अकर्म छोड़ि-छाड़िके बढ़लीं तहरे ओर।
आह! मरु के पटाइ जइतऽ।
तनी वंशी बजाइ जइतऽ।
तहरा बिना भयावन लागे जिनिगी के हर राह।
तरसे दूनों आँखि दरस के हरदम लेके चाह।
रास प्रियतम! रचाइ जइतऽ।
तनी वंशी बजाइ जइत'ऽ।

सुनत मर्मघ्न मर्मविद गीत हाय! हो गइलन बड़ घउदाह।
विमोहित सोचे लगलें आज,, अहा! मिल गइल प्यार के राह॥
गूँग कब तक रहि के ई प्रेम शब्द बनि के ना होई व्यक्त!
मनोमोदक कब तक हम खात रहबि रहि के खाली अनुरक्त॥

व्यक्ति आवश्यक बिया तुरन्त रखीं हिगरावल हृदयोद्गार।
कहे के मौका लागल हाथ कहल अच्छा हऽ समय-विचार॥
मोदपूरित होके सुरनाथ बड़ाई गावे लगलें ढेर।
अहा! अतना बढ़िया आजन्म, न सुर सुन सकलीं एको बेर॥
कंठ बा सचमुच गानप्रवीण, बहा देलू रस के नव धार।
हृदय-मन के देलू झकझोर, मिलल जिनगी के बड़ सुखसार॥

रूप बा जवना तरे अमोल, शील, गुण बा ओही अनुरूप।
विधाता के कल्पना-प्रसूत मानवी बाड़ू एक अनूप॥
अलौकिकता के महानिकेत रूप बा गुण बा शील स्वभाव।
हर तरे आकर्षण के ज्योति हो रहल नित-नित आविर्भाव॥

देव-सुन्दरियन के उत्कृष्ट रूप के होला खूब बखान।
किन्तु फीका पड़ि जइहें साँच कहत बानी करि के अनुमान॥
वर्णना शक्ति बिया कमजोर सब तरे बाड़ू तू अनमोल।
के तरे कहीं बात कुछ अउर बुझाते नइखे दिल के खोल'॥

धनपजा उनुकर मन के भाव पढ़े लगली सुनि-सुनि व्याख्यान।
समझ में आइल सपदि रहस्य जे रहे हेतु महान प्रधान॥
कहे लगली, 'हे गुरु भगवान! कहाँ बहकल जाता मनयान?
नियन्त्रण में ले आईं शीघ्र रहे मर्यादा आ सम्मान॥

बात से होता कुल्हि प्रतीत हियऽ ई केकर अइसन नीति।
नरक में सबके दीही डालि बिया ई ओकर कुत्सित रीति॥
विजित करके ओके सुख-शान्ति पा सकेले दुनिया श्रीमान!
विजय के बिना न कवनो कार्य हो सकी मानी ई धीमान!

पतन के ओर बढ़ेला मर्त्य प्रबल होला जेपर षड्वर्ग।
एह से मानल जालें शत्रु एह पर विजय स्वर्ग-अपवर्ग॥
आक्रमण जेपर कर दी काम बुद्धि के होई सत्यानाश।
छोपनी आँखिन में ई बान्हि बना दीही राक्षस-संकास॥

एकरे बाटे ई करतूत गँवइले बानी गुरुवर! ज्ञान।
एक पइसा भर नइखे दोष चढ़ल बा मन पर काम-कमान॥
विधर्मी अतना बड़ा अधर्म करावे के लेले बा ठान।
चित्त के वृत्ति रोकि के शीघ्र पाप से बचीं पाप पहिचान'॥

जगवली उनुका में प्रज्ञान जागि गइलें विवेक संसुप्त।
किन्तु बरियार रहे ऊ शत्रु भइल बस क्षणभर खातिर लुप्त॥
आत्मनिन्दा से उनुकर स्वान्त भर गइल होखल मुख परिक्लान्त।
कंठ भी बाझल शब्दविहीन, अचानक हो गइलें परिश्रान्त॥

जेतरे मेघाच्छन्नाकाश रात के होखेला विकराल।
स्यात् चपला के क्षणिक प्रकाश बता देला सब कुछ तत्काल॥
तेतरे जागल ज्ञान प्रदीप्त पुनः ऊ होखल अन्तर्धान।
पूर्ववत् उनुका में कामान्ध्य विराजल बनि के शक्ति-निधान॥

कहे लगलें, 'तहार सौन्दर्य ,लगवलस हमरा में उद्वेग।
नीति आ धर्म ताख पऽ राख बढ़वले बानी आपन डेग॥
बड़ा बा प्राणप्रिये! इतिहास कहल नइखीं चाहत वृत्तान्त।
सुनऽ कुछ सार तत्त्व दे ध्यान सुनऽ बानी कतना आक्रान्त॥

सुमुखि! हम रूपजाल में बद्ध लुटा देलीं आपन सब धर्म।
आजु कतना दिन से पापिष्ठ भइल बानी बिसारि के कर्म॥
भूल गइलीं गुरुदत्त सुमन्त्र भूल गइलीं गायत्री जाप।
भूल गइलीं दैनिक निज कर्म भूल गइलीं कर्तव्य-प्रताप॥

करीं जब इष्टदेव के ध्यान पधारेला तहरे प्रतिमान।
बिसारल चाहींला हम लाख बिसर ना पावे आभावान'॥
नम्रतापूर्ण मेहरुन्निसा सामने रखली आपन ध्येय।
'पूज्य गुरु होलें पिता समान, शिष्य-शिष्या सन्तति अस नेय॥

भगा दीं दूर मनश्चांचल्य पुत्रिका से न रखीं दुर्भाव।
स्वयं बानी बड़का विद्वान रोक लीं होता गुण-विद्राव॥
समर्पण कर देतीं निज देह हृदय के बाटे किन्तु पुकार।
बदल जाई पवित्र सम्बन्ध निभावल चाहेला संसार॥

धूल-धूसरित बनो गुणपुंज न हमरा से होई ई काज।
उबारबि ना तऽ हे आचार्य! गिराइबि ना रउरा पर गाज॥
रूप पर मत बिलवाईं धैर्य, रूप हटुवे परिवर्तनवान।
विश्व में हमरा से भी चारु, दिखाई पड़िहें रूपनिधान॥

सूर्य के उगते जइसे कृत्स्न तिमिर के होला अन्तर्भाव।
तइसही सुनि गम्भीर सुवाक्य चेत के होखल आविर्भाव'॥
कहे लगलें 'हा! बड़ा अनर्थ भइल मन बाटे बड़ शैतान।
आह! हम कतना बड़का पाप करे के लेले रहनी ठान॥

क्षमा करि दे दऽ ईहे भीख खड़ा बा आगे भिक्षुक नीच।
दया के दान करऽ तू शीघ्र नरक से जइसे लेलू खींच॥
आजु से मुँह न दिखाइबि आजु आगरा से जातानी दूर।
याद कर लीहऽ कभी-कभार कलंकी गुरु के सुनऽ जरूर॥

चले के जसहीं चहलें रोकि प्रार्थना कइली भाव-विभोर।
पढ़ावल मत छोड़ीं जे बात भइल ओही के दीहीं छोड़॥
छोड़ि दऽ धनप-पुत्रिका! आस गँवा देलीं आपन विश्वास।
न क्षमता बिया तनकियो पास करीं इहवें जवना से वास॥

जा रहल बानी दे आशीष ज्ञान के होखे खूब विकास।
योग्य पति के पाके सुख-चैन कर बनि भारतभा के भास'॥
जानि गइली बाड़ें सम्भ्रान्त न रुकिहें निज मुद्रिका निकाल।
थमावत बिनवत कहली मान्य! अंगुली में ई लीहीं डाल॥
पास कुछ अभी न बा उपहार के तरे गुरु-दक्षिणा दियाउ!
ग्रहण एके करिके कृतकृत्य आजु शिष्या के बना दियाउ॥

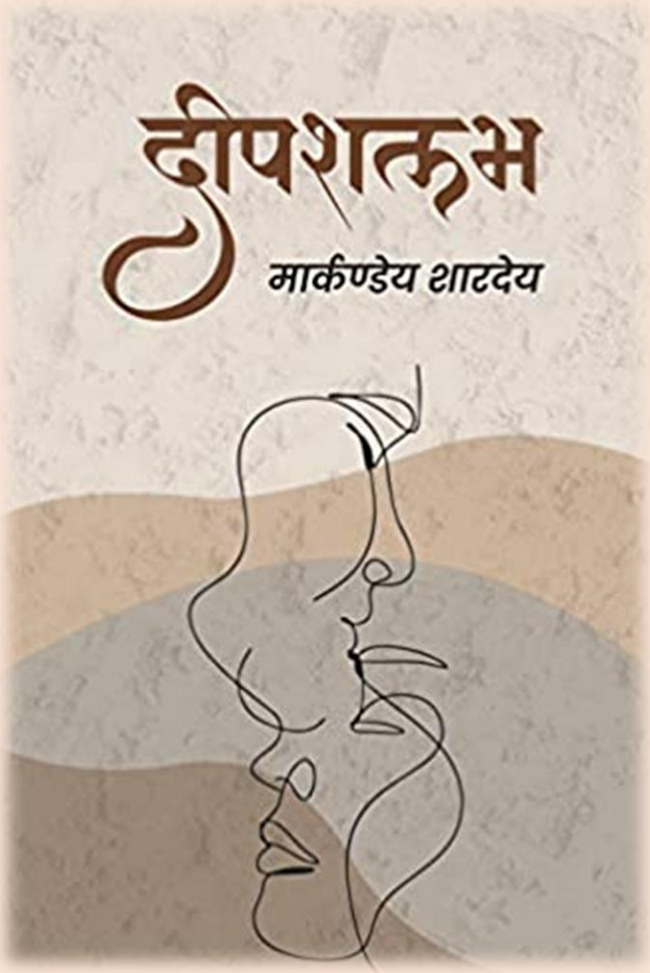

मार्कण्डेय शारदेय

लोर लाजे टघर...

दीप सोझा हवा ठहर जाइत
लाग से आदमी त दर जाइत

एह समझ के अलग कगर गइलीं
बात दिल के रहे हहर जाइत

आस बो के कहल जहर होला
गाँव के लोग तऽ लहर जाइत

लाख बोझा कसल रहे तोभी
जिदगी जीत के पछर जाइत

घाट के हाल जान के विद्या
लोर लाजे टघर चिकर जाइत।

◆ ◆ ◆

जिंदगी भाग से किनल जाले...

जिदगी भाग से किनल जाले
जिदगी बाध से बिनल जाले

प्रेम के दीप बा बनल समहुत
जिदगी राग से चिन्हल जाले

आज के दौर में रहल धोखा
जिदगी दाग से निकल जाले

जाल पर जाल बा परल पहरा
जिदगी घाघ से निकल जाले

तेल में तीक के सफल अर्जुन
जिदगी दाव से किनल जाले।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

भुलात कहाउति/मुहाबरा

अपना भोजपुरी के विशेष समृद्धि ओकरी लचीला स्वभाव से बा जवन कि सब भाषाई शब्दन के अपने रंग में ढारि लेले। एह में लिखल पढ़ल भलहीं अबले सीमित बा बाकिर भोजपुरिया लोग के कोशिश रंग लियावता आ किताब पर किताब हर विधा में लिखा रहलि बा। पहिले भलहीं लोग अनपढ़ रहे बाकिर बोलचाल में तनिको दब ना रहे। तब्बे त केतने-केतने दंँतकथवा, कहानी सुने-गुने के मिलेला।एकरी आम बोलचाल में मुहावरा/लोकोक्ति जवना के लोग किस्सा भा खिस्सा कहेला, सुने के मिले। जवना से बाति फरछियाह, रसगर आ प्रभावी हो जा। एकर प्रयोग बूढ़ पुरनियाँ लोग अजुओ करेला बाकिर आजु के नवकी पीढ़ी ए से अब कोसों दूर बा काहें कि जे सोझ भोजपुरी ना बोल पाई ऊ किस्सा- कहानी का कही? जवने के असर ई बा कि ऊ किस्सा-कहानी हमनी के बीचे से अलोप भइल जाता। अब हमनीं के बड़हन जिम्मेदारी बा कि भरसक कोशिश क के ओ के जोगावल जा, जियवले रहल जा। एही सब के ध्यान में राखत हम ऊ भूलल बिसरल कहाउति/किस्सा अरथ बतावत रउरी सब की सोझे ले आवत बानीं । देखल जा.....

१-अन्हरन में कनवाँ राजा---मुरूखन की बीचे कमो पढ़ल-लिखल हुँसियार गिनाला।

२-अन्हरी पीसे कुकुरा खा--मेहनत केहू करे आ भोग केहू लगावे।

३-आन के कमाई पर तेल बुकुवा---मेहनत दूसर करे आ लाभ दूसर उठावे।

४-उठऽ त कोड़ऽ आ बइठऽ त चिखुरऽ---हर हाल में कुछ करत रहल।

५-ऊठऽ बहुवरि साँस लऽ, ढेंका छोड़ऽ जाँत लऽ---हर हाल में कुछू करते रहल।

६-एक हाथ से थपरी ना बाजेला---कवनो विवाद में एक्के पक्ष दोषी ना होला।

७-ओखरी में मूड़ी डालि के पहरुआ से का डेराए के---जब मुश्किल वाला काम करही के बा त कवनो कठिनाई से कइसन डर?

८-कोर्हिया डेरवावे अन्हरा के, हट ना त थूकि देब---खुद अक्षम दुसरा के अक्षम बतावे।

९--गुन्नी नाचे थुन्ही पर फुहरी बड़ेरी पर---गुनी आदमी आपन गुन अदब से देखावेला बाकिर बिना गुनवाला ढ़ेर देखावा करेला॥

१०-गाछे कटहर ओठे तेल---समय से पहिले फल के आस कइल।

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन
पंचदेवरी, गोपालगंज बिहार

अनिरुद्ध जी के कवितन में बिम्ब-विधान

-निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

पिछली शताब्दी में थॉमस बैबिगटन कहले रहीं कि जइसे-जइसे सभ्यता के विकास होई वइसे-वइसे कविता के पतन होई। एही बात के तसदीक करत आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कहनीं कि जइसे-जइसे सभ्यता के विकास होत जाई कवि-कर्म कठिन होत जाई। सभ्यता के विकास का साथ-साथ विज्ञान आ प्राद्योगिकी उद्धत आ अहंकारी होत चल जाला जेकरा चपेट में मनुष्य में युगबोध के क्षमता के ह्रास होला आ विचार आ संवेदना के बीच के फाँक बढ़त चल जाला। अइसन स्थिति कविता के अनुकूल ना होला आ ऊ कविता के अस्वीकार करेला।

पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध (नया कविता के शुरुआत) आ बालिग हो चुकल एकइसवीं शताब्दी का साहित्यिक परिदृश्य पर नजर डलला से ई बुझाता कि कविता त लिखाता जरूर लेकिन ऊ अपना पारम्परिक सर्जनात्मक पहचान से तेजी से मुक्त हो रहल बा। गद्य आ पद्य के बीच के अंतर लगभग मिट चुकल बा। छंद आ लय के बात खैर छोड़ दीं, कविता में नाद आ ध्वनि के आकर्षण भी नइखे। ओ में प्रकृति आ मनुष्य के छवि आ ओकरा से जुड़ल भाव मिल जाय त सुखद आश्चर्य होला।

अनिरुद्ध का कवितन से गुजरला पर ई खास अनुभव होई कि आदमी कविता के रस से सराबोर हो गइल। चारों ओर फूल फुला गइल आ भक् से दिया बर गइल एकर कारण ई बा कि अनिरुद्ध का कविता में छंद, लय, नाद आ ध्वनि के सौंदर्य, प्रकृति आ मनुष्य के सुंदर छवि आ ओकरा से जुड़ल भाव सब एक साथ देखे के मिल जाई। गाँव का गोदी में पलल-पोसाइल आ धूरा माटी में लोटाइल उनकर देह गाँव का हवा में साँस लेत सेयान भइल रहे। एह वजह से उनकर आधारभूत मानस खाँटी गँवई रहे। उहाँ का गाँव आ ओकर प्रकृति, छवि, मुहावरा, संस्कार आ संस्कृति के अपना कविता में अइसन प्रयोग कइले बानीं कि ओहपर उहाँ के सृजनशीलता के खास पहचान आ गइल बा। एह सन्दर्भ में अनिरुद्ध के कविता का बारे में हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठित प्रोफेसर आ विख्यात आलोचक डॉक्टर नागेश्वर लाल के विचार उद्धत कइल जरूरी लागता:- "बात सन् 1951 की है जब उन्हें आरा के कवि सम्मेलन में देखा था।

अनिरुद्ध जी

वे अपनी 'पनिहारिन' कविता सुना रहे थे। पूरे वातावरण पर एक जादुई सम्मोहन छाया था। यह विशेष अनुभव का विषय था। उस कविता की एक पंक्ति मेरे भीतर रह-रह प्रतिध्वनित होती रही है- 'अँचरा के सब पाल उड़वले भुँइए नाव चलेला'। इसमें दो दृश्यों का समीकरण है और उसके बाद धरती पर नाव चलने की असंभव कल्पना के सहारे एक अपूर्व उन्मेष है। यह अपूर्व उन्मेष ही शायद सृजनशीलता का प्रमुख संकेत माना जा सकता है। यह साधारण बात नहीं कि अनिरुद्ध की कई कविताओं में यह अपूर्व उन्मेष मिलता है।"

डॉक्टर नागेश्वर लाल आगे कहतानीं, "अनिरुद्ध प्रसाद की कविताओं में गुम होती कविता का स्वाद है और इसमें संदेह नहीं कि वर्तमान स्थिति में यह सांत्वनाप्रद है।" उहाँ का आगे कहतानीं "अनिरुद्ध की कविताएँ सहजपन से जातीय संस्कृति के क्रम में सौंदर्य, संवेदना और सार्थकता का प्रीतिकर संप्रेषण करने में समर्थ हैं। इससे एक रास्ता खुलने की आशा होती है, ऐसा रास्ता जिससे सौंदर्य और सार्थकता की एक साथ यात्रा हो सके।"

रामबृक्ष बेनीपुरी, राम विलास शर्मा, हंस कुमार तिवारी, जानकी बल्लभ शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, श्याम नारायण पांडेय आ डॉक्टर हरिवंश राय 'बच्चन' अनिरुद्ध के कविता के प्रशंसा कइले बाड़ें। हमरा ई बुझाता कि एह व्यापक प्रशंसा के कारण अनिरुद्ध का कवितन के बिम्बात्मकता बा।

अगर अनिरुद्ध के कविता में अपूर्व उन्मेष बा, उनका कविता में सौंदर्य, संवेदना आ सार्थकता एक साथ उपस्थित बा आ ओकर ताजगी आज भी बरकरार बा त ओकर मुख्य कारण बा उनका कविता में प्रयुक्त बिम्ब। डॉक्टर नागेश्वर लाल के ई कहनाम कि अपूर्व उन्मेष सर्जनशीलता के

प्रमुख संकेत ह एक तरह से कविता में बिम्ब के प्रयोग का तरफ इशारा कर रहल बा। गहिर कुहा से भरल समय आ परिवेश का बावजूद अनिरुद्ध अपना कविता में जवन बिम्ब-संसार रचलन ऊ रह-रह के इआद आवेला आ एगो आकस्मिक फलश्रुति जइसन चमत्कृत कर जाला। एकरा अलावे उनका कविता में विचार आ बिम्ब के जुगलबंदी भी बा। एह आलेख में अनिरुद्ध के कविता में बिम्ब-विधान पर संक्षेप में विचार कइल गइल बा।

मुख्य विषय पर आवे का पहिले ई जानल जरूरी बा कि बिम्ब ह का आ ओकर काम का ह। 'बिम्ब' अंग्रेजी के 'इमेज' शब्द के हिदी रूपांतर ह। एकर शाब्दिक अर्थ ह छाया, प्रतिछाया, चित्रवृत्त, प्रतिबिम्ब। कविता का सन्दर्भ में 'बिम्ब' के अर्थ होला 'काव्यात्मक बिम्ब'। कविता का सन्दर्भ में बिम्ब आँखे के विषय ना रह जाला बल्कि ऊ कल्पना के विषय भी हो जाला। सी० डी० लीविस के कहनाम बा कि काव्यात्मक बिम्ब एगो संवेदनात्मक चित्र ह जवन एक सीमा तक 'अलंकृत-रूपात्मक, भावात्मक आ अवेगात्मक होला। आचार्य शुक्ल भी कविता में बिम्ब का महत्त्व के स्वीकार कइले बानीं। 'चिन्तामणि' का एगो निबंध में उहाँ के कहनाम बा कि काव्य के काम ह कल्पना में बिम्ब भा मूर्तभावना के उपस्थित कइल। प्रभाकार श्रोत्रिय के कहनाम बा कि बिम्ब कविता के तीसरकी आँख ह, जे गोचरे ना अगोचरो रूप के कारयित्री आ भावयित्री भाषा का खातिर उपलब्ध करावेला। डॉक्टर भगीरथ मिश्र का अनुसार, "बिम्ब ही कविता के अर्थ को पूरी तरह स्पष्ट करता है, भाव को संप्रेषित और उत्तेजित करता है, वस्तु और घटना को प्रत्यक्ष करता है और रूप, सौंदर्य या गुण को हृदयंगम कराता है।" हिदी कविता में बिम्बवादी आन्दोलन के प्रणेता डॉक्टर केदारनाथ सिह के कहनाम बा कि बिम्ब ध्वनि आ संकेत का माध्यम से भाषा के संवेदनशील आ पारदर्शी बनावेला।

बिम्ब आ ओकरा काम के जवन चर्चा ऊपर भइल बा ओकरा से ई साफ हो जाई कि एगो सफल बिम्बात्मक कविता में जे सामने दिखाई देला ओकरा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण ऊ अमूर्त झलक होला जवन रोशनी के कवनो लकीर अइसन क्षण भर खातिर चेतना पटल पर खींचा जाय। एह से ई बात स्पष्ट हो जाई कि श्रेष्ठ कविता के पहचान ओकर बिम्बात्मकता ह।

बिम्बवाद के प्रतिष्ठा पश्चिमी काव्य-शास्त्र में पिछला शताब्दी के शुरुआत में सन् १९१२ में भइल।भारतीय काव्य-शास्त्र में डॉ० नागेंद्र सबसे पहिले बिम्ब शब्द खोज निकललन। उहाँ का 'प्रतीयमान अर्थ-स्फोट' के 'काव्य-बिम्ब' का निकट मननीं। उहाँ का इहो बतवनीं कि कुंतक का 'कवि-व्यापार' में बिम्ब-विधान के अलग-अलग रूप के समावेश बा। कालिदास के उपमा एक लेखा बिम्बे ह। जाहिर बा कि बिम्ब के उल्लेख ना कइला पर भी भारतीय काव्य -शास्त्र आ काव्य-चितन में बिम्ब मौजूद रहे। जहाँ तक नया हिदी कविता के सवाल बा सबसे पहिले तारसप्तक के कवि प्रभाकार माचवे अपना के 'इम्प्रेशनिस्ट' यानी बिम्बवादी घोषित कइलन। तीसरा सप्तक के कवि केदारनाथ सिह के कहनाम रहे, 'कविता में मैं सबसे अधिक ध्यान देता हूँ बिम्ब-विधान पर।' एह तरह, हिदी में नया कविता का दौर में बिम्ब-विधान कविता के एगो

शैली का रूप में उभरल। जनपदीय भाषा के कविता भी एह शैली से अछूता ना रहल। अनिरुद्ध का कवितन में त एह शैली के भरपूर उपयोग भइल बा।

जइसे रूप के कवनो सीमा ना होला, सृजन का भंगिमा के कवनो गणित ना होला, वइसहीं बिम्ब के प्रकार अभी तक तय नइखे हो सकल। ऐन्द्रिय आधार पर, सर्जक कल्पना का आधार पर, प्रेरक अनुभूति का आधार पर, अनुभूति का आधार पर, काव्य-दृष्टि का आधार पर आ मनोवैज्ञानिक आधार पर बिम्ब के वर्गीकरण के चेष्टा भइल बा। काव्य-बिम्ब संवेदना के पारदर्शी ऐन्द्रिय विधान होला। एह वजह से अनिरुद्ध का कविता में बिम्ब-विधान के विश्लेषण मुख्य रूप से ऐन्द्रिय आधार पर विभाजित बिम्ब-चाक्षुष (दृश्य), श्रुत (श्रव्य), गंध्य (घ्रातव्य), स्वाद्य (रस्य) आ स्पर्श (स्पृश्य) बिम्ब का दृष्टि से कइल गइल बा। एकरा अलावे जरूरत का मुताबिक पौराणिक, गत्यात्मक आ स्मृतजन्य बिम्ब के भी चर्चा कइल गइल बा।

सबसे पहिले चाक्षुष बिम्ब के बारे में दू शब्द।चाक्षुष बिम्ब में रूप तत्व प्रधान होला। एकरा के रूप-बिम्ब भी कहल जाला। ई आकृति मूलक होला। प्रो० लीविस एकरा के 'काव्य का चित्रात्मक गुण' बतवले बारन। रिचर्ड्स का अनुसार "काव्य-पाठ की पहली प्रतिक्रियात्मक घटना है मुद्रित बिम्बों की चाक्षुष संवेदनाएं।" कविता में सबसे अधिक उपयोग चाक्षुष बिम्ब के ही भइल बा।

अनिरुद्ध का कवितन में ताजा आ टटका चाक्षुष बिम्ब का उपादेयता के नजरअंदाज नइखे कइल जा सकत। 'गाँव के भोर' कविता में बिम्ब-विधान गजबे बा। रात का घूंघट के उठावे वाला नीला रंग के आसमान का मिलन-पर्व के आनन्द गाँव का भोर में कइसन छलक रहल बा ओकर वर्णन एह पंक्तियन में अद्भुत बिम्ब-विधान का जरिए भइल बा-

रतिया के घुंघटा उघारे असमनवा,
हँसेला मिलनवा में प्यार
लाले रंग पगिया के रंगेली लहरिया
नील रंग चुंदरी के कोर
धरवा किनरवा जे रंगे सातो रंगवा
उतरल पँखिया पे भोर
डोलिया कँहरवा जे रखे पनिघटवा
खोली झाँके खिड़की केंवार॥

भोरे-भोरे जब पुरवा हवा बहेला त नदी का पानी में लहर उठेला। नदी का पानी में लाल रंग के सूरुज आ नीला आसमान दूनु प्रतिबिबित होला। अइसन बुझाला कि पानी के लहर लाल रंग के लहरियादार पगड़ी आ नील रंग के चुंदरी के कोर रंग रहल बा। पगड़ी आ चुंदरी के बिम्ब पुरुष आ प्रकृति के मिलन के सुंदर शास्ति रच रहल बा। नदी के धार नदी का किनार के सात रंग में रंग रहल बा। भौतिक विज्ञान का अनुसार प्रकाश के किरण जब कवनो पारदर्शी माध्यम से गुजरेला त ऊ सात रंग में फइल जाला। भोर के दृश्य का चित्रण खातिर पनघट पर रखल डोली का खिड़की से झाँकत दमकत रूप गजब के बिम्ब बा। भोर में सूरज के लाली लभराइल लागेला। ऐगो दोसर बिम्ब देखीं एकदम अद्भुत-पनवा चबावे जइसे पुरुबी तिरियवा

रस चुए सुअना के ठोढ़
आँख के जब तीर चलेला त सोना बरसेला।

आँख आ नजर खातिर तीर -धनुष के बिम्ब बहुते कलात्मक बा-

तीरवा नजर मारे बरसेला सोनवा
ताने भौं डोरिया कमान
मनवा विहग लाल बनवा पै चढ़ि-उड़ि
घुमि आवे सब संसार॥

'पनिहारिन' अनिरुद्ध के शायद पहिला लेकिन सबसे चर्चित आ उनकर सबसे प्रिय कविता रहे। एह कविता के सबसे बड़ा खूबी एकर गेयता आ बिम्ब बा। सुबह नदी किनारे पनिहारिन के भीड़ जुटेला। घइला में पानी भरके पुरुवा हवा में अँचरा लहरात पनिहारिन के गोल लौटेला। एह दृश्य के कविता के तीसरकी आँख कइसे देखता-

घइला सब उतरल पाँती में सजल रूप के मेला
पुरवैया जे करे मोलाई गतर-गतर टीपेला

दिल दरियाव घड़ा में जीवन, घट में बहता पानी
घइला में नदिया के भर के उमड़ल भरल जवानी
अँचरा के सब पाल उड़वले, भुइँए नाव चलेला

ऊपर का पंक्ति में अद्भुत आ अलौकिक बिम्ब का सहारे धरती पर नाव चलला के असम्भव कल्पना में गजब के उन्मेष बा जे कवि के गजब के सृजनशीलता के संकेत दे रहल बा।

'सँझिया साँवर गोरी' कविता में साँझ का बेरा पल-पल बदलत प्रकृति के रूप के सुंदर आ मनोहर वर्णन बा। एह कविता में एकदम नया बिम्ब के प्रयोग भइल बा-

ताल-ताल नदिया दिन भर फेंके जाल सूरुज

खींचे गुटीआवे अब लाल-लाल डोरी

भोर भइला पर सूरुज के किरिन नदी या पोखरा पर फइल जाला आ साँझ होते होते सूरुज के लाल किरिन सिमटे लागेला। इहाँ कवि सूरुज के कल्पना मछुआरा का रूप में किरिन के जाल का रूप में कइले बारन। मछुआरा सूरुज दिन भर पोखरा आ नदी में अपना किरिन के जाल फेंकत रहेला। अब साँझ का बेरा जाल के डोरी गुटिआ रहल बा।

साँझ का धुँधलका में दूरी के एहसास मिट जाला। साँझ का बेरा पंछियन के झुंड तीर का वेग से पेड़ पर उतरेला। बिम्ब देखीं-

टूटे नभ क्षतिज धनुष डोर गिरे गछियन पै
छूटे उ तीर उतर पंछी अब छितराइल

एगो अउरी बिम्ब देखीं-

बीन पछिम बाजेला समय का सपेरा के
अँइठल एक पैरी नागिन जइसे जागे

---- ------ ------ -------

उसरल खेला बाजार बंद रात पउती में
चलल कान्ह लटका झूमत झाँपी झोरी

समय खातिर सँपेरा, एकपैरिया रास्ता खातिर नागिन आ रात खातिर पउती आ झाँपी के बिम्ब बहुते चित्रात्मक आ यथार्थ बा।

साँझ का वर्णन खातिर एगो अउर बिम्ब के चर्चा जरूरी बा। गदबेर के समय दिन के अंत आ रात के शुरुआत के संगम ह। सूरुज का अस्त होखे का बेरा किरिन हाथ के पंजा लेखा ऊपर फइल जाला। रावण में पंडित आ राक्षस के मेल रहे। रावन के गदबेर से तुलना कतना काव्यत्मक आ यथार्थ बा ऊ ई पंक्ति से मालूम होई-

रावन गदबेर साँझ सुसुकत रथ ले भागे
गिरे राह कंगना पट चुंदरी सिर सरक जाय
आँख के अलोत जोत चलल पार गछियन के
घन रोके रथ कइलल अंगुरी लट लउकि जाय॥

ऊपर जवन बिम्ब के इस्तेमाल भइल बा ओ में रावन का गदबेर से, दिन का खतम भइला के सीता-हरण से आ सूर्यास्त का समय ऊपर फइलल किरिन के जटायू का पंजा से तुलना कइल गइल बा। गोधूलि का समय चाँद भी दिखाई देला, कंगन अइसन। ई चाक्षुष बिम्ब का अलावे स्मृतिजन्य बिम्ब के उत्कृष्ट उदाहरण बा।

कुछ कवितन में आकृति मूलक बिम्ब के अद्भुत प्रयोग बा। 'मधुमास' कविता के बिम्ब देखे लायक बा-

फूलल फरहद सजल सुहागिन,
सजल भाँट बहुरूपिया
लतर-लतर में झुमका झूलत,
ओढ़उल के फुलझबिया
कँटइया के पीयर प्याली,
मातल नयन पलास
चइत राज का अगुआनी में,
कनइल बिगुल बजावे
टपक-टपक मग में मद मातल
महुआ आँख बिछावे
सीसो का टिकुली में झलके
पिया मिलन के आस॥

'मउसम हरदम नया जवान बा' के ई बिम्ब देखीं-

रंगे लाल लहंगा फूल सेमर कर डोला-डोला,
बोला रहल रेशमी रुमाल बा।

कुछ बिम्ब त एकदम नया बा। 'मेघ गीत' के ई बिम्ब द्रष्टव्य बा-

धनके जिनिगिया बगिया, हरी फुलवरिया
जीभवा निकाले हाँफे नदिया-पोखरिया

अनिरुद्ध का बिम्ब-विधान में रंग के संयोजन भी अद्भुत बा आ ए में लाल रंग प्रधान बा। प्रकृति में बिखरल रंग का माध्यम से आदमी के अलग-अलग मन मिजाज आ अवस्था के चित्र प्रस्तुत कइल गइल बा। कुछ बिम्ब देखे लायक बा-

लाल डगरिया, लाल चुनरिया रंगे नगरिया लाल रे
बगिया में चइता रस मातल रंगे नजरिया लाल रे॥
लाल लगाम लहर के घोड़ा, हाँके दूत बेअरिया
धूल लाल नभ उड़े पताका झलके लाल डगरिया
घाट -बाट मधुबन में बाजे किरन बँसुरिया लाल रे॥
पीयर सिसिर बुढापा, बचपन गछियन लाल नेहाइल
हरियर रंग जवानी बिछलत किरन गोल अझुराइल
सेमर लहंगा सजल, पकरिया रंगे अंगुरिया लाल रे॥
(फागुन के गीत)

सरसों फूल वसन्ती पगिया पीत चुनरिया रंग दे रे
नैन गुलाबी चटक प्रेम रंग मीत नजरिया रंग दे रे
धरती धानी बसन फसिल जब पके कनक रंग काया
काँटा-फूल कुसुम रंग चोला, ई माटी के माया॥
(मीत नजरिया रंग दे रे)

कस्मीर धवल मुखड़ा, हिय हार सजल नदिया

....

नभ झील जड़े नीलम दरपन हमार भारत ॥
(हमार भारत)

कागज के ताव उजर खेत धान पाती में
लिखा गइल बात पढ़s जिनगी का पाती में
(बदरवा दउर दउर आवे)

कविता में शब्द जब घ्राणेन्द्रिय का सामने कवनो गन्ध के सहज अनुभूति करा दे त घ्रातव्य भा गंध्य बिम्ब सर्जना होला। अनिरुद्ध का कवितन में गंध्य बिम्ब के प्रयोग भी देखे के मिलेला लेकिन एकर प्रयोग कम भइल बा। कुछ उदाहरण प्रस्तुत बा-

अँखियन में महक रहल बा सनेह चइता के
गाँव-गाँव में रंग रहल बथान बा
(मउसम हरदम नया जवान बा)

रूप महकेला महके उमिरिया
झुनुर-झुनुर नाचे ली भोर
(शरद गीत)

रचना रामायण के पूरा कइल मुनि धार
गावत असलोक छंद गन्ध महकत बा
(बाल्मीकि आश्रम)

'आँख में स्नेह के महक', 'रूप आ उमिर के महकल' आ रामायण में 'असलोक आ छंद' के गन्ध के महक सशक्त बिम्ब बा।

कवनो वस्तु के ध्वनि के अनुभूति कान से ही संभव बा। दोसर कवनो इन्द्रिय ध्वनि के ग्रहण नइखे कर सकत। लेकिन कवि के कारयित्री प्रतिभा शब्दजाल का माध्यम से ध्वनि के बिम्बित करेला। अइसन बिम्ब श्रव्य या ध्वन्यात्मक बिम्ब कहाला।अनिरुद्ध का कविता में कई प्रकार के श्रव्य बिम्ब दिखाई देला। कुछ उदाहरण उनकरे कविता से-

छम-छम बाजे ऊपर बिजुरिया गहना बाजेला
दादुर ढोल ढमके झनके झिगुर सितार
बादर का मानर पर गावे मउसम मल्हार
सोहर-झूमर-कजरी खेत-खेत गावे
बदरवा दउर दउर आवे।
(बदरवा दउर-दउर आवे)

ओस बुँदिया के बान्हे पयलिया
झुनुर-झुनुर नाचेली भोर
(शरद गीत)

माँ-माँ बछरू बोले, में-में पठरु बथान
गूँज गइल गाँव-गाँव मइया के बोली
(सँझिया साँवर गोरी)

दुनिया नाचे मन पहिया के घुँघरू बाजे झुनुन-झुनुन
भइल भोर जागs बैला के घंटी बाजे टुनुन-टुनुन।
(गाड़ीवान गीत)

हर सिखर किरन बिगुल फूँक भारती जगावत
(हमार भारत)

बजे भैरवी किरन बेनु पंछी के बजे सितार
(देस छवि)

अनिरुद्ध के शब्दजाल से निर्मित श्रव्य बिम्ब गाँव के माटी आ मौसम आ देस के छवि वाद्यवृंद खड़ा कर रहल बा। ए में प्रकृति के उज्ज्वल आनन्द छलक रहल बा।

रस्य बिम्ब के काव्य में अभाव पावल जाला।अनिरुद्ध का कविता में रस्य यानी आस्वाद्य बिम्ब के प्रयोग बहुत ही कम बा। ई बिम्ब देखीं-

चइता के राग, भांग पी बेयार झूमत बा
मउसम हरदम नया जवान बा
(मउसम हरदम नया जवान बा)

अदरा खिआई आम खीर भरपेटवा
धरती रंगाई बान्ही धानी हो मुरेठवा
(मेघ गीत)

अनिरुद्ध का कविता में संश्लिष्ट बिम्ब के चर्चा का बिना ई आलेख अधूरा रह जाई। उनका कविता में चाक्षुष आ श्रव्य बिम्ब, चाक्षुष, पौराणिक आ श्रव्य बिम्ब आ गत्यात्मक, गंध्य आ स्पर्शय बिम्ब के अन्तर्गगुम्फन गजब बा। कुछ दृष्टांत नीचे प्रस्तुत बा-

खिल-खिल हँसे जइसे गाँव के गुजरिया
घटवा डगरिया अँजोर
(गाँव के भोर)

एक बेर फेरु जिनगी गाँव चहक रंग जाला
बगिया पँखिया पसार प्रान अब लौट आइल
(सँझिया साँवर गोरी)

गाँव के गुजरिया के खिलखिला के हँसला से घाट आ डगर में अँजोर हो रहल बा। इहाँ हँसी श्रव्य बिम्ब बा आ अँजोर चाक्षुष बिम्ब। चिरइन के चहक से जन्दगी रंगा जाता। इहाँ भी चहक श्रव्य बिम्ब बा रंगाई चाक्षुष बिम्ब। दुनो उदाहरण में श्रव्य बिम्ब चाक्षुष बिम्ब के काम करऽता।

संश्लिष्ट बिम्ब के दू उदाहरण और-

सुनगल व्याकुल पल में धरत
उठल धुआँ आकास तोपाइल

उड़त पताका सारथि मोहन
फूँकत संख गदा टकराइल
उघरल लाज धरा द्रौपदी के
बिजली जड़ल चुनरिया बरसे।
(आषाढ़ के बादल)

पेड़ से चहक उड़ल, फूल से महक उड़ल
सिधु में लहक उठल उठ रहल जुआर बा।
(बढ़ावा गीत)

ऊपर पहिलका छंद में पौराणिक, श्रव्य आ चाक्षुस बिम्ब के मिश्रण बा। गर्मी में घास आ दूब के सूख गइला से धरती नंगा हो जाला। ग्रीष्म रूपी दुशासन द्रौपदी रूपी धरती के चीर-हरण करेला। तब आसमान से चुनरी बरसेला। पौराणिक बिम्ब का माध्यम से आषाढ़ के बड़ा सुंदर चित्रण भइल बा। दोसरका छंद में गंध्य, श्रव्य, स्पर्शय आ गत्यात्मक बिम्ब के मिश्रण बा।

कवि के अभिव्यक्ति में ओकरा व्यक्तित्व के झलक होला। कवि जवन बिम्ब इस्तेमाल करेला ऊ ओकर आचार-विचार, संस्कार आ सिद्धांते के प्रतिबिबित ना करे बल्कि ओकरा मानस के भी प्रस्तुत करेला। जवना परिवेश में कवि के जन्म होला, जवना संस्कार में ओकर पालन-पोषण होला आ जवना समाज में ऊ बड़ होला ओ सब के प्रकटीकरण ओकरा बिम्ब में होला।

अनिरुद्ध का कविता से गुजरला का बाद महसूस होला कि आदमी शब्दन से बनल भाव का अइसन दुनिया में सैर कर रहल बा जवन वास्तविक दुनिया से अलग नइखे। उनका कविता में बिम्ब प्रायः प्रकृति पर आधारित बा, जेकर उद्देश्य बा संवेदना का साथे-साथे विचार के गहराई तक संचार कइल। उनकर बिम्ब आदमी आ प्रकृति के अन्तर्सम्बन्ध के महीन पहचान करावता आ इशारा करता कि उनकर कविता लगातार खतम हो रहल ओ सब चीज के बचा सकऽता जे तेजी से शहरीकरण आ बाजारीकरण के ग्रास भइल जाता। उनकर हर कविता में बिम्ब के तलाश आ ओकर प्रयोग विस्मय कर देवे वाला बा।

अनिरुद्धजी के कविता के पढ़ला का बाद एगो विशेष अनुभव होला। उनकरा कविता से गुजरला का बाद आज के तनावग्रस्त जिनगी के उठाव पटक से अलग हो के अपना माटी के सोन्ह सुगन्ध के ताजगी से मन भर जाला। आखिर में हम अतने निहोरा करब कि रउरा सभे अनिरुद्ध के जरूर पढ़ीं।

◆ ◆ ◆

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव
राँची, झारखंड

गइल कबाड़े आज रेडियो

गइल कबाड़े आज रेडियो,
टेपरिकार्ड अब झोला खाता।
बालपेन के आगे अब ऊ
नीब पेन बा भइल नपाता॥

टेरीकाट ना जूरे सबके,
तब गरीब के सूती खद्दर।
नाँव न जूरे सुबहित सबके,
जूरे तब घुरहू बेलभद्दर॥

अब सूती पइसा वाला के,
पालिस्टर बा बाकी लो के।
मिले अगर केहू पहिरल तब,
सभे देखि के लागे टोके॥

तेल परे ना आजु बार में,
फर-फर-फर उड़ियावे फैशन।
सगरो उल्टा-पुल्टा कइके,
पीढ़ी के मुड़ियावे फैशन॥

मोबाइल में रमल सभे बा,
कहा-सुना ना कथा कहानी।
लइका टीबी में झाँकत बा,
के पूछेला ईया-नानी॥

हऽर बैल ना टाएर लउके,
नाद धराइल बा पिछुवारे।
खटिया बिरले बा लउकत जो,
बइठे वाला कहाँ दुवारे॥

ताल-तलइया सोता कुइयाँ,
पोखरा पोखरी झरही-बाड़ी।
कोड़ि जोति के खेत बनल बा,
भरा गइल बा गड़ही खाँड़ी॥

महुआबारी अमवाबारी,
बँसवारी के नाँव ना आवे।
लाचारी आ नकटा झूमरी,
सोहर कजरी के अब गावे॥

रेस भइल बा सगरो दुनियाँ,
रीति-नीति सबके झुठियावे।
कहे गँवारू बाति पुरनका,
तकनिको सुनते मुँह बिजुकावे॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन
पंचदेवरी, गोपालगंज बिहार

1. एक बेरा के बात ह। बनारसीदास चतुर्वेदी जी रात में बड़ा देर से घरे लवटत रहीं। उनकर केहू दोस्त उनका के अपना घर का छत पर से देख लेलख। ऊ ओहहीं से पूछलस, "कहीं चौबेजी, कहवाँ से आवतानीं?"चतुर्वेदीजी अंगुरी ओठ पर रख के जबाब देनीं, "चुप, चुप, रात में अइसन सवाल कवनो विधुर से ना पूछे के चाहीं।"

2. जब अज्ञेय जी इलाहाबाद में रहत रहीं त सुमित्रानन्दन पंत से रोजे भेंट-मुलाकात होखे। एक दिन पंत जी का साथे एक्के रेक्शा पर बइठ के उहाँ का उनका घरे अइनीं। रेक्शा से उतर के अज्ञेय जी केहू से बतियावे लगनीं आ पंत जी तनी आगे बढ़ गइनीं। अज्ञेय जी जब अपना पर्स में से पइसा निकाल के रेक्शावाला के भाड़ा देवे लगनीं त रेक्शा वाला कहलस, "मैडम जी भाड़ा दे देले बाड़ी।"

3. धतुरी राय रेलगाड़ी से कहीं जात रहस। सामने सीट पर बइठल आदमी से जान-पहचान भइल। ऊ आदमी धतुरी राय से पूछलस, " राय जी,रउरा कै गो बालबच्चा बा?"धतुरी राय जबाब देलें, "अठारह गो।"ऊ आदमी बोललख, " बाप रे हतना?"धतुरी राय कहलें, " हम अपना ससुर जी से वादा कइले रहीं कि हम रउरा बेटी के कब्बो खाली पेट ना रहे देब।"

निरंजन श्रीवास्तव

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

नया साल में

मिलत रहे सबतर, सूर्य देव के प्रकाश,
नया साल में, रहे ना केहू उदास।

अंतर्मन से करीलें कामना, हम सुबहों शाम,
उठत, बइठ,चलत, फिरत, लेनीं उनके नाम।
विश्व कल्याण ख़ातिर, लगवले बानी आस..
नया साल में, रहे ना केहू उदास।

लोगबाग के होत दुर्गति, देखनी हम आँखि,
छाती पीटत लाश जरत, होत मुठ्ठी भर राखि।
बीत गइल भयंकर पल, आवे ऊ ना काश..
नया साल में, रहे ना केहू उदास।

जन, जन में सदभाव बढ़े, इहे बाटे लालसा,
सालों, साल सभे मिलके, करत रहे जलसा।
मनमुटाव ना होखे कबो, करे सभे प्रयास..
नया साल में, रहे ना केहू उदास।

दीपक जग में खुशहाली के, दीप जले हमेशा,
सम्पन्न रहे सब गाँव घर, आवे नाहीं क्लेशा।
खुला आसमाँ में सभे, राहत के लेवे साँस..
नया साल में, रहे ना केहू उदास।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

मौसम जाने का बा बहरी

मौसम जाने का बा एहरी
लागत बा कुछ फरका बदरी
सबकुछ से कइसे बच पाएब
कतना ले फइलाईं छतरी
तहरा के हम का बतलाईं
तू जानत हव बातिन सगरी
उखरल बानीं अपना मन में
हलचल कइसे लउकी बहरी
गदबेरा के रौनक में ही
लागेला कुछ नीमन शहरी

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह
कोलकाता

का कहानी लिखीं

रब के का शैतानी लिखीं
करम फुटल जवानी लिखी!

जेकरे ला ईमान बेचनी
ओकर का कहानी लिखीं!

ना जननी दिलवा के बतिया
का तहार अभिमानी लिखी!

सीधा लोग के ना छोड़ लऽ
का निकलल जुबानी लिखी!

कष्ट पीड़ा दबा के ठेलऽ तू
ई का सफर सुहानी लिखीं!

लइकन नियन हमके टपलऽ
का बुद्धि तहार नादानी लिखीं!

देखनी हमहु सुनर देहिया
पढलको मे अज्ञानी लिखीं!

मिलीके हँसत रही लोगन से
ठोकत साधु जिन्दगानी लिखीं।

◆ ◆ ◆

शैलेंद्र कुमार साधु
मिश्रवलिया, जलालपुर, सारण, बिहार

विचार आवेला

मुक्तिबोध के कविता 'विचार आते हैं' के भोजपुरी उल्थन।
“विचार आवे ला”

विचार आवे ला
लिखे बेरा ना
पीठ पर बोझा ढोवे के बेरा
मुड़ी पर बोझा उठावे के बेरा
मेहनत करे के बेरा
चंदामामा उगेले आ
पानी में झिलमिलाले
हियरा के पानी में

विचार आवे ला
लिखे बेरा ना
पत्थर ढोवे के बेरा
घर के पिछवाड़े साँप मारे के बेरा
बुतरुन सबके बिहिटी फींचे के बेरा

पत्थर पहाड़ बन जाला
नक्शा भूगोल बनजाला
कछुआ पीछ बनजाला
आ समय धरती मैया।

मूल रचनाकार- मुक्तिबोध जी
भोजपुरी अनुवादक- धीप्रज्ञ द्विवेदी

◆ ◆ ◆

धीप्रज्ञ द्विवेदी
बरौली, गोपालगंज

दिहले हाथ उनका हाथ में

दिहले हमार हाथ, उनका हाथ में
रिश्ता बन गइल, हमार उनकर साथ में
अग्नि देव के साक्षी मान फेरा लिहल गइल
माड़ो में रुपया गिना के उनका पापा के दिहल गइल
फिर कोन चूक हमरे पापा से भइल रहल
सोने के चैन, हाथ में अँगूठी भी लइका के दिहल रहल
उनका रिश्तेदार के भी कपड़ा दिआइल रहल
तब जा के भइल हमार बिदाई रहल।
हाथ जोड़ निहोरा पापा करत रहले
गलती होखी त बिटिया के माफ करब
अंजान बा थोड़ा समझा के प्यार करब

बेटी बना के ऊ हमके अपना घर ले गइले
फिर काहे बेटी बना के नाही रख पइले
कुछ दिन ठीक ठाक रहल
घर मे हमार मान-जान रहल
तीज-चौथ में आइल खूब समान रहल
फिर भी उनका सब के लालच रूपी शैतान के
पेट न भरात रहल

दहेज खातिर हमरा के नइहर भेजल जात रहल
न मिलला पर रुपया उ शैतान नशा में
हमरा पर हाथ उठावत रहल
शिकायत हम पापा से कइली, फिर भी न कोनो बात बनल
समझा बुझा के हमरा के भी छुओ करवा गइले
समाज के डर से बिहाइल बेटी के न अपना घर रखले
फिर भी चलत उहे सुसारल में बवाल रहल
बिन पइसा दिहले कहा सम्मान रहल
होत रोजे हाथापाई रहल
कहा होत सुनवाई रहल

हमके फिर से अपने पास बोला लेता पापा
हाथ छोड़ा के नाही जइतऽ पापा
ई समाज के डर ह सिर्फ
ना ई दर्द हमनी के समझी
लगा लेब मौत के गले
त हमके ही सब ठीक समझी
काहे कि एक तलाकशुदा बेटी, एक मरल बेटी से अच्छी रही

◆ ◆ ◆

नेहा त्रिपाठी
दिल्ली

हर समय सुख के सुतार ना मिलेला

हर समय सुख के सुतार ना मिलेला.
सब केहू से दुःख में उबार ना मिलेला.

रही बोली-बचन नींक त मिली सबकुछ,
मउरइला पर सुई भी उधार ना मिलेला.

जोड़ गाँठ के नाहीं निबह पावेला रिश्ता,
जबले सबका मन के बिचार ना मिलेला.

ना चाहि के भी तिसरइत के पड़ेला ज़रूरत,
जब अपने घर में आपन आधार ना मिलेला.

कबो कबो लहि जाला अन्हरा के लाठी,
बिना करम के भाग्य भी बरियार ना मिलेला.

गिर के परबत-पहाड़ से बच जाला आदमी,
नज़र से गिरला पर पोखरा इनार ना मिलेला.

◆ ◆ ◆

नूरैन अंसारी
गोपालगंज बिहार

अटूट बंधन

-अभियंता सौरभ भोजपुरिया

" हँ माई, बोला। हम खाना खा लेले बानी ऑफिस के मेश में । तू बेकार में हमार चिंता जनी करा । हम आपन ख्याल राखत बानी, तू ठीक से रहिहऽ ।"

साइड पर काम देखे के साथे-साथे माई के समझावे के कोशिस में लागल रहीं फोन पर ।

"देखा झूठ मत बोला, कालहुवे सोनी तोर फोटो लेखवले रहे फेसबुक पर । केतना दूबर पातर हो गइल बाड़े तू । एकदम लापरवाह हो गइल बाड़ा तू । अइसन कवन काम बा कि तहरा खाये के भी सुध नइखे । घर से दूर परदेश में अकेले रहत बेटा के बारे में चिंता कइल माईं के स्वभाविक बा । देख अच्छा इहे रही कि सोनी के तू अपना पास बुला ले । ई अब बारहवीं के पेपर दे देले बीया आ रिजल्ट आ जाईं ता उहवे कवनो कॉलेज में नाम लिखवा दिहा । कम से कम ठीक से खाना ता खाये के मिली आ तहार परेशानियों कम हो जाई ।"

हमरा जवना बात से डर लागेला ता एही बात से कि कहीं माई सोनी के हमरा लगे जनि भेज देव । अब माई के के तरे समझाई कि ईगो बहिन के आइला से परेशानी कम ना बल्कि आउर जिम्मेदारी बढ़ जाला । अभी त बेपरवाह कही मौज मस्ती में घुमलऽ कही यार दोस्त के रूम पर रात गुजार लिहलऽ बाकिर जब बहिन आ जाई ता हर पल ओकर चिंता। समय से रूम पर आईल आ अलग रूम ढुँढ़ल । अभी ले ता ऑफिस के तीन लइकन के साथे जिनगी ठीकठाक कट रहल बा । "माई अभी काम ज्यादा बा हम बाद में बात करेम फोन रखी देहनी ।"

हम तीन दोस्त (हम पंकज आ बिटू) आराम से ईगो रूम किराया पर लेके बानी जवना में खाना बनावे खतिर किचन भी बा । रूम में कवनो दिक्कत ना रहे बस परेशानी रहे ता खाना बनवले आ खाइला के । हम तीनों खाना बनावे के मामिला में अनाड़ी रहीं जा । बस रोज दिन मैगी अंडा ब्रेड आ खिचड़ी । रोज-रोज इ सब खा के मन ऊब गइल रहे। कवनो स्थाई निदान के बारे में सोचत रहीं तब ले चार बजे मीटींग के ध्यान आइल आ हम आपन काम पर जुट गइनी ।

थक हार के शाम के रूम पर गइनी । फ्रिज से पानी लेके किचन में गइनी उहवाँ खाली दु गो ब्रेड के टुकड़ा पड़ल रहे । आज फेर एक बेर माई के हाथ के बनावल खायेक याद आ गइल ।

" ए सौरभ भैया रोवत काहे बाड़ा?" - पंकज कहलस।

"ना भाई कुछ ना । अब बहुत हो गइल पंकज खाये-पिये के बहुत दिक्कत होत बा । हम सोचत बानी कि एगो खाना बनाये वाली के रख लिहल जाव ।"

"बाकिर हमनी के खाना बनावे वाली मिली कहाँ से ? इहवाँ रूम ता केहू देत नइखे कुवाँर के। आ ओकरा के पगार भी ता देबे के परी ?"

"दिहल जाई, आखिर कमात काहे खतिर बानी सन ।" - हम कहनी ।

"तूहूँ लोग बात करा लोग आ हमहूँ ढूँढ़त बानी ।"

आगिल दिने हम साइट पर जाये खतिर तैयार होत रहीं । केहू दरवाजा पीटल। पंकज दरवाजा खोललन। सामने लगभग तीस बरिस के एगो महिला गोंद में चार/पाँच बरिस के लइकी लेले खाड़ रहली । कुछ पूछे से पाहिले कहे लगली- " हमरा के चौकीदार भेजले ह। हम खाना बनावे के काम करेनी । आईं-आईं, अंदर आईं।" हमरा लागल कि भगवान मिल गइल बाड़े आज । बात सुरु भइल- " तीन लोग के खाना बनावे के बा, सुबह आ रात के ।"

महिला कहली - "पगार, ना इ से एक पैसा कम, ना ज्यादा । अभी जबाब दीं ता हम काल से आ जाएम, ना ता दोसरा जगह भी बोलावा बा ।"

पंकज आ हम सवालिया ढंग से एक-दुसरा के देखे लागनींजा। पगार तनि ज्यादा रहे बाकिर दोसर कवनो चारा ना रहे । "ठीक बा सौरभ भैया, हाँ कह दीं।" - पंकज कहलन । "ठीक बा काल से आएम ।"

"राउर नाम का ह? महिला के जात समय बिट्टू पुछलस।" "भैया जी गीता" - कहि के ऊ चल गइली ।

आगिल सुबह तय समय पर ऊ नास्ता बना के चल गइली । आज बड़ा दिन के बाद तीनों दोस्त के भर पेट खाना मिलल बा । तीनो के एक साथ माई के याद आ गइल । सब कुछ ठीकठाक चलत रहे । अचानक हमार नोकरी छूठ गइल ।

तीन महीना नोकरी ढूंढ़े में परेशान हो गइल रही । एक दिन शाम के हम रूम पर अइनी आ बेड पर लेट गइनी । गीता पानी लेके आइली बाकिर हमरा के बेहोश देखि के सिर पर हाँथ रखली बदन बोखार से जरत रहे । ऊ ठीक से लेटा के दावा ला के खिया के खाना बनावे लागली । आगिल दिने ऊ दलिया आ खीचड़ी खियावली, अपने हाथ से। आज फेर एक बेर माई के याद आइल बा । "दीदी तहार इ अहसान हम जीवन भर ना भुलाइब ।" "दीदी भी कहत बानी सौरभ भैया, आ अहसान भी एगो बहिन भाई पर अहसान ना करे ले ।" उनकरा देख भाल से हम्म जल्दी ठीक हो गइनी ।

"सौरभ भैया, आज देखीं चल गइनी, ठीक बा, बाकिर रउवा के अब कहीं नइखे जाए के । डॉक्टर रउवा के अभी आराम करे के कहले बा।" - गीता दीदी कहली ।

" दीदी अगर नोकरी ढूंढ़े ना जाएम ता कइसे गुजर होइ । रूम के किराया खाना के पैसा ऊपर से तहार तीन महीना के पगार बाकी बा ।"

"गीता दीदी, तू आपन बेटी के पढ़ावेलू कि ना?" हम पूछनी ? "भैया, पढ़ावेनी बाकिर ऊ बहुत कमजोर बिया पढे में, आ हमरा लगे पैसा नइखे कि टीउसन लगवाई ।" "दीदी, ई गो काम करा तू। हमरा लगे लेले आवा हम पढ़ाएम ।" गीता दीदी हमनी के अलावा तीन चार जगह आउर काम करे ली ।

कुछ दिन बाद एक दिन गीता दी- " हम जहवा काम करी ले, नया-नया ईगो बाबू आइल बाड़े आ उनकर नया कारखाना खुले वाला बा । शायेद राउर नोकरी हो जाव । काल हमरा साथे चलब भैया ।" हम्म गइनी आ हमर नोकरी हो गइल ।

" दीदी पहिला पगार मिलते तहार पइसा चुकता करम ।"

"ना, हम्म पगार ना लेम। ईगो बहिन भाई से पगार कइसे ली ?ओ समय में जब भाई बेमार बा, खुदे लाचार बा। ना-ना।" - गीता दी साफ माना करी देहली ।

"बिटटू, आज काहे लेट भइल हा हो?" पंकज पुछलस । " का कही भाई, इ मोटर साइकिल जब ना तब खराब हो जात बिया आ एकर इलाज सुरेश के लगे बा बाकिर ऊ दू- तीन महीना से गैराज पर अवते नइखन । पूछला पर मालूम चलल हा की उनकर पत्नी मर गइल बाड़ी ता ऊ तनी डिस्टर्ब बाड़े ता काम में मन नइखे लागत ।"

" ओह्..... हे भगवान! .... .सुरेश के हमहूँ जानत बानीं । बड़ा नेक दिल खुश मिजाज इंसान हवे ।"

"कैंसर के चलते उनकर बीबी के देहांत हो गइल आ उनकरा कवनो बाल बच्चा नइखे । सौरभ भैया, मोटर साइकिल बनवा दीं बहुत आभारी रहेम राउर।" पंकज रोवाइन चेहरा बना के कहलस ।

"भैया, हम सोनी बोलत बानी। हमार भेजल राखी मिलल कि ना । तू ता अब कलेक्टर हो गइल बाड़ऽ। तहरा ता छुट्टी मिली ना ... ।" न जाने केतना बात बोल देलस एके साँस में । "ठीक बा मिली ता बता देम ।"

रक्षा बंधन के दिन।

"गीता दीदी, इ सोनी के राखी हा बाँध के जइहऽ ठीक बा?" गीता दी हमारा के राखी बाँध देहली आ ईगो अपनों राखी । बीटू पंकज टीबी देखत रहे लोग ।" भैया हम राखी लेके आइल बानी बंधवालीं।" गीता दी कहली । आज हम तीनों दोस्त के बहिन मिल गइली ।

कुछ दिन बाद।

"गीता दी, तहरा आँख में आँसू काहे?" हम्म पूछनी।

"कुछ ना भैया, बस अइसहीं।"

"ना दीदी बतावा।" बहुत जिद कइला पर बतवली जवना के सुन के हमरो आँख से आँसू आवे लागल । बड़ी मुश्किल से समझा बुझा के उनकरा के चुप करौनी ।

"पंकज, बड़ा दुःख भइल ह हो, गीता दी के बारे में सुन के । दु बरिस से अकेले रहत बाड़ी, पति के गुजरला के बाद। ना ससुराल वाला साथ देता ना मायका । ऊपर से

ई जामाना गन्दा निगाह से देखत बा । हमर अतना पगार नइखे कि उनकर भरन-पोसन करी सकी ।"

"ता ऊ शादी काहे नइखी कर लेत?" बिट्टू कहलस । "के करी विधवा से शादी?"

"भाई!" पंकज बिच में टोकलस । "बाकिर जब हमनी के भाई बनल बानी जा ता एह्न समस्या के हल निकाले के परी ।"

"गीता दी, हम तहरा से कुछ माँगे के चाहत बानी, वादा करा, तू ना ना कहबू।" हम गीता दी से कहनी । "बात का बा सौरभ भैया, साफ-साफ बोली ना।"

"पहिले वादा।"

"ठीक बा, बोली।" - गीता दी कहली ।

"दीदी, तू शादी करबु ? बोला ता हम लइका खोजी आ ईगो भाई के फर्ज निभाईं । हम जानत बानी कि तहार हाँ भा ना कहल बहुत मुश्किल बा । बाकिर दीदी अभी जीवन के बहुत लमहर सफर बाक़ी बा । एगो चोर उचक्का के सुधरे के जब दुबारा मौका मिल जाला ता ईगो औरत के दोबारा शादी करे के काहे ना । एक बेर आपन ई बेटी के बारे में भी सोचा। एकरो सर पर बाप के साया मिल जाईं । एक बेर ई भाई पर विस्वास करा। हम अच्छा ही करम।"

गीता दी गला पकड़ के रौवे लगली । आज ले उनकर रिस्तेदार ना सोचलन ई बारे में। आज मात्र कच्चा धागा के बंधन वाला सोच रहल बा । जवन सास कबो लक्ष्मी बोलवात रही, बेटी के भइला से घर से निकाल देहली । आ जेकरा से कवनो रिस्ता नइखे ! बस एक बेर कलाई पर कच्चा धागा बंधले बानी। ऊ भाई आज जीवन के अतना बड़हन बोझ देत बा कि हम्म सम्हार ना पायेम । "हे भगवान! काहे हमार अतना लमहर परीक्षा लेत बाड़ऽ?"

अगिला शाम।

"सौरभ भैया, हम बात कइले बानी, सुरेश से। उनकरा कवनो एतराज नइखे, ऊ त्यार बाड़े शादी ला ।"

"ता ठीक बा ।गीता दी से हमहूँ बात कर ले ले बानी उहो ना ना कहिहन.. ।"

"भैया, काहे ना सुरेश आ गीता दी दूनों के मिलवा दिहल जाव आ कुछ समय दियाव एक दूसरा के समझे खातिर इ बिट्टू के राय रहे।

"इहो ठीक रही ।"

दू चार बेर के मिलला के बाद दूनो राजी खुशी तैयार हो गइले शादी खातिर।

शादी के खर्च हमनी तीनो दोस्त उठवनी जा । आँचल में से खीर बतासा पीछे फेकत गीता दी विदा हो गइली बाकिर बाँध गइली अटूट बंधन में, कच्चा धागा के ममता में, आपन स्नेह के छाँव में, जवन हर साल आज गीता दी के याद में आँख से मोती बन के गिरे ला ।

"गीता दी, कबो इ बन्धन ना टूटे कबो भाई के साथ ना छूटे।"

अभियन्ता सौरभ कुमार,
सिवान, बिहार

बचल रहिहे

उमेश कुमार राय,
जमुआँव, भोजपुर,
(बिहार)

बचल रहिहे रे भाई,
दुनियाँ में ढेरे झोल बा ।

रोआँ गिरवला से,
मखन लगवला से,
गोल-गोल घुमवला से,
मीठ बतिअवला से,
बचल रहिहे रे भाई ,,,,,

बुरबक के बोली से,
गुण्डन के गोली से,
नंगा हमजोली से,
ठगवन के टोली से,
बचल रहिहे रे भाई ,,,,,

मुँह बिचकवला से,
नजर चुरावला से,
दाँत निपोरवा से,
मुँह फेरवा से,
बचल रहिहे रे भाई ,,,,,

नेतवन के वादा से,
आत्म विश्वास ज्यादा से,
बिगड़ल कायदा से,
नाजायज के फैदा से,
बचल रहिहे रे भाई ,,,,,

देश के गद्दार से ,
रंगल सियार से
बुढापे के प्यार से,
दुश्मन के हथियार से,
बचल रहिहे रे भाई ,,,,,

◆ ◆ ◆

नशा छोड़ि दऽ बलमुआ

नासा छोड़ि दऽ बलमुआ हमरो मानऽ बतिया।
पी के करेलऽ डरामा ना कटेला रतिया॥

बीड़ी - सिगरेट छोड़ऽ छोड़ि दऽ तू गाँजा ।
दारू के बोतल छोड़ऽ सुनऽ हमार राजा ॥
जेतना पियक्कड़ बाड़े छोड़ि दऽ संघतिया ।

पियला से देखऽ तनी देहिया खराब भइल ।
जवने कमइलऽ तू भट्ठी में सब चल गइल॥
बाल-बच्चा रोवत बाड़ें देखि के सुरतिया ।

रूपिया जो बाँची तऽ बाल-बच्चा पढ़िहें ।
घर में बढ़ंती होई केहू नाहीं लड़िहें ।
बिटिया बिआह में जब आई हो बरतिया ।

पी के जब आवेलऽ त लोगवा हँसेला ।
लइकन के मन पर बड़ा असर पड़ेला ॥
नीमन बनिहें लइका प्रतिभा करबऽ पिरितिया।

◆ ◆ ◆

डॉ. प्रतिभा कुमारी
पराशर
हाजीपुर, बिहार

हमरा याद बा

हमरा याद बा
ऊ तहार भेजल
कॉपी के पन्ना,
जवना में लिखले रहलु
आपन दिल के तराना,
ऊ तोहर आँख मिलावल,
आँखिये से बतियावल,
कबो अँखिया चोरा के
हमरा के सतावल,
याद बा ऊ अबही ले
ऊ तोहर पहिलका बात।
रहे महीना सावन के होत रहे बरसात।
मन के बात किताब के पन्ना में झुपावल,
छुपके छुपा के धीरे से राह में गिरावल।
धड़कत दिल के हाथ से दबावल,
मिले खातिर कवनो बहाना बनावल ।
सामने अइला पर ऊ आँख चुरावल
दिल में लाख दर्द के छुपावल ।
होठ पर तीखा मुस्कान के देखावल,
आईना से हसल बोलल बतियावल ।
कबो शरमा के आपन दुपटा के चबावल
कवनो बहाना से साखियाँन में,
हमार नाम के चर्चा करावल,
लड़ झगड़ के हमरा के अच्छा बतावल ।
मिल के दूर भइला पर,
लोर के मोती गिरवाल,
फेर मिले के किरिया धरावल,
गलती भइला पर काकी जस समझावल,
याद बा हमरा
तहरा साथ के सब पल बितावल।

◆ ◆ ◆

अभियन्ता सौरभ भोजपुरिया
सिवान, बिहार

कृष्णा श्रीवास्तव
हाटा, कुशीनगर,
उत्तर प्रदेश

गाँव हमार

गाँव के बाति हमरे निराला हवे।
जहवाँ संगहि में मसजिद-सिवाला हवे।

भात, रोटी आ चटनी में अमरित भरल-
इहवाँ अनमोल हर इक निवाला हवे।

नेह महकल करेला इहाँ ए तरह-
जइसे सिलवट पे पीसल मसाला हवे।

साँच बातिन के गठरी रहेला भरल-
मन मे कउनो ना चोरी घोटाला हवे।

आम, बरगद आ पीपर बा पावन बहुत-
धूर माटी हमन के दुसाला हवे।

डाह बाटे न केहू से कउनो सुनीं-
गाँव व्यवहार के फूल माला हवे।

बाटे 'कृष्णा' ना मन में अन्हरिया इहाँ,
सीख पुरखन के दीहल उजाला हवे।

◆ ◆ ◆

राउर बात

पत्रिका के डिजाईनिग अउरी सम्पादन बहुत बढ़िया बा। जे भी कम्प्यूटर आपरेटर एकर टाइपिग अउर डिजाईन कईले बा, ऊ प्रशंसा के पात्र बा। एगो सुझाव बा : पत्रिका में छपल रचनाकार के मोबाईल नम्बर भी दिहल जाव, त बढ़िया रही। ई पत्रिका त ठीक बा, लेकिन एकरा के छापल भी जाव, एही पर विचार करीं। हमरा लायक कउनो सेवा होई त एक बेर जरूर इयाद करेब। शुभकामना सहित,,, ।

बुद्धु बाबा, लखनऊ

कविता कहानी आ बानी छपाला।
सिरिजन के सर्जन के सगरी बा हाला॥
सोहर आ झूमर से चूये मिठाई।
सिरिजन के पन्ना से बरखे ललाई।
खल खल के नाटक तराना लिखाला।
सिरिजन के सर्जन के सगरी बा हाला॥
छठी के गाना आ सावन के कजरी।
होरी आ चैती में सजनी के चुनरी।
आजादी के गाना आ मुक्तक लिखाला।
सिरिजन के सर्जन के सगरी बा हाला॥
दोहा सवइया अ लवनी अ सरसी।
बाँचि जे मनई ऊ तर पर में हरसी।
भोजपुरी के नाया इबारत रचाला।
सिरिजन के सर्जन के सगरी बा हाला॥

अमरेन्द्र कुमार सिंह, आरा, भोजपुर (बिहार)

हमेशा की तरे शानदार आगाज सिरिजन के चौदहवाँ अंक के ।बहुत बहुत बधाई बा पूरा सिरिजन के सम्पादक गोल के।जे एतना मेहनत क के आज सिरिजन के एह मोकाम तक ले पहुँचावें में सफल भइल्।

माया शर्मा, गोपालगंज,बिहार

सिरिजन के चौदहवाँ अंक, नेक अंक बा, भोजपुरी के उदय के तरफ अग्रसर एगो सुन्नर कदम जवन आज चर्चा में बा, खूब सराहल जा रहल बा.....,,जय भोजपुरी जय भोजपुरिया...,,।

पदम् सागर पदम्

सिरिजन के हर अंक देखावे पढ़ावे सहेजे लायक रहेला, भोजपुरी साहित्य के गरिमा इज्जत अफजाई में इ पत्रिका आपन नाव जरूर लिखवाई। अइसन सुघर साफ़ सुथरा अंक के श्रृंखला के परोसे खातिर पूरा सिरिजन टीम बधाई के पात्र बा, बिशेष बधाई अपना नियत समय पर पत्रिका के प्रकाशन खाति। सुरुवाती दौर से ही हम नियमित पाठक बानी सिरिजन के। हमरा त मन नइखे परत की कबो एकर प्रकाशन में देर भइल बा।

बिजय बहादुर त्रिपाठी, जयपुर, राजस्थान

भोजपुरी खातिर एक अस्त्र के काम करी ई पत्रिका सिरिजन, अइसन पत्रिका के प्रकाशन खातिर साधुवाद।

शिवनंदन जयसवाल, नेपाल

सरसरिये देखलीं ।बहुते नीमन-नीमन सामान सहेजाइल बा।का का गिनाईं! दमगर-दमगर।सहेजे लायक अंक बा।रउरा सभ भोजपुरी के उत्थान में मनोयोग से लागल बानी।साहित्य के संवर्धन के राह 'सिरिजन' असही सिरिजत रहो।

मार्कण्डेय शारदेय, पटना, बिहार

सिरिजन के बारहंवा अंक के बाद त रंगे रूप बदल गइल बा। भीतरी पढ़े लायक आ संग्रह करे लायक बहुते कविता बा लेख बा कहानी बा। भोजपुरिया बघार के जरत सवाल बा टूटत गांव के बेदना बा संगहि आपन साहित्य संस्कार संस्कृति के जोगावे के चिंता भी। श्रम करे वालन के भाषा ह खेती किसानी के भाषा के रूप में पहिचान बा आपन भोजपुरी के। खेती किसानी गांव से नाता टूटल त भाषा से भी दुराव होखत जाता बर्तमान भोजपुरिया समाज। रवुरा सभे बधाई के पात्र बानी जे आपन बोली आपन भाषा के गरिमा में चार चाँद लगावे के भगीरथ प्रयास में लागल बानी।

शांति भूषण उपाध्याय, जैसलमेर राजस्थान

सिरिजन के चौदहवाँ अंक के कवर आपन महातम बता देता कि हम संचय होखे वाला अंक हईं ।

मंजुश्री

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे । ◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

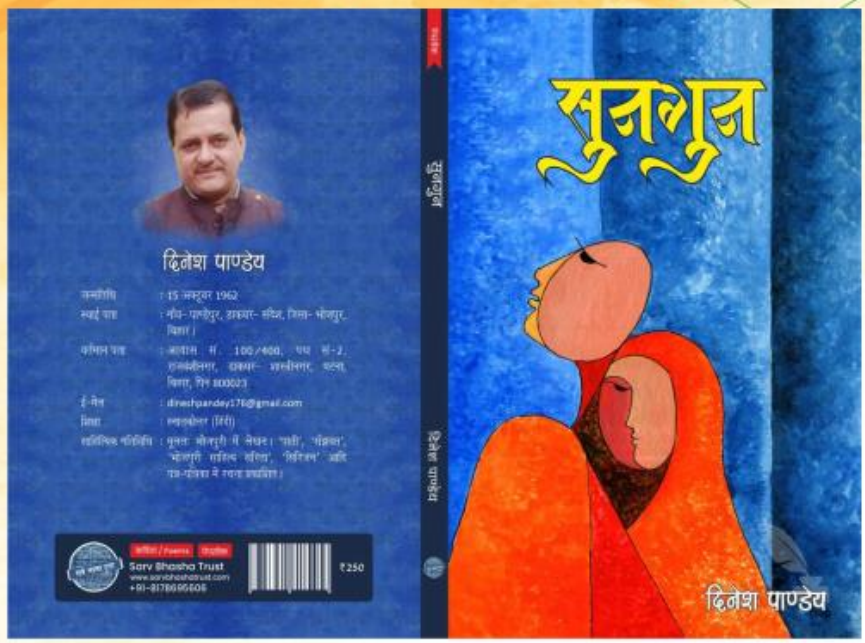

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा श्री दिनेश पाण्डेय जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं:

सर्व भाषा ट्रस्ट

मोबाइल नं.-+ 91-8178695606